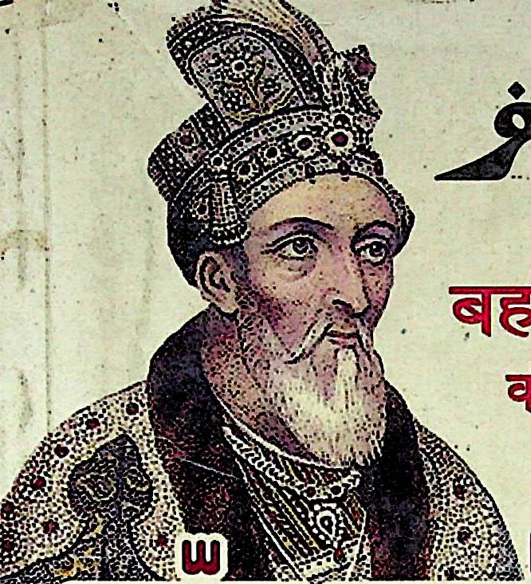
بہادر شاہ ظفر



बहादुर शाह ज़फ़र
की सर्वश्रेष्ठ शायरी
का संकलन।

# ज़फ़र
# की
# शायरी

# ज़फ़र की शायरी



बहादुर शाह 'ज़फ़र'

*बहादुर शाह 'ज़फ़र' की शायरी की श्रेष्ठता इस अर्थ में भी सिद्ध है कि उन्होंने अपनी शायरी में देश को गुलामी से छुटकारे का जगह-जगह आह्वान किया है।*

तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स

- प्रकाशक :
  तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स
  गांधी मार्ग, निकट ओडियन सिनेमा, मेरठ।
  e-mail : tulsisahitya@webdunia.com
- पुस्तक :
  ज़फ़र की शायरी
- शायर :
  बहादुर शाह 'ज़फ़र'
- प्रस्तुति:
  आबिद रिज़वी
- कम्प्यूटर पृष्ठ सज्जा :
  मित्तल कम्प्यूटर्स, मेरठ।
- मुद्रक :
  रिषभ ऑफसेट प्रेस, मेरठ।
- मूल्य :
  रु 60.00

# दो शब्द..

'ज़फ़र' अर्थात् बहादुर शाह 'ज़फ़र' का व्यक्तित्व दोहरे व्यक्तित्व का स्वामी है। वे 'आखिरी मुगल' के नाम से भी जाने जाते हैं और अज़ीम शायर भी हैं। 1857 के विद्रोह के जननायक के रूप में उनका नाम इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों से लिखा हुआ है। उनका शायर का रूप उर्दू अदब के पृष्ठों में मौजूद है।

1857 ई० में मेरठ से सैनिकों की बगावत हुई तो क्रांतिवीर योद्धाओं ने मेरठ से दिल्ली तक का क्षेत्र अंग्रेज़ों से खाली करा लिया। 10 मई, 1857 को मेरठ से कूच कर विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुंचे तो उन्होंने दिल्ली के लाल किले के तख्त पर बादशाह की हैसियत से बैठे, बहादुर शाह 'ज़फ़र' को अपना नेतृत्व देने के लिए तैयार कर लिया। क्रांतिकारी सैनिकों ने हिन्दोस्तान को आज़ाद घोषित करते हुए बहादुर शाह 'ज़फ़र' को हिन्दोस्तान का बादशाह घोषित कर दिया।

बहादुर शाह 'ज़फ़र' ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया।

पर, क्रांति असफल हो गयी। अंग्रेज़ों की कूटनीति ने हिन्दोस्तानियों के सामने उनके हिन्दोस्तानी सैनिक भाइयों को ही आगे बढ़ाया और दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया। बादशाह गिरफ़्तार हुए। अंग्रेज़ों ने उनके दो पुत्रों मिर्ज़ा मुग़ल और मिर्ज़ा खैर सुल्तान का सिर काटकर बादशाह के सामने, थाल में सजाकर पेश किया।

उन पर मुकदमा चलाकार निर्वासन की सजा सुनाते हुए रंगून जेल भेजा गया। जहां बहादुर शाह 'ज़फ़र' ने आखिरी ग़ज़ल कही और उस ग़ज़ल के दम पर ही देश के हर आवाम के दिलों में अपनी मुहब्बत को गिरफ़्तार कर लिया। आज 'ज़फ़र' का नाम सामने आते ही हर किसी के सामने उनकी ग़ज़ल के बोल आ जाते हैं—

"लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में,<br>
किसकी बनी है आलमे-नापायेदार में,<br>
बुलबुल को बाग़बां से न सय्याद से ग़िला,<br>
क़िस्मत में थी कैद लिखी, फ़स्ले-बहार में।<br>
है कितना बदनसीब 'ज़फ़र' दफ़्न के लिए<br>
दो गज़ ज़मीन भी न मिली कू-ए-यार में।

इस अज़ीम राष्ट्रप्रेमी और शायर का जन्म मुग़ल सल्तनत के अंतिम वारिस के रूप में दिल्ली के शाही लाल किले में 24 अक्टूबर, 1775 ई० में हुआ था। इनके पिता अकबर शाह (द्वितीय) थे और माँ का नाम बेगम लाल बाई था।

चूंकि शाही घराने में पैदा हुए थे इसलिए शहजादों की तरह इनकी परवरिश हुई। लाल किले में परवरिश पाने की वजह से टकसाली उर्दू 'उर्दू-ए-मोअल्ला' इन्हें विरासत में मिली थी। 1837 ई० में अपने पिता अकबर शाह (द्वितीय) के निधन के बाद ये दिल्ली के सिंहासन पर बादशाह की हैसियत से बैठे। कहा जाता है कि जब वे सिंहासनारूढ़ हुए तो खज़ाना खाली था। ये नाम-मात्र के बादशाह थे। उस समय तक अंग्रेजों ने पूरे भारत को अपने शिकंजे में ले लिया था। मुग़ल सल्तनत के चौथे बादशाह जहाँगीर के शासनकाल में ये तिजारती बनकर भारत आये थे--अंतिम मुग़ल के काल तक पूरे देश के हुक्मरां बन गये थे।

बहरहाल, अब 'ज़फ़र' की शायरी के पहलू को देखते हैं। शायरी का शौक़ ज़फ़र को बचपन से ही था। आरम्भ में इन्होंने शाह नसीर को अपना उस्ताद माना; अपनी रचनाओं को दुरुस्त करवाते थे। फिर मीर काज़िम हुसैन 'बेक़रार' से इस्लाह (शायरी में सुधार कराना) लेने लगे। बाद में शायरों के उस्ताद 'ज़ौक़' को भी उस्ताद बनाने की बात सामने आयी। उनकी इस शायराना तबियत का यह फायदा हुआ कि उस दौर में उर्दू शायरी ने राजाश्रय पाया। दरबार में शायरी के नायाब ज़ौहर जगह पाते रहे। उनकी निकटता और प्राश्रय पाने वाले शायरों में ग़ालिब, ज़ौक़, मोमिन, दाग़ जैसे ख्याति प्राप्त शायरों के नाम जुड़े हुए हैं।

शायर की हैसियत से प्रसिद्धि पाने वाले शायरों में ग़ालिब के बाद 'ज़फ़र' ही ऐसे शायर हैं जिन पर फिल्में बनी हैं और इनकी ग़ज़ल की धूम घर-घर में पहुंची है। रंगून में काले पानी की सजा भोगते हुए इस अज़ीम शायर का निधन सन् 1862 ई० में हो गया।

उनकी चुनी हुई ग़ज़लों तथा कुछ फुटकर अशआरों, कत्आत को इस संकलन में जगह दी गयी है। उम्मीद है ज़फ़र की शायरी आपको बहुत-बहुत पसन्द आयेगी।

शुभकामनाओं सहित!

—प्रकाशक

# विषय-सूची

# लगता नहीं है दिल मेरा

लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार[1] में
किसकी बनी है आलमे-नापायेदार[2] में।।

बुलबुल को बाग़बां[3] से न सय्याद से गिला
क़िस्मत में क़ैद थी लिखी, फ़स्ले-बहार[4] में

इन हसरतों से कह दो, कहीं और जा बसें
इतनी जगह कहां है दिले-दाग़दार[5] में

इक शाख़े-गुल पे बैठ के बुलबुल है शादमां[6]
कांटे बिछा दिए हैं दिले-लालाज़ार[7] में

उम्रे-दराज़[8] मांग के लाए थे चार दिन
दो आरज़ू में कट गए दो इंतज़ार में

दिन ज़िन्दगी के ख़त्म हुए, शाम हो गई
फैला के पांव सोएंगे, कुंजे-मज़ार[9] में

है कितना बदनसीब 'ज़फ़र', दफ़्न के लिए
दो गज़ ज़मीन भी न मिली कू-ए-यार[10] में



*1. उजड़ी हुई दुनिया, 2. नश्वर संसार, 3. माली, 4. बसन्त ऋतु, 5. घायल हृदय, 6. परेशान: दुःखी, 7. सुर्ख़ियां बिखेरता हृदय, 8. लम्बी आयु, 9. कब्र के कोने में, 10. प्रियतम की गली।*

# ऐश से गुज़री कि

ऐश से गुज़री कि ग़म के साथ, अच्छी निभ गई
निभ गई जो उस सनम के साथ, अच्छी निभ गई

दोस्ती उस दुश्मने-जां ने निबाही तो सही
जो निभी ज़ुल्मो-सितम के साथ, अच्छी निभ गई

ख़ूब गुज़री गरचे औरों की निशातो-ऐश[1] में
अपनी भी रंजो-अलम के साथ, अच्छी निभ गई

हमको या मंज़ूर अपनी ख़ाकसारी[2] का निबाह
बारे[3] उस ख़ाके-क़दम के साथ, अच्छी निभ गई

जो ज़ुबां पर उसकी आया, लब पे[4] नक्श[5] उसने किया
लोह[6] की सोहबत क़लम के साथ, अच्छी निभ गई

बू-ए-गुल[7] क्या रह के करती, गुल ने रहकर क्या किया
वह नसीमे-सुबह-दम[8] के साथ, अच्छी निभ गई

शुक्र-सद-शुक्र अपने मुंह से जो निकाली मैंने बात
ऐ 'ज़फ़र', उसके करम के साथ, अच्छी निभ गई



*1. आराम, 2. नम्रता, 3. अन्त में, 4. होंठों पर, 5. अंकित, 6. तख़्ती, 7. पुष्प की गन्ध, 8. सुबह की हवा।*

# शिकायतें हमें ग़म्माज़

शिकायतें हमें ग़म्माज़[1] और अदू[2] से नहीं
गिला है दोस्त से अपने, फ़क़त किसू[3] से नहीं

जो हाथ पहले ही धो बैठा आबरू से नहीं
नमाज़े-इश्क़ अदा करने की, वज़ू[4] से नहीं

डरा न ताबिशे-ख़ुर्शीदे-हश्र[5] से वाइज़[6]
कि ज़ियादा गर्म वो रूख़सारे-शोला-ख़ूं[7] से नहीं

शगुफ्तगी[8] की हवस से भला है हर गुंचा
दिल इस चमन में कोई ख़ाली आरज़ू से नहीं

ज़ियादा लग तो चले हैं चले अभी वाक़िफ़
हमारी ख़ू[9] से नहीं वो, हम उसकी ख़ू से नहीं

'ज़फ़र', इस अपने तसव्वुर[10] के जाए है क़ुरबान
सरकती यार की तस्वीर रू-ब-रू से नहीं



*1. चुग़लखोर, 2. शत्रु, दुश्मन, 3. किसी, 4. मुंह धोना, 5. प्रलय-दिवस के सूर्य की प्रचण्डता, 6. उपदेशक, 7. आग के समान गालों की लाली, 8. खिलना, 9. आदत, 10. कल्पना।*

# शब, हाथ हमारे जो

शब, हाथ हमारे जो मये-नाब[1] न आई
कैफ़ियते-शे'रे[2] शबे-महताब[3] न आई

सहरा[4] में घटाघोर पे, हम बादाक़शों[5] की
कब आई कि बा-दीदा-ए-पुरआब[6] न आई

जो मुल्के-अदम[7] से नहीं आया कोई हमदम
क्या याद उसे सोहबते-अहबाब[8] न आई

खा ही रहा हलक़ा[9] में दिले-ज़ुल्फ़ के चक्कर
किस रोज़ ये कश्ती सरे-गरदाब[10] न आई

था हमको ख़्याल आएगा वो ख़्वाब में लेकिन
नींद आँखों में शब-ए-दिले-बेताब न आई

तेरे ख़मे-अबरू[11] में किया सिज़दा जो हमने
बेहतर नज़र इससे कोई मेहराब[12] न आई

देखा दिले-बेताब को अपने तो 'ज़फ़र' फिर
ख़ातिर[13] में मेरे माही-ए-बे-आब[14] न आई

---

*1. मदिरा, 2. शेर कहने का नशा, 3. चाँदनी रात, 4. जंगल, 5. शराबी, 6. भीगी नयन, 7. परलोक, 8. मित्र, 9. घेरा, 10. भँवर के किनारे, 11. भवों का टेढ़ापन, 12. घुमाव, 13. हद, 14. बिना जल की मछली।*



# हवा में फिरते हो

हवा में फिरते हो हिर्स-ओ-हवा[1] के लिए
गुरूर छोड़ दो ऐ ग़ाफ़िलो, ख़ुदा के लिए

गिरा दिया है हमें किसने चाहे-उल्फ़त[2] में
हम आप डूबें किसी अपने आशना[3] के लिए

जहां में चाहिए ऐवानो-क़सर[4] शाहों को
ये एक गुम्बदे-गरदूं[5] है बस गदा[6] के लिए

वो आईना है कि जिसको है हाजते-सीमाब[7]
इक इज़्तेराब[8] है काफ़ी, दिले-सफ़ा[9] के लिए

तपिश से दिल का हो क्या जाने हाल सीने में
जो तेरे तीर का रोज़न[10] न हो, हवा के लिए

तबीबे[11]-इश्क़ की दूकां में ढूंढ़ते-फिरते
ये दर्दमन्दे-मुहब्बत तेरे, दवा के लिए

---

1. लालच, 2. प्रेम-कुण्ड, 3. मित्र,
4. महल, 5. गुम्बद जैसा आसमान,
6. फ़क़ीर, 7. पारे की ज़रूरत,
8. बेचैनी, 9. साफ़ दिल,
10. खिड़की,
11. चिकित्सक।



# डाले हुए गरदन, जो मेरा

डाले हुए गरदन, जो मेरा नामाबर[1] आया
मतलब कुछ दिले-यार का, मालूम कर आया

गर फ़िक्र में हो, राह के तोशा[2] की करो फ़िक्र
ऐ ग़ाफ़िलो[3]! नज़दीक है रोज़े-सफ़र[4] आया

लोटेगा, पड़ा ख़ाक के बिस्तर पे वो ता-हश्र[5]
आराम की गठरी को जो हस्ती[6] में धर आया

क्या जाने बनी क़ैस पे क्या दश्ते-जुनूं[7] में
जो ख़ाक-ब-सर[8] आज बगोला[9] नज़र आया

इक हम ही नहीं बेख़बर आए हैं ज़हां में
जो आया जहां में है, सो वो बेख़बर आया

मैं शर्म से असियां[10] के हुआ सर-ब-गरेबां[11]
जिस वक्त ख़्याल आया उधर का 'ज़फ़र' आया



*1. सन्देशवाहक, 2. सामान, 3. सोने वालों, 4. यात्रा का दिन, 5. प्रलय के दिन तक, 6. जीवन, 7. उन्माद का जंगल, 8. सिर पर धूल से युक्त, 9. बवण्डर, 10. दोष, 11. सिर झुका लेना।*

# दिल की मेहमां सराय

दिल की मेहमां सराय[1] ख़ाली है
तुम अगर आओ, जाय[2] ख़ाली है

नाला वो है कि जिसमें हो तासीर[3]
बेअसर, इक सदाये[4], ख़ाली है

मय न थी तेरे जाम[5] में साक़ी
कौन उसे मुंह लगाये, ख़ाली है

चाहते क्या हो तुम फ़क़ीरों से
यां फ़क़त[6] इक दुआयें, ख़ाली है

गर वो आता है ख़ाना-ए-दिल[7] में
उससे कह दो कि आये, ख़ाली है

दीन-दुनिया के फ़ायदे से 'ज़फ़र'
नहीं दाना[8] की राय ख़ाली है



*1. अतिथिगृह, 2. स्थान, 3. प्रभाव, 4. आवाज़, 5. प्याला, मधुपात्र, 6. केवल, 7. हृदय-गृह, 8. बुद्धिमान, चतुर।*

# कहीं मैं गुंचा हूं

कहीं मैं गुंचा हूं, वाशुद[1] से अपने ख़ुद परीशां हूं
कहीं ग़ौहर हूं, अपनी मौज़ में मैं आप ग़लतां[2] हूं

कहीं मैं साग़रे-गुल हूं, कहीं मैं शीशा-ए-मुल[3] हूं
कहीं मैं शोरे-कुलकुल हूं, कहीं मैं शोरे-मस्तां[4] हूं

कहीं मैं जोशे-वहशत हूं, कहीं मैं महवे-हैरत हूं
कहीं मैं आबे-रहमत[5] हूं, .कहीं मैं दाग़े-असियां[6] हूं

कहीं मैं बर्क़े-ख़िरमन[7] हूं, कहीं मैं अब्रे-गुलशन हूं
कहीं मैं अश्क़े-दामन हूं, कहीं मैं चश्मे-गिरियां[8] हूं

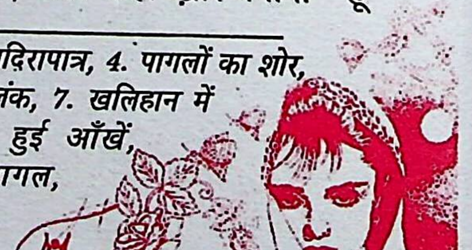
कहीं मैं अक्ले-आरा[9] हूं, कहीं मैं मजनूने-रूसवा[10] हूं
कहीं मैं पीरे-दाना[11] हूं, कहीं मैं तिफ़्ले-नादां[12] हूं

कहीं मैं दस्ते-क़ातिल हूं, कहीं मैं हलक़े-बिस्मिल हूं
कहीं मैं ज़हरे-हलाहल हूं, कहीं मैं आबे-हैवां[13] हूं

कहीं मैं सर्वे-मौजूं हूं, कहीं मैं बैदे-मजनूं[14] हूं
कहीं गुल हूं 'ज़फ़र' मैं, और कहीं ख़ारे-बयाबां[13] हूं

---

*1. खिलना, 2. ढुलकना, 3. मदिरापात्र, 4. पागलों का शोर, 5. कृपा की वर्षा, 6. पाप का कलंक, 7. खलिहान में गिरने वाली बिजली, 8. रोती हुई आँखें, 9. बुद्धिमान, 10. बदनाम पागल, 11. बुद्धिमान वृद्ध, 12. नासमझ बालक, 13. अमृत, 14. एक पौधे का नाम, 15. जंगल का कांटा।*



# रविशे-गुल हैं कहां

रविशे-गुल[1] हैं कहां यार हँसाने वाले
हमको शबनम[2] की तरह सब हैं रुलाने वाले

सोज़िशे-दिल[3] को नहीं अश्क़ बुझाने वाले
बल्कि हैं और भी यह अलग लगाने वाले

मुंह पे सब ज़र्दी-ए-रूख़्सार[4] कहे देती है
क्या करें राज़[5] मुहब्बत के छिपाने वाले

देखिए दाग़ जिगर पर हों हमारे कितने
वह तो इक गुल हैं नया रोज़ खिलाने वाले

दिल को करते हैं बुतां[6], थोड़े से मतलब पे ख़राब
ईंट के वास्ते, मस्जिद हैं ये ढाने वाले

नाले हर शब[7] को जगाते हैं ये हमसायों[8] को
बख़्त-ख़्वाबीदा[9] को हों काश, जगाने वाले

ख़त मेरा पढ़ के जो करता है वो पुर्ज़े-पुर्ज़े
ऐ 'ज़फ़र', कुछ तो पढ़ाते हैं पढ़ाने वाले

•



*1. फूल की भांति, 2. ओस, 3. दिल की जलन, 4. गालों का पीलापन, 5. भेद, 6. रूपसी, 7. रात, 8. पड़ोसी, 9. सोया हुआ भाग्य।*

# या मुझे अफ़सरे-शाहाना

या मुझे अफ़सरे-शाहाना[1] बनाया होता
या मुझे ताज़-मदायाना[2] बनाया होता

ख़ाकसारी[3] के लिए गरचे बनाया था मुझे
काश, ख़ाके-दरे-जानाना[4] बनाया होता

नशा-ए-इश्क़[5] का गर ज़र्फ़[6] दिया था मुझको
उम्र का तंग न पैमाना बनाया होता

दिले-सदचाक़[7] बनाया तो बला से लेकिन
ज़ुल्फ़े-मुश्क़ीं[8] का तेरे शाना[9] बनाया होता

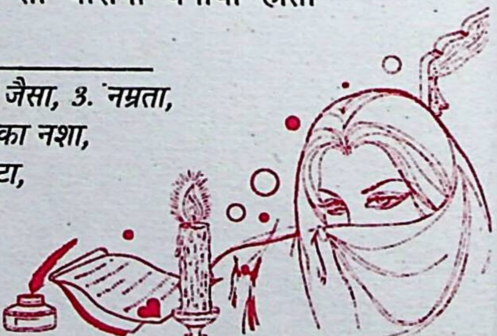
था जलाना ही अगर दूरी-ए-साक़ी से मुझे
तो चराग़े-दरे-मयख़ाना बनाया होता

क्यों ख़िरदमन्द[10] बनाया, न बनाया होता
आपने ख़ुद का ही दीवाना बनाया होता

रोज़ मामूर-ए-दुनिया[11] में ख़राबी है 'ज़फ़र'
ऐसी बस्ती को तो वीराना बनाया होता

---

*1. उच्चाधिकारी, 2. सन्तों जैसा, 3. नम्रता, 4. प्रिय के द्वार की धूल, 5. प्रेम का नशा, 6. शौक़, 7. सौ जगह से कटा-फटा, 8. घुंघराले बाल, 9. कन्धा, 10. बुद्धिमान, 11. सम्पूर्ण संसार।*



# जलाया आप हमने, ज़ब्त

जलाया आप हमने, ज़ब्त कर-कर आहे-सोज़ां[1] को
जिगर को, सीने को, पहलू को, दिल को, जिस्म को, जां को

हमेशा कुंजे-तन्हाई[2] में मूनिस[3] हम समझते हैं
अलम[4] को, यास[5] को, हसरत को, बेताबी को, हुरमां को

जगह किस-किस को दूं दिल में, तेरे हाथों से ऐ क़ातिल
कटारी को, छुरी को, बांक को, ख़ंजर को, पैकां[6] को

न हो जब तू ही ऐ साक़ी, भला फिर क्या करे कोई
हवा को, अब्र[7] को, गुल को, चमन को, सहन-ए-बस्तां[8] को

नहीं क़ुलक़ुल[9] दुआ देता है शीशा दम-ब-दम[10] साक़ी
सुबू[11] को, खुम[12] को, मय को, मयकदा को, मयपरस्तां[13] को

तुझे दिल दे के मैं ऐ काफ़िरे-बेमहर[14] खो बैठा
ख़िरद[13] को, होश को, ताक़त को, जी को, दीनो-ईमां को

बनाया ऐ 'ज़फ़र' ख़ालिक़[16] ने जब इन्सान से बेहतर
मलक[17] को, देव को, जिन को, परी को, हूरो-ग़िलमां[18] को

---

*1. जलती हुई आहें, 2. अकेलापन, 3. सहायक, 4. दुःख-दर्द, 5. चमेली, 6. तीर, 7. बादल, 8. उपवन, 9. बोतल से मदिरा गिरने का स्वर, 10. हर क्षण, 11. प्याला, 12. मटका, 13. शराबी, 14. निष्ठुर, 15. बुद्धि, 16. ईश्वर, 17. देवता, 18. रूपसियां।*



# इक दम में ज़र्बे-नाला

इक दम में ज़र्बे-नाला[1] से पत्थर को तोड़ दूं
पत्थर तो क्या, किसी सद्दे-सिकन्दर[2] को तोड़ दूं

ख़ूने-जिगर से लाल का भी मोल दूं बहा
गर आंसुओं से क़ीमते-गौहर[3] को तोड़ दूं

दीवाना हो के तेरा कहे साफ़ आईना
ज़ंजीरो-तौक़ो[4]-हलक़ा-ए-ज़ौहर[5] को तोड़ दूं

क्या दुश्मनी है अहले-करम[6] से कहे है चर्ख़[7]
यां तक झुकाऊं शाख़, समरवर[8] को तोड़ दूं

तोड़ा दिल उस सनम ने, न आया उसे ख़्याल
है घर ख़ुदा का, क्योंकि मैं इस घर को तोड़ दूं

लाचार हूं तेरी सफ़े-मिज़गां[9] से वरना यार
वह सफ़-शिकन[10] हूं मैं, सफ़े-लश्कर[11] को तोड़ दूं

---

*1. रुदन की चोट, 2. सिकन्दर का गर्व, 3. मोती, 4. हार, 5. मोती, 6. दानी लोग, 7. आकाश, 8. फलों से लदी शाख़ें, 9. पलकों की पंक्ति, 10. पंक्ति तोड़ने वाला, 11. फ़ौज।*



# रात-भर मुझको ग़मे-यार

रात-भर मुझको ग़मे-यार ने सोने न दिया
सुबह को ख़ौफ़े शबे-तार[1] ने सोने न दिया

शम्अ की तरह मुझे, रात कटी सूली पर
चैन से यादे-क़दे-यार[2] ने सोने न दिया

यह कराह्म दर्द के साथ तेरा बीमारे-अलम[3]
किसी हमसाये[4] को बीमार न सोने न दिया

ऐ दिले-ज़ार[5], तू सोया किया आराम से रात
मुझे पल-भर भी दिले-ज़ार ने सोने न दिया

सोऊं मैं क्या कि मेरे पांव को भी ज़िन्दां[6] में
आरज़ू-ए-ख़लिश-ए-यार[7] ने सोने न दिया

यासो-ग़म[8], रंजो-ताअब[9] मेरे हुए दुश्मने-जां
ऐ 'ज़फ़र', शब[10] इन्हीं दो-चार ने सोने न दिया



*1. अंधेरी रात, 2. प्रिय की ऊंचाई, 3. दुःख, 4. पड़ोसी, 5. दुःखी हृदय, 6. क़ैद, 7. कांटे की चुभन की इच्छा, 8. दुःख व निराशा, 9. दुःख-दर्द, 10. रात।*

# हुए वाक़िफ़ न जो

हुए वाक़िफ़[1] न जो दुनिया के ग़म से, वो ही अच्छे हैं
जो हस्ती[2] में नहीं आए अदम[3] से, वो ही अच्छे हैं

झड़े यूं तो हज़ारों गौहरे-ख़ुश[4] आबे-नीसा[5] से
मगर जो अश्क़ टपके चश्मे-नम से, वो ही अच्छे हैं

बराबर हैं परेशानी में हम और बाब ज़ुल्फ़ों के
वे अकसर तेरे मुंह लगते हैं हमसे, वो ही अच्छे हैं

जो पूछे कोई अच्छा कौन है, गिब्रो-मुसलमां[6] में
कहूं जो आशना[7] हैं उस सनम से, वो ही अच्छे हैं

तेरा क्या नाम है अच्छा, कि जितने हर्फ़ हैं उसके
निकलते हर जगह मेरे क़लम से, वो ही अच्छे हैं

जो दाग़े-इश्क़[8] दें तो क्या करूं मैं ग़ंज-ज़र[8] लेकर
मेरे नज़दीक दीनारो-दरम[10] से, वो ही अच्छे हैं

'ज़फ़र' यूं तो सब अच्छे हैं, बुरा कहिए किसे लेकिन
बने अच्छे हैं जो, उसके काम से, वो ही अच्छे हैं

*1. परिचित, 2. जीवन, 3. परलोक, 4. अच्छे मोती, 5. स्वाति की बूंद, 6. विभिन्न धर्मावलंबी व मुस्लिम, 7. परिचित, 8. प्रेमचिह्न, 9. धन का भंडार, 10. धन-दौलत।*



# रखता है मुहब्बत दिले-नाशाद

रखता है मुहब्बत दिले-नाशाद[1] तुम्हारी
क्या ज़िक्र कि ये भूले कभी याद तुम्हारी

हम सहते हैं बेदाद पे बेदाद[2] तुम्हारी
लेकिन नहीं करते कहीं फ़रियाद तुम्हारी

ऐ ग़ाफ़िलो! मानिन्दे-हुबाब[3], एक नफ़स[4] में
मिट जाओगे तुम, कुछ नहीं बुनियाद[5] तुम्हारी

समझा न तुम्हें हज़रते-दिल उसने हवाख़्वाह[6]
मेहनत हुई सारी यूं ही बरबाद तुम्हारी

ऐ बुलबुलो, इतना न करो गुल[7] कि मुबादा[8]
दुश्मन हो सिवा[9] जान का सय्याद[10] तुम्हारी

मुंह देखे है यूं आईना हसरत से हमारा
हम जिससे 'ज़फ़र' कहते हैं रूदाद[11] तुम्हारी



*1. दुःखित हृदय, 2. अन्याय, 3. बुलबुले की भांति, 4. क्षण, 5. नींव, 6. मन बहलाने वाले, 7. शोर, 8. ऐसा न हो, 9. अधिक, 10. शिकारी, 11. व्यथा।*

# जिस जगह हम हों, वहां

जिस जगह हम हों, वहां गर तू न हो तो कुछ नहीं
और जहां तू हो, वहां क़ाबू न हो तो कुछ नहीं

तकिया मख़मल का मेरे ज़ानू[1] के नीचे हो न हो
उसके ज़ानू पर मेरा ज़ानू न हो तो कुछ नहीं

इश्क़ में लज़्ज़त[2] है क्या यारो बजुज़[3] सोज़ो-गुदाज़[4]
लब पे नाला[5], चश्म में आँसू न हो तो कुछ नहीं

तन में मज़नूं के नहीं ख़ूं और ये वहशत[6] का ज़ोर
वरना इन्सां में अगर लोहू न हो तो कुछ नहीं

आईने को दिल के है जलवे[7] से तेरी रोशनी
हमको रोशन तेरा अक्से-रू[8] न हो तो कुछ नहीं

आँख है सेंकी तो क्या थोड़ा-सा दिल भी तो जले
आतिशीं-रूख़सार[9] आतिश-ख़ू[10] न हो तो कुछ नहीं

चाहिए रंगीं मिज़ाजों[11] को 'ज़फ़र' इज़हारे लुत्फ़[12]
ज़ेबे-गुल[13] ख़ुशबू से है, ख़ुशबू न हो तो कुछ नहीं

---

*1. जाँघ, 2. स्वाद, 3. सिवाय, 4. जलन और रोना, 5. रोना, 6. उन्माद, 7. प्रकाश, 8. चेहरे की छाया, 9. दहकते हुए गाल, 10. अग्नि जैसी आदतें, 11. रसिक, 12. प्रेम-प्रदर्शन, 13 पुष्प-सज्जा।*



# होते-होते चश्म से आज

होते-होते चश्म से आज, अश्क़बारी[1] रह गई
आबरू बारे-तेरी, अब्रे-बहारी[2] रह गई

आते-आते इस तरफ़, उनकी सवारी रह गई
दिल की दिल में, आरज़ू-ए-जांनिसारी[3] रह गई

टुकड़े-टुकड़े हो के उड़ जाएगा सब संगे-मज़ार[4]
दिल के बाद अज़-मर्ग[5], कुछ गर बेक़रारी रह गई

इतना मिलिए ख़ाक में जो ख़ाक में ढूंढ़े कोई
ख़ाकसारी ख़ाक की, गर ख़ाकसारी रह गई

हो गया जिस दिन से अपने दिल पे उसको एख़्तियार
एख़्तियार अपना गया, ऐएख़्तियारी रह गई

जब क़दम उस काफ़िरे-बदकेश[6] की ज़ानिब पड़े
दूर पहुंचे सौ क़दम, परहेज़गारी रह गई

शिक़वा-अय्यारी[7] का यारों से बजा[8] है, ऐ 'ज़फ़र'
इस ज़माने में यही है, रस्नबारी रह गई



---

*1. आँसू बरसाना, 2. बहार के बादल, 3. जान देने की अभिलाषा, 4. क़ब्र का पत्थर, 5. मरने के बाद, 6. निष्ठुर प्रियतम, 7. चालाकी की शिकायत, 8. ठीक।*

# कब हुजूमे-ग़म से

कब हुजूमे-ग़म[1] से मेरी जान घबराती नहीं
मैं तो मर जाऊं, करूं पर क्या, कि मौत आती नहीं

कौन है जिसको नहीं डर आहे-सोज़ा[2] का मेरे
कांपता शोला नहीं, या बर्क थर्राती नहीं

क्या हुआ बदअस्ल[3], गर ज़ाहिर में है नेको-सफ़ात[4]
जौहरे-ज़ाती[5] पर उनका ग़ैर-बदज़ाती[6] नहीं

साक़िया, फुर्सत ये तेरी तारे-बारिश[7] से घटा
मयकशों के सर पे क्या-क्या तीर बरसाती नहीं

साफ़ ख़ूबो-ज़िश्त[8] कह देता है मुंह पे आईना
बल[9] ब-दीदे[10] की सफ़ाई, आँख शरमाती नहीं

हमसरी[11] करता है गुल-आरिज़[12] से, उसकी ऐ सबा
दो तमांचे मारकर तू उसको समझाती नहीं

ऐ 'ज़फ़र', है देख खटका बाग़बां[13] का किस क़दर
बाग़ में बुलबुल की आज आवाज़ भी आती नहीं

---

*1. अधिक दुःख, 2. जलती आह, 3. दुष्ट, 4. अच्छी आदत वाले, 5. निजी गुण, 6. दुष्टता के अलावा, 7. वर्षा, 8. अच्छा-बुरा, 9. परन्तु, 10. आँख, 11. बराबरी, 12. गाल, 13. माली।*



# दिलो-दीं तेरे हवाले

दिलो-दीं[1] तेरे हवाले किए करने की तलब[2]
और माना कहा सब

फिर जो बेज़ार है तू, मुझको बता इसका सबब
मेरी तक़सीर[3] है क्या

है हयाते-अबदी[4] गर हो शहादत हासिल
तेरे हाथों क़ातिल

तेरे आबे-दम-शमशीर[5] को तेरा बिस्मिल[6]
समझे है आबे-बक़ा[7]

न तो तक़रीर से हो और न तहरीर[8] से हो
न तो तदबीर[9] से हो

हम तो कहते हैं 'ज़फ़र' जो हो, सो तक़दीर से हो
है यही बात बजा[10]

---

*1. दिल व धर्म, 2. माँगना, 3. दोष, गलती, 4. अमर जीवन, 5. तलवार की धार की अधिकता, 6. घायल, 7. अमृत, 8. लेखन, 9. कोशिश, 10. सही, उचित।*



# जा कहियो उनसे

जा कहियो उनसे नसीमे-सहर[1]
मेरा चैन गया, मेरी नींद गई
तुझे मेरी, न मुझको तेरी ख़बर,
मेरा चैन गया, मेरी नींद गई

ऐ बादशहे-ख़ूबाने-जहां[2]
तेरी मोहनी सूरत पे क़ुर्बां[3]
कहा उसने, पड़ी तेरी जिस पे नज़र
मेरा चैन गया, मेरी नींद गई

हुई बादे-बहारी[4] चमन में अयां[5]
गुलो-बूटा[6] पे बाक़ी रही न ख़िज़ां
मेरी शाख़े-उमीद[7] न लाई ख़बर
मेरा चैन गया, मेरी नींद गई

ऐ बर्क़े-तजल्ली[8] बहरे-ख़ुदा[9]
न जला मुझे हिज्र में शम्अ-सा
मेरी ज़ीस्त[10] है मिस्ले-चराग़े-सहर[11]
मेरा चैन गया, मेरी नींद गई

---

*1. सुबह की हवा, 2. संसार के सौन्दर्य की रानी, 3. न्योछावर, 4. बसंत की हवा, 5. प्रकट, उजागर, 6. फूल और पौधे, 7. उम्मीद की शाख़, 8. सौन्दर्य का प्रकाश, 9. ईश्वर के नाम पर, 10. जीवन, 11. प्रातःकाल के दीपक के समान।*



# किसी को हमने

किसी को हमने यां अपना न पाया
जिसे पाया उसे बेगाना[1] पाया

कहां ढूढ़ा उसें किस जा[2] न पाया
कोई, पर ढूंढने वाला न पाया

उड़ाकर आशियां[3] सर-सर[4] ने मेरा
किया साफ़ इस क़दर, तिनका न पाया

उसे पाना नहीं आसां कि हमने
न जब तक आपको खोया, न पाया

दवा-ए-दर्दे-दिल[5] मैं किससे पूछूं
तबीबे-इश्क़[6] को ढूंढ़ा न पाया

सबा[7] ने हब्से-दम[8] सीखा है किससे
चमन ने हिलते एक पत्ता न पाया

'ज़फ़र' दिल जाने या हम, कौन जाने
कि पाया उसमें क्या और क्या न पाया



*1. पराया, 2. जगह, 3. घोंसला, 4. तेज़ हवा, आँधी, 5. ह्रदय के दुःख की हवा, 6. प्रेम-रोग का चिकित्सक, 7. प्रातःकालीन वायु, 8. झाड़-फूंक, टोना-टोटका।*

# गरचे ग़र्के-अश्क़-तर है

गरचे[1] ग़र्के-अश्क़-तर[2] है, गिरिया की शिद्दत[3] में शम्अ
जलती है जिस पर भी लेकिन सोज़िशे-उल्फ़त[4] में शम्अ

कुछ न हो परवाह जुदाई की, मेरे उस यार को
यूं जले परवाने कि सोज़े-ग़मे-फ़ुरक़त[5] में शम्अ

कौन है जिसको जलाता अपने सोज़े-इश्क़ से
एक जलना ही लिखा था, यह मेरी क़िस्मत में शम्अ

क़ब्र पर मेरी बला से, गर नहीं जलता चराग़
सोज़िशे-दिल से तो रोशन है, मेरी तुरबत[6] में शम्अ

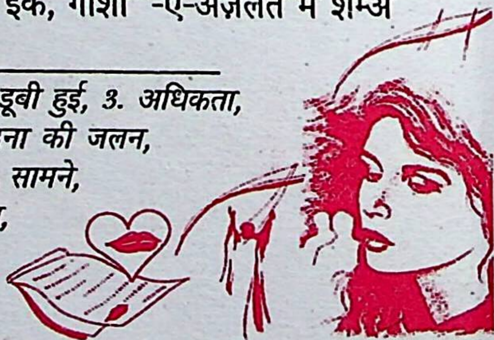
कट गया सर, खुल गया तन, जल गया दिल, क्या करें
इश्क़ के बायस[7] ये अब तो आ गई आफ़त में शम्अ

शम्अ को क्या ताब[8], उसके रू-ब-रू[9] सरकश[10] रहे
क्या हुआ साक़ी, बिलोरी[11] है तेरी सूरत में शम्अ

ऐ 'ज़फ़र', रखती है अपना नाम रोशन, बज़्म में
गो[12] तहे-फ़ानूस[13] है इक, गोशा[14]-ए-अज़लत में शम्अ

---

*1. यद्यपि, 2. आँसुओं में डूबी हुई, 3. अधिकता, 4. प्रेम की जलन, 5. विरह-वेदना की जलन, 6. क़ब्र, 7. कारण, 8. ताक़त, 9. सामने, 10. कठोर, 11. चमकदार प्याला, 12. यद्यपि, 13. फ़ानूस के भीतर, 14. कोना।*



# अश्क़ हैं मिज़गां पे

अश्क़ हैं मिज़गां[1] पे यूं लख़्ते-ज़िगर[2] से पेशतर[3]
जैसे लगते हैं शज़र[4] पे गुल-समर[5] से पेशतर

जान लब पे आ गई आहे-ज़िगर से पेशतर
राहरू[6] मंज़िल पे पहुंचा, राहबर[7] से पेशतर

रूख़सते-परवाज़[8] गर सय्याद तू देता हमें
हम चमन में पहुंचते, बादे-सहर[9] से पेशतर

रखते हस्ती में अदम से क्यों क़दम अपना जो हम
होते वाक़िफ़[10] इस मक़ामे-पुरख़तर[11] से पेशतर

अरसा-ए-हस्ती[12] है तंग इतना कि जब हों गर्मरू[13]
इक नफ़स[14] में हम गुज़र जाएं शरर[15] से पेशतर

नूर[16] था ख़ैरुल-बशर[17] का, गो था ज़ाहिर में बशर
हक़[18] अगर पूछो, बशर ही था बशर[19] से पेशतर

पेश आया आह जो-जो कुछ, कि राहे-इश्क़ में
कह दिया ऐ हमदमो, हमने 'ज़फ़र' से पेशतर

---

*1. पलकें, 2. हृदय का टुकड़ा, 3. पहले, 4. पेड़, 5. फल-फूल, 6. राहगीर, 7. पथ-प्रदर्शक, 8. उड़ने की छुट्टी, 9. सुबह की हवा, 10. परिचित, 11. ख़तरों से भरी हुई जगह, 12. जीवन, 13. ज़ोश में आना, 14. साँस, 15. चिनगारी, 16. प्रकाश, रोशनी, 17. ईश्वर, 18. सचमुच, खुदा, 19. मनुष्य-मात्र।*

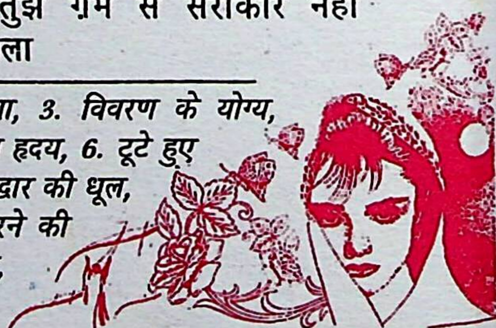


# ग़मे-दिल किससे कहूं

ग़मे-दिल किससे कहूं, कोई भी ग़मख़्वार[1] नहीं
ग़मे-फ़ुरक़त[2] के सिवा
और अगर पूछे कोई, क़ाबिले-इज़हार[3] नहीं
चुप ही रहना है भला
ज़ुल्फ़ के पेंच से छुट सकता नहीं कोई दिल
और ये पेंच, ये पेंच
कौन-सा दिल है कि जो उसमें गिरफ्तार नहीं
है अज़ब दामे-बला[4]
सैंकड़ों हैं जिगर-अफ़गार[5] हज़ारों दिल रेश[6]
तेरे हाथों लेकिन
पास तेरे कोई ख़ंजर कोई तलवार नहीं
हां, मगर नाज़ो-अदा[7]
मर मिटे ख़ाके-दरे-यार[8] पे उश्शाक़[9] 'ज़फ़र'
कि जो होना हो सो हो
उठ के अब जाएं कहां ताक़ते-रफ्तार[10] नहीं
मिस्ल नक्शे-कफ़े-पा[11]
मैं हूं आशिक़ मुझे ग़म खाने से इन्कार नहीं
कि है ग़म मेरी ग़िज़ा[12]
तू है माशूक़ तुझे ग़म से सरोकार नहीं
खाए ग़म तेरी बला

---

*1. हमदर्द, 2. विरह-व्यथा, 3. विवरण के योग्य, 4. मुसीबत का फंदा, 5. घायल हृदय, 6. टूटे हुए दिल, 7. हाव-भाव, 8. प्रिय के द्वार की धूल, 9. चाहने वाले, 10. चलने-फिरने की शक्ति, 11. पद-चिह्नों के समान, 12. भोजन।*



# न तो कुछ कुफ़्र है

न तो कुछ कुफ़्र[1] है, न दीं[2] कुछ है
है अगर कुछ, तेरा यक़ीं[3] कुछ है

है मुहब्बत जो हमनशीं[4] कुछ है
और इसके सिवा नहीं कुछ है

दैरो-काबा[5] में ढूंढ़ता है क्या
देख दिल में कि बस यहीं कुछ है

नहीं पस्तो-बुलन्द[6] यक्सां[7] देख
कि फ़लक[8] कुछ है और ज़मीं कुछ है

सर-फ़रो[9] है जो बाग़ में नरग़िस
तेरी आँखों में शरमगीं[10] कुछ है

बर्क़[11] कांपे न क्यों कि तुझ में अभी
ताब[12]-ए-आहे-आतिशीं[13] कुछ है

राहे-दुनिया[14] है, अज़ब रंगारंग
कि कहीं कुछ है और कहीं कुछ है

*1. अधार्मिकता, 2. धर्म, 3. विश्वास, 4. मित्र, 5. मंदिर व मस्ज़िद, 6. ऊंचा-नीचा, 7. एक-जैसा, 8. आकाश, 9. नीचा सिर, 10. लज्ज़ित, 11. बिज़ली, 12. शक्ति, 13. गरम आह, 14. संसार का मार्ग।*



# हमेशा है वस्लो-ज़ुदाई

हमेशा है वस्लो-ज़ुदाई[1] का धन्धा
बुतों की है उल्फ़त खुदाई[2] का धन्धा

अगर बैठे रिन्दों[3] की सोहबत में ज़ाहिद
तो सब छोड़ दें पारसाई[4] का धन्धा

जो होना है आख़िर वो होकर रहेगा
करे कौन बख़्त-आज़माई[5] का धन्धा

परीशां रही उम्र-भर, पर न छोड़ा
तेरी ज़ुल्फ़ ने कज़अदाई[6] का धन्धा

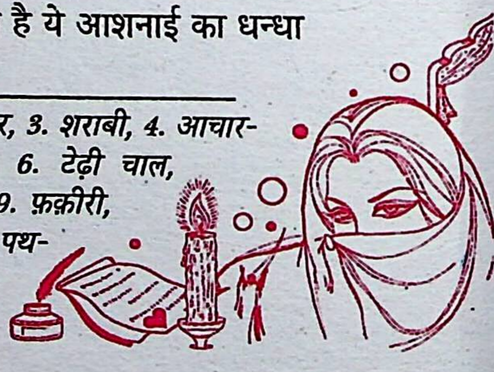
मुबारक़ रईसों को कारे-रियासत[7]
गदा[8] को है काफ़ी गदाई[9] का धन्धा

नहीं ख़िज़्र[10] के पीछे गर और झगड़े
तो है साथ इक रहनुमाई[11] का धन्धा

'ज़फ़र', इससे बेहतर है नाआशनाई[12]
कि मुश्किल है ये आशनाई का धन्धा

---

*1. संयोग-वियोग, 2. संसार, 3. शराबी, 4. आचार-विचार, 5. भाग्य की परीक्षा, 6. टेढ़ी चाल, 7. राज्य का काम, 8. फ़क़ीर, 9. फ़क़ीरी, 10. एक गुरु का नाम, 11. पथ-प्रदर्शन, 12. शत्रुता।*



# नहीं जाता किसी से

नहीं जाता किसी से वो मरज़, जो है नसीबों[1] का
न क़ायल हूं दवा का मैं, न क़ायल हूं तबीबों[2] का

न शिकवा दुश्मनों का है, न है शिक़वा हबीबों[3] का
शिकायत है तो क़िस्मत की, गिला है तो नसीबों का

हम अपने कुंजे-ग़म[4] में नाला-ओ-फ़रियाद[5] करते हैं
हमें क्या, गर चमन में चहचहा है, अन्दलीबों[6] का

जो ज़ाहिर[7] पास हों दिन-रात और वो दूर हों दिल से
बईदों[8] से ज़ियादा हाल समझो उन क़रीबों का

नहीं क़ालीनो-नमग़ीरा[9] से मतलब, ख़ाकसारी[10] को
ज़मीनो-आसमां है फ़र्शो-ख़ेमा, इन ग़रीबों का

किया है बेअदब[11] ख़ालिक़[12] ने पैदा, ऐ 'ज़फ़र' जिनको
करे क्या फ़ायदा उनको, अदब[13] देना अदीबों[14] का

---

*1. भाग्य, 2. चिकित्सक, 3. मित्र, 4. दुःख का ढेर, 5. क़न्दन, 6. बुलबुल, 7. प्रत्यक्षतः, 8. दूर वाले, 9. विशेष प्रकार के बिस्तर, 10. नम्रता, 11. अशिष्ट, 12. प्रभु, 13. शिक्षा, शिष्टाचार, 14. शिक्षक, साहित्यकार।*



# उस निग़ाहे-मस्त के

उस निग़ाहे-मस्त के, मस्तों की मस्ती और है
और मय है, और उनकी मयपरस्ती[1] और है

अब्रे[2]-मिज़गां[3] से बंधे जिस तरह अश्क़ों की झड़ी
इस तरह से कब घटा कोई बरसती और है

नीम-ग़म्ज़ा[4] पर तेरे हम बेचते हैं अपना दिल
इससे भी कोई ज़ियादा ज़िन्स[5] सस्ती और है

गुंचा[6] की मुट्ठी में ज़र[7] है, पर नहीं दस्ते-क़रम[8]
तंग़ी-ए-दिल और है, और तंग़दस्ती[9] और है

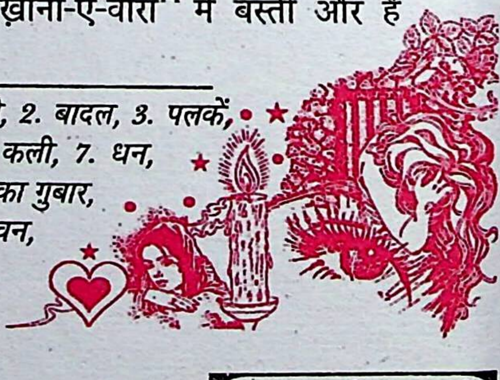
जो बुलंदी चाहता है अपनी, मिस्ले-गर्द-बाद[10]
चर्ख़ को गर्दिश दिखाती, उसकी पस्ती[11] और है

इसलिए इक़दाम[12] अपनी, तू जो हँसते हैं शरर[13]
तेरी इस ग़फ़लत पे हँसती तेरी हस्ती और है

ऐ 'ज़फ़र'! बसते हैं दिल में, रंजो-ग़म दर्दो-अलम
अब तो कुछ इस ख़ाना-ए-वीरां[14] में बस्ती और है

---

*1. मदिरा के आदी, शराबी, 2. बादल, 3. पलकें, 4. थोड़े-से नख़रे, 5. वस्तु, 6. कली, 7. धन, 8. उदारता, 9. ग़रीबी, 10. धूल का गुबार, 11. नीचता, 12. क्षणिक जीवन, 13. चिनगारी, 14. सुनसान घर।*



# न किसी की आँख का

न किसी की आँख का नूर[1] हूं
न किसी की दिल का क़रार[2] हूं
जो किसी के काम न आ सके
मैं वो एक मुश्ते-गुबार[3] हूं
मेरा रंग-रूप बिगड़ गया
मेरा यार मुझसे बिछुड़ गया
जो चमन ख़िज़ां[4] में उजड़ गया
मैं उसी की फ़स्ले-बहार[5] हूं
न तो मैं किसी का हबीब[6] हूं
न तो मैं किसी का रक़ीब[7] हूं
जो बिगड़ गया वो नसीब[8] हूं
जो उजड़ गया वो दयार[9] हूं
पये-फ़ातिहा[10] कोई आए क्यों
कोई चार फूल चढ़ाए क्यों
कोई आ के शम्अ जलाए क्यों
मैं वो बेक़सी का मज़ार हूं
मैं नहीं हूं नग़मा-ए-जां-फ़िज़ा[11]
मुझे सुन के कोई करेगा क्या
मैं बड़े विरोग[12] की हूं सदा[13]
मैं बड़े दुःखों की पुकार हूं



*1. रोशनी, 2. चैन, 3. मुट्ठीभर धूल, 4. पतझड़, 5. बसंत ऋतु, 6. मित्र, 7. दुश्मन, 8. भाग्य, 9. संसार, 10. शोक-श्लोक पढ़ने के लिए, 11. दिल को मोहित कर लेने वाला गीत, 12. दुःख, 13. आवाज़।*

# मैं होश में हूं

मैं होश में हूं यारब या कुछ मुझे वहशत[1] है
गह[2] ज़ोश हँसी का है, गह ग़िरिया[3] की शिद्दत[4] है

गर शोले में गरमी हैं तो गुल में नज़ाकत है
हर शै मैं नज़र आती अल्लाह की क़ुदरत है

नाले हैं मेरे दिल में यह दाग़ मुहब्बत के
तुरबत[5] पे चरांग़ों की कुछ भी नहीं हाज़त[6] है

यक्सां[7] है मुहतसिब[8] को, मस्जिद हो कि मयख़ाना[9]
यह जा-ए-परस्तिश[10] है, वह जा-ए-इबादत[11] है

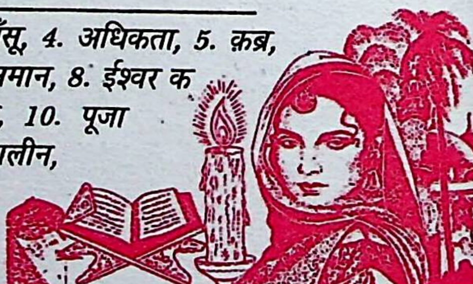
मज्ज़ूब[12] हूं या सालिक[13], आक़िल[14] हूं या दीवाना
क्या जानिए मैं क्या हूं और क्या मेरी हालत है

जलवा तुझे वह अपना हर शै में दिखाता है
परदा तेरी आँखों का, पर तेरी ही ग़फ़लत है

कहता है 'ज़फ़र' जो कुछ अब ज़ोरो-मुहब्बत में
ऐ फ़ख्रे-ज़हां[15], वह सब तेरी ही इनायत है

---

*1. उन्माद, 2. कभी, 3. आँसू, 4. अधिकता, 5. क़ब्र, समाधि, 6. आवश्यकता, 7. एकसमान, 8. ईश्वर क भक्त, आस्तिक, 9. मदिरालय, 10. पूजा स्थल, 11. धार्मिक स्थल, 12. ब्रह्मलीन, 13. साधक, 14. बुद्धिमान, 15. जिस पर संसार गर्व क़रे।*



# जब कि नज़र

जब कि नज़र उस रश्क़े-चमन की
ज़ुल्फ़ो-काकुल[1] आई है
इश्क़[2] से पेचो-ताब[3] में क्या-क्या
शाख़ो-सम्बुल[4] आई है
शुक्र कि बाद इक मुद्दत[5] के फ़िर
साक़ी अपने कानों में
बज़्म में तेरे आज सदा-ए-
ख़न्दा-ए-क़ुलक़ुल[6] आई है
मुर्ग़े-चमन[7] है, नग़मासरा[8] है
सहने-चमन[9] में शोर बपा[10] है
ज़ोशे-गुल[11] है क्या कि बहारे-
मस्ती-ए-बुलबुल आई है
जितना वो हाले-दिल से ग़ाफ़िल
उतना ही माइल[12] उस पर दिल
दिल की पसंद अब उसकी 'ज़फ़र'
जो तर्ज़े-तग़ाफ़ुल[13] आई है

---

*1. लटें, 2. प्रेम, 3. क्रोध, 4. एक प्रकार की घास, 5. लंबी अवधि, 6. बोतल से मदिरा निकलने की हँसी जैसी आवाज़, 7. पंछी, 8. गायक, 9. उपवन, 10. पैदा, 11. फूलों की उन्मादकता, 12. झुका हुआ, आसक्त, 13. लापरवाही।*



# लाख चाहत को छिपाए

लाख चाहत को छिपाए कोई, पर छिपती नहीं
प्यार की आँख और उल्फ़त की नज़र छिपती नहीं

हो गया हर अश्क़ क़ासिद[1], बन गया हर नाला पैक[2]
बेख़बर क्योंकर छिपे, दिल की ख़बर छिपती नहीं

क्या करें ज़ेरे-कफ़न[3] भी शोला-ए-फ़ानूस-वार[4]
दिल की सोज़िश[5] अपनी ऐ रश्के-क़मर[6] छिपती नहीं

परदा-ए-रंगे-हिना में, तू छिपाता है, निगार[7]
पर हमारी सुर्ख़ी-ए-ख़ूने-जिगर छिपती नहीं

गरचें इत्रो-मुश्को-अम्बर[8] का है मजमूआ[9], तो क्या
उसकी बू-ए-जुल्फ़-ए-बादे-सहर छिपती नहीं

अश्क़ भी हम पी गए और चाह भी की हमने ज़ब्त[10]
ज़र्दी-ए-रूख़सार[11] ऐ नासेह[12], मगर छिपती नहीं

बर्क़[13] ही थी जो चमककर, अब्र[14] में फिर छिप गई
ज़ेरे-मू-ए-ज़ुल्फ़[15] वह ताबे-कमर[16] छिपती नहीं

---

*1. सन्देशवाहक, 2. तीर, 3. क़फ़न के नीचे, 4. फ़ानूस की लपट, 5. जलन, 6. चाँद को लज्जित करने वाला, 7. सुन्दरी, 8. सुगन्ध, 9. ऐकत्र, ढ़ेर, 10. रोकना, 11. गालों का पीलापन, 12. उपदेशक, 13. बिज़ली, 14. बादल, 15. बालों के नीचे, 16. कमर की चंचलता।*



# हमारी चश्म रही अश्क़बार

हमारी चश्म रही अश्क़बार[1] बरसों तक
बरसते दीखा न अब्रे-बहार[2] बरसों तक

तुम्हारे ज़ुल्मो-सितम का शुमार[3] हो न सके
करे अगर कोई उनको शुमार बरसों तक

रही न कोई निशानी, पर उसका दाग़े-फ़िराक़[4]
हमारे पास रही यादगार बरसों तक

शराबे-वस्ल[5] जो होती है, एक रोज़ नसीब[6]
तो हमको उसका रहे है, खुमार[7] बरसों तक

असर न हो कभी उस गुल को, मिस्ले-बुलबुल[8] हम
करें फ़िराक़[9] में नाले[10] हज़ार बरसों तक

मिला है ख़ाक में आख़िर, उड़ा-उड़ाकर ख़ाक
तेरी गली में, तेरा ख़ाकसार बरसों तक

'ज़फ़र'! बहार गुलों प़र, चमन में है दो रोज़
रहे है रौनक़े-रूख़सारे-यार[11] बरसों तक



*1. आँसू बहाने वाली, 2. बसंत की बदली, 3. गिनती, 4. विरह का दुःख, 5. मिलन की मदिरा, 6. प्राप्त, 7. नशा, 8. बुलबुल की भांति, 9. ख़्याल, 10. रोना, 11. प्रिय के गालों की चमक।*

# क्या कहूं दिल माइले-ज़ुल्फ़े-दुता

क्या कहूं दिल माइले-ज़ुल्फ़े-दुता[1] क्योंकर हुआ
यह भला-चंगा गिरफ्तारे-बला[2] क्योंकर हुआ

दीदा-ए-हैरां[3] हमारा था, तुम्हारे ज़ेरे-पा[4]
हमको हैरत है कि पैदा नक़्शे-पा[5] क्योंकर हुआ

ख़ाकसारी क्या अजब, खो दे अगर दिल का गुबार
ख़ाक से देखो कि आईना सफ़ा क्योंकर हुआ

जिनको यक़ताई[6] का दावा था वो मिस्ले-आईना
उनको हैरत है कि पैदा दूसरा क्योंकर हुआ

तेरे दाँतों के तसव्वुर[7] से न था गर आबदार[8]
जो बहा आँसू, वो दुर्रे-बे-बहा[9] क्योंकर हुआ

जो न होना था हुआ हम पर, तुम्हारे इश्क़ में
तुमने इतना भी न पूछा, क्या हुआ, क्योंकर हुआ

वो तो है नाआशना[10] मशहूर, आलम में 'ज़फ़र'
पर ख़ुदा जाने, वो तुझसे आशना क्योंकर हुआ

---

*1. दोहरे बाल, 2. मुसीबत में फंसा, 3. अचरज़भरी आँखें, 4. पांव तले, 5. पदचिह्न, 6. एक होना, 7. कल्पना, 8. चमकदार, 9. अमूल्य मोती, 10. अनज़ान, अपरिचित।*



# इश्क़ के बन्दे हैं हम

इश्क़ के बन्दे हैं हम, मौला[1] हमारा इश्क़ है
जानो-ईमां[2] इश्क़ है, आशिक़ को प्यारा इश्क़ है

इश्क़ के रस्ते पे आशिक़ हों न मोहताज़े-असा[3]
उनका रहबर[4] इश्क़ है, उनका सहारा इश्क़ है

जाय-मू[5] निकले है तन से, इक सदा-ए-दर्दनाक़[6]
बन गया हर इश्तख़्वां[7], बेज़िस्म सारा इश्क़ है

सुन के मजनूं की कहानी नींद आती है मुझे
गोर[8] मेरी इश्क़ है, मेरा गहवारा[9] इश्क़ है

दिल के कानों से सुनो फ़रियादो-दिलसाज़ी[10] मेरी
छिप के इस परदे में से किसने पुकारा, इश्क़ है

सर्द-मेहरी[11] पर 'ज़फ़र' तुम, इश्क़ की, मत जाइयो
रखता इस सर्दी में आतिश[12] का शरारा[13] इश्क़ है

---

*1. मालिक, 2. धर्म, 3. डण्डे का ज़रूरतमन्द, 4. पथ-प्रदर्शक, 5. बालों की जगह, 6. दुःखी स्वर, 7. हड्डी, 8. क़ब्र, 9. झूला, 10. चिकित्सा, 11. नीरसता, 12. आग, 13. चिनगारी।*



# बिन तेरे ऐ रश्क़े-गुल

बिन तेरे ऐ रश्क़े-गुल, रश्क़े-बहार[1]
नोके-सब्ज़ा[2] चश्म में है नोके-ख़ार[3]

दाग़बर दिल[4] हूं मैं सोज़े-हिज्र से
क्या खुश आए मुझको सैरे-लालाज़ार[5]

मैं हूं आवारा बरंगे-बू-ए-गुल[6]
एक जा[7] हरगिज़ नहीं मुझको करार

होता उस गुल को नहीं, मुतलक़[8] असर
मिस्ले-बुलबुल[9] कर चुका नाला हज़ार

दम है आँखों में और इस पे अब तलक
मिस्ले-नरगिस-वा[10] है चश्मे-इन्तज़ार

कब तलक तेरी जुदाई में रखूं
आब[11] के मानिंद रंगीं अश्क़बार[12]

ऐ 'ज़फ़र', उससे नहीं कहता कोई
जा के इतना भी कि सुन ओ गुल-आज़ार[13]

---

*1. पुष्प व बसंत को लज्जित करने वाला, 2. घास, 3. काँटा, 4. हृदय के दाग़, 5. बाग़ की सैर, 6. पुष्प-सुगन्ध की भांति, 7. एक जगह, 8. बिल्कुल, 9. बुलबुल की तरह, 10. खुला हुआ, 11. बादल, पानी, 12. रंगीन आँसू, 13. फूल जैसे गालों वाला।*



# निबाह बात का, उस

निबाह बात का, उस हीलागर[1] से कुछ न हुआ
इधर से क्या न हुआ, पर उधर से कुछ न हुआ

ज़वाब साफ़ तो लाता, अगर न लाता ख़त
लिखा नसीब का जो नामाबर[2] से कुछ न हुआ

बला से ग़िरिया-ए-शब[3] तू ही कुछ असर करता
अगरचे इश्क़ में आहे-सहर[4] से कुछ न हुआ

जला-जला के किया शम्अ-सा, तमाम मुझे
बस, और तो मुझे सोज़े-ज़िगर[5] से कुछ न हुआ

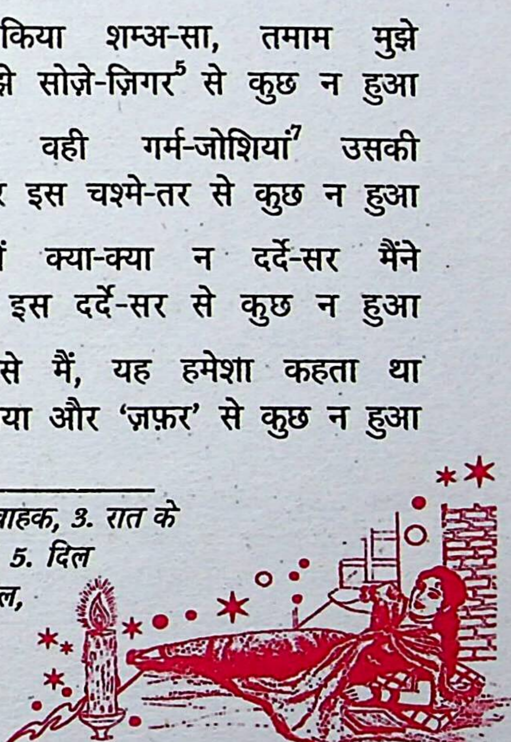
रहीं अदू[6] से वही गर्म-जोशियां[7] उसकी
इस आहे-सर्द और इस चश्मे-तर से कुछ न हुआ

उठाया इश्क़ में क्या-क्या न दर्दे-सर मैंने
हुसूल[8] पर मुझे, इस दर्दे-सर से कुछ न हुआ

न दूंगा दिल उसे मैं, यह हमेशा कहता था
वो आज ले ही गया और 'ज़फ़र' से कुछ न हुआ

---

*1. बहानेबाज़, 2. सन्देशवाहक, 3. रात के आँसू, 4. सुबह की ठंडी आहें, 5. दिल की जलन, 6. शत्रु, 7. मेलजोल, 8. प्राप्त, हासिल।*



# मेरा दिल तूने क्यों छोड़ा

मेरा दिल तूने क्यों छोड़ा, तेरा घर था, तो इस जा[1] था
मकां पर्दे का ऐ पर्दानशीं[2] गर था, तो इस जा था

वफ़ा की राह थी मुश्किल, उसे भी तय किया हमने
कि मंज़िल में मुहब्बत के अगर डर था, तो इस जा था

उठाया ऐ फ़लक, क्यों तूने हमको कू-ए-जानां[3] से
मुनासिब[4] ख़ाकसारों के जो बिस्तर था, तो इस जा था

गए दुनिया से सब शाहो-गदा[5], दोनों हुए यक्सां[6]
कि कोई साहिबे-ज़र[7], कोई बेज़र[8] था, तो इस जा था

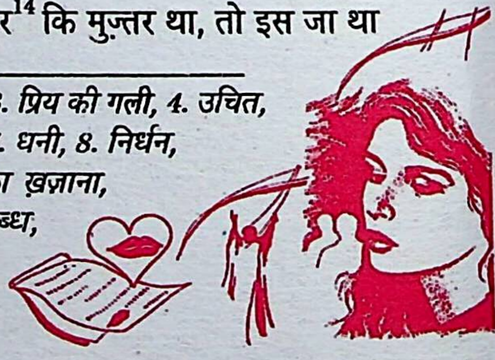
लगे जिस दम निकलने चश्मे-तर से अश्क़ के मोती
खुला हम पे कि पिनहां[9] गंजे-ग़ौहर[10] था, तो इस जा था

हमें ज़न्नत में भी मयख़ाना[11] याद आएगा, ऐ साक़ी
कि है जो ऐश वो हमको मयस्सर[12] था, तो इस जा था

'ज़फ़र', आराम से बैठेगा जाकर उसके कूचे[13] में
नहीं होवेगा वां मुज़्तर[14] कि मुज़्तर था, तो इस जा था

---

*1. जगह, 2. परदा करने वाली, 3. प्रिय की गली, 4. उचित,*
*5. राजा व रंक, 6. एकसमान, 7. धनी, 8. निर्धन,*
*9. दिया हुआ, 10. मोतियों का ख़ज़ाना,*
*11. मधुशाला, 12. उपलब्ध,*
*13. गली, 14. परेशान।*



# ये कहना है ग़लत

ये कहना है ग़लत, चुपके रहे से कुछ नहीं होता
दिला[1], हे सब्र ही बेहतर, कहे से कुछ नहीं होता

कहां तक चुप रहूं, चुपके रहे से कुछ नहीं होता
कहूं तो क्या कहूं उनसे, कहे से कुछ नहीं होता

शगुफ्ता[2] हो गुलो-बुलबुल से तुझ बिन, क्या चमन में दिल
हंसी से उसके, उसके चहचहे से कुछ नहीं होता

हमारा सोज़े-दिल कम हो चुका, गि़रिया से ऐ आँखों!
बहे आँसू तो क्या, दरिया बहे से कुछ नहीं होता

मज़ा जब हो कि सारा मयक़दा ख़न्दां[3] हो ज़ाहिद पर
सुराही के फ़क़त[4] इक क़हक़हे से कुछ नहीं होता

फ़रोग़े-हुस्न[5] है उसका वहीं, जो रूख़[6] पे ख़त[7] आया
अंधेरा यां तो सूरज के गहे[8] से कुछ नहीं होता

नहीं मुमकिन कि आए रहम उसको, ऐ 'ज़फ़र' मुझ पर
सहूं उसके सितम[9] क्या मैं, सहे से कुछ नहीं होता



---

*1. ऐ दिल, 2. खिला हुआ, 3. हँसना,
4. केवल, 5. सौन्दर्य वृद्धि, 6. मुख,
7. दाढ़ी के बाल, 8. डूबना,
9. अत्याचार।*

# थक के हम राहे-मुहब्बत

थक के हम राहे-मुहब्बत में जहां बैठे हैं
और वहां हमसे बहुत राहे-रवां[1] बैठे हैं

नशा ग़फ़लत[2] का है इतना कि नहीं सूझता कुछ
आए किस जाय[3] से हम और यहां बैठे हैं

यां रहा नामो-निशां किसका, बहुत-से नामी
अपना ख़ेड़े[4] में लिए नामो-निशां बैठे हैं

पासे-आदाब[5] है क्योंकर, न रहे शम्अ खड़ी
कि तेरी बज्म में हम सोख़्ते-जां[6] बैठे हैं

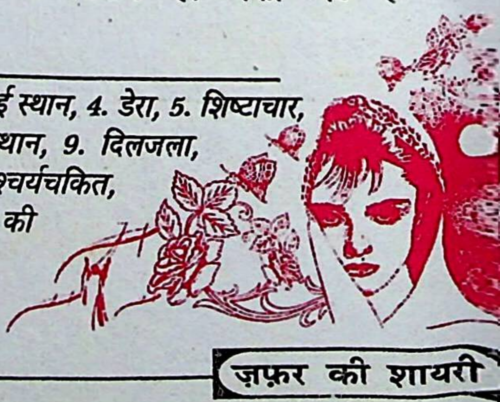
इस्तेक़ामत[7] की नहीं जा[8] है ये, मंज़िल कि यहां
सारे बरदाश्ता-दिल[9] पीरो-जवां[10] बैठे हैं

उट्ठे हैरतज़दा[11] इस बज्म से क्या, जूं-तस्वीर[12]
कि जहां उनको बिठाया है, वहां बैठे हैं

ऐ 'ज़फ़र', बारिशे-ग़िरिया[13] तेरा क्या तूफ़ां है
आज इस कूचे[14] में कितने ही मकां बैठे हैं

---

*1. यात्री, 2. बेसुधी, 3. कोई स्थान, 4. डेरा, 5. शिष्टाचार, 6. दिलजले, 7. बड़प्पन, 8. स्थान, 9. दिलजला, 10. वृद्ध और जवान, 11. आश्चर्यचकित, 12. चित्र जैसा, 13. आँसुओं की बरसात, 14. गली।*



# इश्क़ में क्या हम भी

इश्क़ में क्या, हम भी ऐ तक़दीर सीधे हो गए
कितने इस क़ालिब[1] में टेढ़े तीर सीधे हो गए

आतिशे-सौदा[2] ने मेरे कर दिया आहन[3] को मोम
खुल के मेरे हलक़ा-ए-ज़ंजीर[4] सीधे हो गए

तू हुआ हमसे न सीधा, और दस्ते-शाना[5] से
बाल बल खाए तेरे तस्वीर[6] सीधे हो गए

चर्ख़[7] टेढ़ा हो रहा और सैंकड़ों बांके जवान
टेढ़े होकर ज़ेरे-चर्ख़े-पीर[8] सीधे हो गए

रास्ती[9] पर किसी कामत[10] की हुआ जो बादे-मर्ग[11]
दस्तो-पा-एव-आशिक़े-दिलग़ीर[12] सीधे हो गए

मेरी सीधी बात पर होते हैं टेढ़े, ऐ 'ज़फ़र'
जब कि टेढ़ी मैंने की तक़रीर[13] सीधे हो गए

---

*1. हृदय, 2. उन्मादित अग्नि, 3. लोहा, 4. ज़ंजीर का घेरा, 5. कन्धा, 6. सुन्दरी, 7. आकाश, 8. वृद्ध आकाश के तले, 9. सच्चाई, 10. ऊंचाई, 11. मरणोपरान्त, 12. दिलजला प्रियतम, 13. भाषण, वार्तालाप।*



# मंज़िले-मक़सूद तक

मंज़िले-मक़सूद[1] तक हिम्मत मुझे पहुंचाएगी
और या ऐ दिल, मेरी क़िस्मत मुझे पहुंचाएगी

उड़ के मैं पहुंचूंगा दामन तक मेरे मिस्ले-ग़ुबार[2]
देखना बेताक़ती[3], ताक़त मुझे पहुंचाएगी

तल्ख़कामी[4] से ही अपनी हूंगा शीरींक़ाम[5] मैं
तल्ख़ी-ए-अन्दोहो-ग़म[6] शरबत मुझे पहुंचाएगी

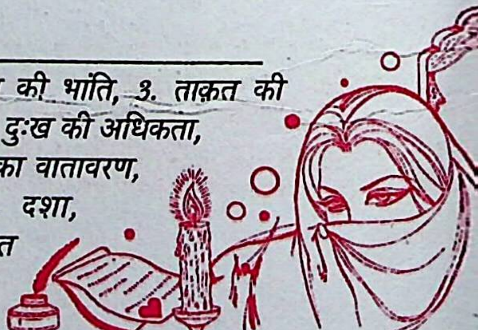
वस्ल में हरग़िज न होता शाद[7], गर मैं जानता
रंज आख़िर को तेरी फ़ुरक़त[8] मुझे पहुंचाएगी

गर रहे हमराह ऐ ज़ाहिद, हवा-ए-बुतक़दा[9]
ख़ूब काबा[10] तक यह कैफ़ियत[11] मुझे पहुंचाएगी

रंज देता है 'ज़फ़र', आराम अक़बा[12] का सवाब[13]
आख़िरश[14] मेहनत मेरी राहत मुझे पहुंचाएगी

---

*1. निर्दिष्ट स्थान, 2. धूल की भांति, 3. ताक़त की कमी, 4. कड़वाहट, 5. स्वस्थ, 6. दुःख की अधिकता, 7. प्रसन्न, 8. विरह, 9. मन्दिर का वातावरण, 10. मुस्लिम तीर्थस्थल, 11. दशा, 12. भविष्य, 13. पुण्य, 14. अन्त में, अन्ततः।*



# जो पिएंगे शराब

जो पिएंगे शराब बेमौक़ा
वो ही होंगे ख़राब बेमौक़ा

डर ख़ुदा से, न बोल इतना झूठ
बुत-ए-ख़ाना-ख़राब बेमौक़ा

हम तो कहते हैं, बात मौक़े की
और देते हैं ज़वाब बेमौक़ा

हस्ती-ए-यक-नफ़स[1] पे क्यों ये हवा
बांधती है हबाब बेमौक़ां

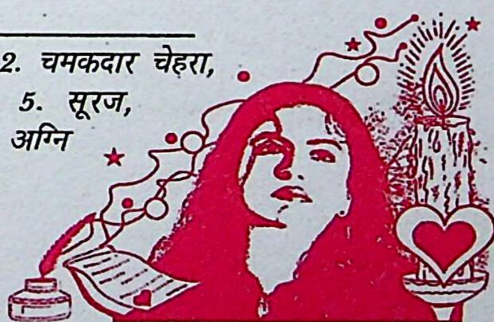
रूख़े-रोशन[2] के रू-ब-रू[3] है तेरे
ताबिशे[4]-आफ़ताब[5] बेमौक़ा

अब्र[6] मिज़गां[1] के सामने तेरे
है बरसता सहाब[8] बेमौक़ा

दिल 'ज़फ़र' दे के शोलारूमाओं[9] को
ले लिए हमने अज़ाब[10] बेमौक़ा

---

*1. एक साँस का जीवन, 2. चमकदार चेहरा, 3. आमने-सामने, 4. चमक, 5. सूरज, 6. बादल, 7. पलकें, 8. बादल, 9. अग्नि के समान मुख वाले, 10. दुःख।*



# वहां की मुख़लिसी, ऐ वाये

वहां की मुख़लिसी[1], ऐ वाये[2]-क़िस्मत हो तो क्योंकर हो
कि मैं आलूदा-ए-असियां[3] हूं, रहमत हो तो क्योंकर हो

बजुज़[4] शर्मिन्दगी, चश्मे-इनायत[5] हो तो क्योंकर हो
कि बे-अश्क़े-नदामत[6], ज़ोशे-रहमत हो तो क्योंकर हो

जहां हो नफ़्स-सा रहज़न[7], जहां शैतान हो दुश्मन
वहां ताअत[8] हो क्योंकर और इबादत हो तो क्योंकर हो

गुरूरे-ज़ाह[9] न फूंकी वो मग़ज़े-जां[10] में बेहोशी
कि ज़ायल[11] नश्शा-ओ-पिन्दारे-नख़वत[12] हो तो क्योंकर हो

गरांबारी[13] गुनाहों की, उठाने सर नहीं देती
इलाही, क्या करूं यह रफ़अ[14] ख़िजलत[15] हो तो क्योंकर हो

हवस कहती है चल यां से, है कहती हिर्स[16] ला वां से
तवक्कुल[17] हो तो क्योंकर हो, क़नाअत[18] हो तो क्योंकर हो

बरंगे-तायरे-तस्वीर[19] हूं मैं, दामे-हैरत[20] में
रिहाई की मेरे कोई जो सूरत हो तो क्योंकर हो

---

*1. मुक्ति, 2. खेद, 3. पाप में डूबे, 4. सिवा, 5. कृपादृष्टि, 6. लज्जा के आँसू, 7. बुरी इच्छाएं, 8. चोर, 9. पद का घमंड, 10. दिमाग़, 11. नष्ट, 12. घमंड का नशा, 13. बोझ, 14. पूरा होना, 15. लज्जा, 16. लोभ, 17. आत्म-तुष्टि, 18. भरोसा, सन्तोष, 19. चित्र के पंछी की भांति, 20. आश्चर्य का जाल।*



# शोला बुलन्द होते ही

शोला बुलन्द[1] होते ही उस रूख़[2] की ताब[3] का
रोशन हुआ फ़लक[4] पे चराग़ आफ़ताब का

साक़ी को यक-नज़र जो दिखाए वो चश्मे-मस्त
बदमस्त हो के फेंक दे साग़र शराब का

जो देखता हूं दीदा-ए-बेदार[5] ही से मैं
क़ायल न ख़्वाब का हूं, न ताबीरे-ख़्वाब[6] का

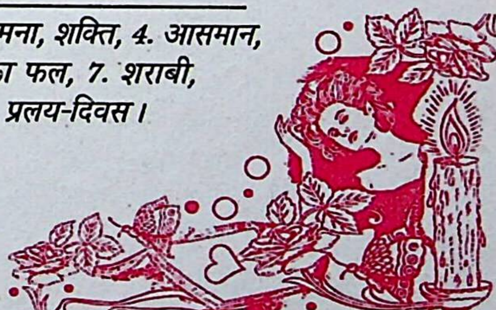
दरिया पे अपनी मौज में किस मयपरस्त[7] ने
पीकर शराब उलटा है, साग़र शराब का

पी जाना इक बहाना था, मय[8] मेरे हाथ से
मंज़ूर था उसी को उठाना, हिज़ाब[9] का

आमाल[10] का गर अपने 'ज़फ़र', कीजिए हिसाब
हर रोज़ हो मुआमला रोज़े-हिसाब[11] का

---

*1. लपकना, 2. चेहरा, 3. सामना, शक्ति, 4. आसमान, 5. जागती हुई आँखें, 6. स्वप्न का फल, 7. शराबी, 8. मदिरा, 9. परदा, 10. कर्म, 11. प्रलय-दिवस।*



# सुबह रो-रो के

सुबह रो-रो के शाम होती है
शब तड़प कर तमाम होती है

सामने चश्मे-मस्त के साक़ी
किसको परचा-ए-ज़ाम[1] होती है

कोई गुंचा खिला कि बुलबुल को
बेकली[2] ज़ेरे-दाम[3] होती है

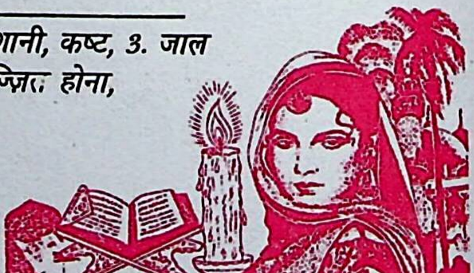
हम जो कहते हैं कुछ इशारों से
यह ख़ता ला-क़लाम[4] होती है

थी जो ख़िदमत ज़ुनूं की, मजनूं को
सो वो अब मेरे नाम होती है

पानी-पानी[5] लबों से उसके 'ज़फ़र'
क्या मय-ए-लाला-फ़ाम[6] होती है

---

*1. मदिरा की चिन्ता, 2. परेशानी, कष्ट, 3. जाल के नीचे, 4. मूक अपराध, 5. लज्जित होना, 6. लाल रंग की मदिरा।*



# ग़मे-दिलदार अब यूं

ग़मे-दिलदार[1] अब यूं दिल में बे-बाक़ाना[2] आता है
कि जैसे अपने घर में कोई साहिबख़ाना[3] आता है

तेरे क़ुरबां[4], हमें तो काम है तेरे तसव्वुर[5] से
ख़्याल अपना किसी ज़ानिब[6] न आएगा, न आता है

कहा शाने[7] से ज़ुल्फ़े-यार ने, यूं दिल को उलझाकर
तुझे सुलझाना आता है, मुझे उलझाना आता है

जिसे अपने सनम[8] की, शौक है सूरतपरस्ती[9] का
भला मस्ज़िद में कब वह छोड़कर मयख़ाना[10] आता है

किसी बदमस्त हमको जब से चश्मे-मस्त साक़ी ने
नज़र-ओ-ख़्वाब में अब शीशा-ओ-पैमाना आता है

तेरी रफ्तारे-वहशतख़ेज़[11] को सब देख सकते हैं
वही वहशी[12], वही ख़ब्ती[13], वही दीवाना आता है

---

*1. प्रिय का दुःख, 2. बिना डर, 3. मालिक,
4. न्योछावर, 5. कल्पना, 6. ओर, तरफ,
7. कन्धा, 8. प्रियतम, 9. सौन्दर्य-पूजक,
10. मदिरालय, 11. उन्मादी प्रवृत्ति,
12. जंगली, 13. सनकी।*



# करूं ख़त में क्या

करूं ख़त में क्या हाले-तहरीर[1] पहले
वहां चाक़े-ख़त[2] की है तदबीर पहले

जो मजनूं की तस्वीर खींचे मुसव्विर[3]
रखे सामने मेरी तस्वीर पहले

कोई उसका दिल पहले जाकर टटोलो
मुहब्बत की छेड़ो न तक़रीर[4] पहले

रविश-गुल[5] के जो उस चमन में हँसेगा
रहेगा वो जूं गुंचा[6] दिलगीर[7] पहले

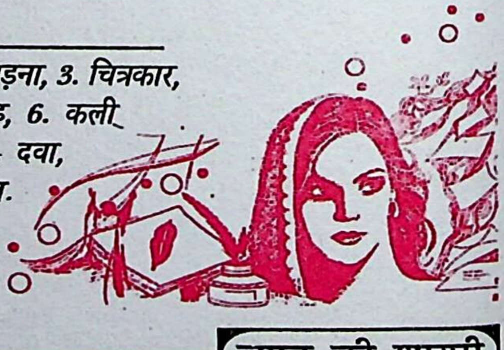
सितम है, नहीं ख़ाक भी अब समझते
हमें जानते थे जो अक़सीर[8] पहले

खुदा जाने ऐ इश्क़, क्या हो गई वो
जो थी अपनी आँखों में तासीर[9] पहले

मुक़द्दम[10] है तदबीर ज़ाहिर[11] में लेकिन
'ज़फ़र' काम करती है तक़दीर पहले

---

*1. हाल लिखना, 2. पत्र फाड़ना, 3. चित्रकार, 4. वार्तालाप, 5. फूल की तरह, 6. कली की भांति, 7. हृदय थामना, 8. दवा, 9. प्रभाव, 10. प्रथम बात. 11. प्रकट, प्रत्यक्षतः।*



# यही एक ग़म है

यही एक ग़म है, यही एक अलम[1] है
यही एक अलम है, यही एक ग़म है
मेरी चश्मे-नम[2] है, इसी रंजो-ग़म में
इसी रंजो-ग़म में, मेरी चश्मे-नम है
मुझे दम-ब-दम है, यही इक तरद्दुद[3]
यही इक तरद्दुद, मुझे दम-ब-दम[4] है
ख़फ़ा क्यों सनम है, नहीं भेद खुलता
नहीं भेद खुलता, ख़फ़ा क्यों सनम है
सितम[5] ही करम[6] है, मुझे उस सनम का
मुझे उस सनम का, सितम ही करम है
किया कब रक़म[7] है, कोई शिक़वा मैंने
कोई शिक़वा मैंने, किया कब रक़म है
वो करता क़लम[8] है, मेरे साथ नाहक़
मेरे हाथ नाहक़, वो करता क़लम है
'ज़फ़र' क्या सितम है, हुआ दोस्त दुश्मन
हुआ दोस्त दुश्मन 'ज़फ़र' क्या सितम है

---

*1. दुःख, 2. भीगी हुई आँखें, 3. चिन्ता, 4. हर क्षण, 5. अत्याचार, 6. कृपा, 7. लिखा हुआ, 8. काटना।*



# बजुज़ ज़ामे-जहां-बीं

बजुज़[1] ज़ामे-जहां-बीं[2] कहिए, पैमाना को क्या कहिए
न कहिए तख़्त-गाहे-ज़म[3], तेरे ख़ाना[4] को क्या कहिए

सुलझने से जो इन ज़ुल्फ़ों के, उलझे हैं ज़ियादा दिल
उलट-पेंच अपनी क़िस्मत का है ये, शाना[5] को क्या कहिए

उमीदे-दोस्ती किससे हो, दुश्मन दिल हुआ अपना
कि हो जब आशना ऐसा तो बेग़ाना को क्या कहिए

बहुत हम कह चुके दिल को, हज़र[6] कर उस परी-रू से
कहा उसने ये माना, कहिए दीवाना को क्या कहिए

नहीं आसान सोज़े-इश्क़[7] से यूं जल के मर जाना
न कहिए मरहबा[8] तो और परवाना को क्या कहिए

हुआ रंज उसके दिल को, जिससे हाले-दिल कहा हमने
किसी के सामने फिर ऐसे अफ़साना को क्या कहिए

'ज़फ़र', वो हूर-वश[9] घर में हमारे जलवा-अफ़ज़ा[10] है
सिवाय क़स्र-ए-ज़न्नत[11] अपने काशाना[12] को क्या कहिए

---

*1. सिवाय, 2. वह पात्र जिसमें संसार दिखाई दे, 3. जमशेद नामक बादशाह का सिंहासन, 4. घर, 5. कन्धा, 6. परहेज़, 7. दिल की जलन, 8. प्रशंसा, 9. परी-जैसा, 10. विराजमान, 11. स्वर्ग का एक महल, 12. मकान।*



# इश्क़ में ज़ालिम तेरे

इश्क़ में ज़ालिम तेरे, क्या ख़ाक हम अच्छे रहे
बरसों ईज़ा[1] में रहे, गर एकदम अच्छे रहे

गर दिलो-दीं[2] दे के अपना हम तुम्हें, काफ़िर[3] हुए
तुमको क्या नुक्सां हुआ, तुम तो सनम अच्छे रहे

हमने इस हस्ती में रहकर यह उठाए रंज़ो-ग़म
जो रवाना हो गए मुल्के-अदम[4], अच्छे रहे

इश्क़ का आज़ार सेहत[5] से है बेहतर, ऐ तबीब[6]
जो रहे उस शोख़ के बीमारे-ग़म, अच्छे रहे

वो रहें दिखकर परीशां उनको दिलज़नई[7] रही
गुल से गुंचा-ए-नसीमे-सुबह-दम[8] अच्छे रहे

ख़ाक आख़िर होंगे सब, पर पहले ही जो ख़ाकसार
हो गए उस यार के ख़ाके-क़दम, अच्छे रहे

हर किसी से राज़े-दिल[9] कह बैठना अच्छा नहीं
ऐ 'ज़फ़र', दुनिया में है अब लोग कम, अच्छे रहे

---

*1. कष्ट, दुःख, 2. दिल और धर्म, 3. शत्रु,*
*4. परलोक, 5. स्वास्थ्य, 6. चिकित्सक,*
*7. सन्तोष, 8. सुबह की हवा,*
*9. मन का भेद।*



# क़ामत यार की

क़ामत[1] यार की जब सनाई[2]
याद आई तो क़यामत आई

ज़ुल्फ़ से क्या था सरोकार उसे
दिल को होना था मगर सौदाई[3]

हुस्न के वास्ते शोहरत[4] दरकार[5]
इश्क़ को चाहिए है रुसवाई[6]

दिल जो उलझे तो उसे सुलझाओ
ज़ुल्फ़ सुलझाई तो क्या सुलझाई

तुम न आए सरे-बालीं[7], अफ़सोस
और मेरी जान लबों[8] पर आई

दिले-बेताब को ठहराएंगे हम
तुमने आने की अगर ठहराई

देख अन्दोह[9] का दिल पे अम्बोह[10]
ऐ 'ज़फ़र', जान बहुत घबराई

---

*1. क़द, 2. सौन्दर्य, 3. पागल, 4. प्रसिद्धि, 5. आवश्यक, 6. बदनामी, 7. सिरहाने, 8. होंठों, 9. दुःख, 10. बोझ।*



# जब कि रोते हुए

जब कि रोते हुए आ जाएंगे हम
बज़्म[1] में सबको रुला जाएंगे हम

जो है मंज़ूर, कहें या न कहें
उनकी नज़रों ही से पा जाएंगे हम

जो नसीबों से उठाए हैं अलम[2]
दिल के हाथों से उठा जाएंगे हम

तेरे मिलने की न खाएंगे क़सम
ज़हर भी देगा तो खा जाएंगे हम

कौन जा सकता है उसके कूचे[3] में
या तो दिल जाएगा या जाएंगे हम

दर्दे-सर इतना कभी देंगे तुम्हें
दर्दे-दिल अपना सुना जाएंगे हम

कोई भी ग़मख़्वार[4] वां तक न गया
ऐ 'ज़फ़र', सबने कहा जाएंगे हम



---

*1. सभा, 2. दुःख, 3. गली,
4. हमदर्द, मित्रगण।*

# कली जो लाला-ए-अहमर

कली जो लाला-ए-अहमर[1] की मुस्कराई आज
हँसी चमन में, मुझे तेरी याद आई आज

नहीं है वज़हे-कदूरत[2] कोई मुझे मालूम
करूं उस आईना-रू[3] से जो मैं सफ़ाई आज

बहार तख़्ता-ए-औरंग[4] हो गई पामाल[5]
चमन में फ़न्दके-पा[6] तुमने जब दिखाई आज

मिसाले-नक्शे-क़दम[7], आह उठ नहीं सकता
मिलाया ख़ाक में तूने शिक़स्ता-पाई[8] आज

बरंगे-शाना[9] न क्योंकर हो दिल क़शाक़श में
करे है ज़ुल्फ तेरी, हमसे कज़अदाई[10] आज

तुम्हारे हुस्न के कूचे में ले के कासा-ए-चश्म[11]
बग़ौर देख के करता हूं मैं गदाई[12] आज

मिला वो शोख़[13] तो सच है कि ऐ 'ज़फ़र' हमसे
सिवाय ग़िरिया[14] के कुछ बात बन न पाई आज

---

*1. लाल रंग का फूल, 2. गन्दगी का कारण, 3. दर्पण-मुखी, 4. बुद्धि, 5. बरबाद, 6. पदचिह्न, 7. पदचिह्न की भांति, 8. हिम्मत टूटना, 9. कन्धे की तरह, 10. टेढ़ा चलना, 11. आँख-रूपी भिक्षा- पात्र, 12. फ़कीरी, 13. चंचल, 14. रोना।*



# साथ हैं यूं तो हज़ारों

साथ हैं यूं तो हजारों, अपने दम[1] के आदमी
पर नहीं हमदम, बंटाने वाले ग़म के आदमी

वह ख़ुदा जाने कि होगा कैसा बेरहमी-शआर[2]
नाख़ुदा-तरस[3] इस क़दर हैं जिस सनम के आदमी

देखते हैं अपने दिल में जो तमाशा-ए-ज़हां[4]
होते हैं मोहताज़ कब वह ज़ामे-ज़म[5] के आदमी

क्या ज़मीं दिलकश[6] है कूचे[7] की तेरे, उट्ठे न फिर
जो मिसाले-नक़्शे-पा[8], वां बैठे जम के आदमी

जो गया फिर कर न आया, और किससे पूछिए
रहते हैं किस हाल में मुल्के-अदम[9] के आदमी

है अबस[10] कोशिश-फ़रोग़[11], इन्सां का है क़िस्मत के हाथ
जब तलक ताला[12] न चमकाए, न चमके आदमी

इश्क़ का कब बोझ उठता है, फ़रिश्तों से 'ज़फ़र'
हैं उठाने वाले इस बारे-अलम[11] के आदमी

---

*1. तरह, 2. क्रूर स्वभाव वाला, 3. ईश्वर से न डरने वाला, 4. संसार का तमाशा, 5. ज़मशेद का मदिरापात्र, 6. आकर्षक, 7. गली, 8. पदचिह्न की भांति, 9. परलोक, 10. बेकार, व्यर्थ, 11. उन्नति, 12. भाग्य, 13. दुःखों का बोझ।*



# उसका ख़ालो-ख़त ऐ दिल

उसका ख़ालो-ख़त[1] ऐ दिल, कुछ तूने पहचाना भी है
मुर्ग़े-दाना[2] के लिए यां, दाम[3] में दाना भी है

है ख़्याले-गर्दनो-चश्म उसका जिस दिन से हमें
पास अपने इक सुराही भी है, पैमाना भी है

कौन है सरगर्मे-आराइश[4] कि जिसके वास्ते
आईना भी है लिए ख़ुर्शीद[5] और शाना[6] भी है

मंज़िले-हस्ती[7] से ऐ ग़ाफ़िल, न फैला इतने पांव
ये समझ ले, एक दिन यां से तुझे जाना भी है

उड़ के हम पहुंचेंगे वां, होगा जहां वह शोला-ख़ू[8]
जिस जगह है शम्अ, उसके पास परवाना भी है

ज़ेरे-मेहराबे[9]-ख़मे-अब्रू[10] है चश्मे-मस्त-यार
क्या तमाशा है कि इस मस्ज़िद में मयख़ाना भी है

ऐ दिले-बेताब! मैं क्या ख़ाक समझाऊं तुझे
तूने दीवाने, कभी मेरा कहा माना भी है

---

*1. मुखड़ा, 2. बुद्धिमान पंछी, 3. ज़ाल, 4. सजावट में व्यस्त, 5. सूर्य, 6. कन्धा, 7. जीवन का ठहराव, 8. आग जैसे स्वभाव वाला, 9. गोलाई के नीचे, 10. भवों का टेढ़ापन।*



# लगे है सैरे-गुलशन

लगे है सेरे-गुलशन में दिले-गुंचा दहन[1] किसका
तेरे फ़ुरक़त[2] के मारों को, रविश[3] किसकी, चमन किसका

मेरी वहशत[4] से हमसर[5] हो सके, दीवानापन किसका
बरंगे-गुल[6] है सीना चाक मिस्ले-पैरहन[7] किसका

सरापा[8] आतिशे-उल्फ़त से मिस्ले-शम्अ जलता हूं
नहीं परवाह ये आशिक़ को, जलता है बदन किसका

तसव्वुर में हमेशा जिसके, अपने दम से लड़ता हूं
खुदा जाने नज़र में छिप रहा है बांकपन किसका

मुसाफ़िरख़ाना-ए-दुनिया में जो आया, हुआ राही
ये मंज़िल आमदो-शुद[9] की है, इसमें है वतन किसका

'ज़फ़र', इसके लबे-रंगीं से हम तो काम रखते हैं
कहां का लाल-रूमांनी[10] है, याक़ूते-यमन[11] किसका

---

*1. कली जैसा मुख, 2. विरह, 3. क्यारी, 4. पागलपन, 5. बराबरी, 6. फूल की भांति, 7. कुर्ते की तरह, 8. सिर से पैरों तक, 9. आना-जाना, 10. रोम देश का एक क़ीमती पत्थर, 11. यमन देश में खिलने वाला याक़ूत नामक फूल।*



# साक़िया, मस्ते-अज़ल

साक़िया, मस्ते-अज़ल[1] को नहीं दरकार शराब
वो नशा और ही है, क्या है ये मुरदार[2] शराब

ज़ेरे-मेहराब[3] दो अबरू[4] हैं, वो आँखें बदमस्त
आए मस्जिद में हैं, क्यों पी के ये मयख़्वार[5] शराब

हम न क्योंकर पिएं, ख़ूने-ज़िगर तन्हाई में
तू पिए हो कि जो हम सोहबते-अग़ियार[6] शराब

फ़ाक़ामस्ती के मज़े पूछे कोई मुफ़लिस[7] से
पीते इस लुत्फ़ से हैं, काहे को ज़रदार[8] शराब

मयक़शी का है यही बज़्मे-मुहब्बत में मज़ा
दिले-आशिक़ हो कबाब और लबे-यार[9] शराब

चश्मे-पानी[10] के करिश्मों से अजब क्या कि पिए
ज़ाहिदे-गोशानशीं[11] भी सरे-बाज़ार शराब

बात दिल की न कही उस बुते-अय्यार[12] ने एक
ऐ 'ज़फ़र', हमने पिलाई उसे सौ बार शराब

---

*1. जो शुरू से ही मस्त हो, 2. बेजान, निर्जीव, 3. मेहराब के नीचे, 4. भवें, 5. शराबी, 6. दूसरों के साथ, 7. ग़रीब, 8. अमीर, 9. प्रिय के होंठ, 10. भावनाओं की आँखें, 11. कोने में बैठने वाला धर्मगुरु, 12. जादूगरनी, प्रियतमा।*



# मिलाए ख़ाक में गर वो

मिलाए ख़ाक में गर वो सितम-शआर[1] मुझे
बला से समझे अगर अपना ख़ाकसार मुझे

वो गरचे दुश्मने-सब्रो-क़रार है लेकिन
न देखूं जब तलक उसको, नहीं क़रार मुझे

शुमार[2] हो न सके जिनका ता-ब-रोज़ शुमार[3]
दिए फ़लक न हैं, वो दाग बेशुमार मुझे

वफ़ूरे-गिरिया[4] ने मेरे बचा लिया वरना
जला चुकी थी मेरी आहे-शोलाबार[5] मुझे

खुली हुई हैं मेरी ज़ेरे-ख़ाक[6] भी आँखें
किसी का आह! यहां तक है इन्तज़ार मुझे

मज़ा तो ये है कि होते हैं वो जो मुझसे ख़फ़ा
तो और आता है उन पर ज़ियादा प्यार मुझे

'ज़फ़र', जहां में करूं किसको राज़दार[7] अपना
कि इश्क़ में नहीं अपना भी ऐतबार[8] मुझे



*1. अत्याचारी, 2. गिनती, गणना, 3. प्रलय के दिन तक, 4. आँसुओं की अधिकता, 5. गरम आहें, 6. क़ब्र में, 7. भेदिया, 8. भरोसा, विश्वास।*

# बुतों ने न की आशनाई

बुतों ने न की आशनाई[1] की बातें
कही और सारी खुदाई[2] की बातें

नहीं तुमको लाज़िम[3] बुराई की बातें
भलों की है ज़ेबा[4] भलाई की बातें

मज़ब है कि दिल में तो रक्खो कदूरत[5]
करो मुंह पे हमसे सफ़ाई की बातें

जो करते हो तुम दिलरुबाई[6] का दावा
कुछ आती भी हैं दिलरुबाई की बातें

नहीं बात कोई भी तुझमें वफ़ा की
सितमगर हैं, सब बेवफ़ाई की बातें

शबे-वस्ल[7] भी मुझको रोते ही गुज़री
जो याद आई रोज़े-जुदाई[8] की बातें

'ज़फ़र', दिल में बसती है रिन्दी-ओ-मस्ती
न मुंह से बना पारसाई[9] की बातें

---

*1. मित्रता, 2. संसार, 3. आवश्यक, 4. उचित, 5. द्वेष, ईर्ष्या, 6. प्रेम करना, 7. मिलन की रात, 8. विरह के दिन, 9. साधुपन, सात्विकता।*



# क्या हमसे किया निबाह

क्या हमसे किया निबाह क्या ख़ूब
सरआफ़रीं[1] उनको, वाह क्या ख़ूब

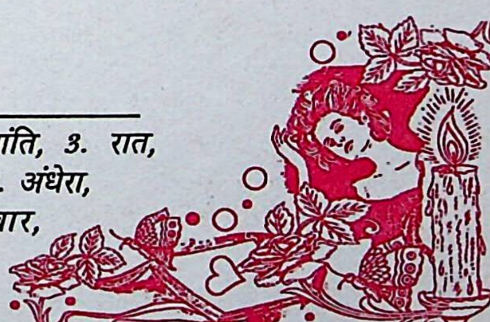
आए न क़रार[2], पर वो शब[3] को
ता-सुबह[4] दिखाई राह, क्या ख़ूब

हो ग़ैर के घर रोज़ जाते
यहां आते हो ग़ाह-गाह[5], क्या ख़ूब

ज़ुल्मात[6] कहूं मैं या शबे-तार[7]
है ज़ुल्फ़ तेरी सियाह, क्या ख़ूब

क्या-क्या सितम[8] दिखाए तूने
ऐ इश्क़े-सितम-पनाह[9] क्या ख़ूब

ग़ाहे[10] न कहा, 'ज़फ़र' को लाओ
बस, देखी तुम्हारी चाह, क्या ख़ूब



---

*1. बधाइयां, 2. चैन, शांति, 3. रात, 4. सुबह तक, 5. कभी-कभी, 6. अंधेरा, 7. अंधेरी रात, 8. अत्याचार, 9. अत्याचारी, 10. कभी।*

# वां रसाई नहीं

वां रसाई[1] नहीं तो फिर क्या है
यह ज़ुदाई नहीं तो फिर क्या है

हो मुलाक़ात तो सफ़ाई से
गर सफ़ाई नहीं तो फिर क्या है

दिलरुबा[2] को है दिलरुबाई[3] शर्त
दिलरुबाई नहीं तो फिर क्या है

शिक़वा[4] होता है आशनाई[5] में
आशनाई नहीं तो फिर क्या है

अल्ला-अल्ला रे, इन बुतों का गुरूर[6]
यह ख़ुदाई नहीं तो फिर क्या है

मौत आई तो टल नहीं सकती
और आई नहीं तो फिर क्या है

नहीं रोने में गर 'ज़फ़र' तासीर[7]
जगहँसाई नहीं तो फिर क्या है



*1. पहुंच, 2. प्रियतम, 3. आकर्षण, 4. शिकायत, 5. मित्रता, 6. घमण्ड, 7. प्रभाव।*

# अगर ग़फ़लत का परदा

अगर ग़फ़लत[1] का परदा हम उठाते अपनी आँखों से
तो जो वां देखते, यां देख जाते, अपनी आँखों से

बला से आप ही पैग़ाम्बर[2], हम अपने हो जाते
कि जाते वां और उसको देख आते अपनी आँखों से

मिलाएंगे नज़र किससे कि वह बेदीद हैं ऐसे
नहीं आईने में आँखें मिलाते अपनी आँखों से

जो वह आँखों में आया, कौन उसको देख सकता था
क़सम आँखों की, हम उसको छिपाते अपनी आँखों से

'ज़फ़र', गिरिया[3] हमारा कुछ न कुछ तासीर[4] रखता है
उन्हें हम देखते हैं, मुस्कराते अपनी आँखों से

---

*1. भ्रम, 2. ईश्वरीय प्रतिनिधि, 3. आँसू, 4. प्रभाव।*

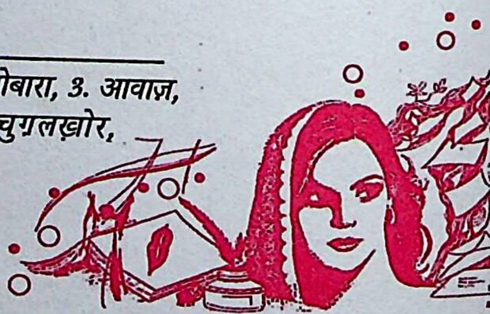


# लगाते मुख़फ़िद हैं

लगाते मुख़फ़िद[1] हैं रोज़ आकर
हमारी तुमसे, तुम्हारी हमसे
यक़ीं है बिगड़ेगी अब मुक़र्रर[2]
हमारी तुमसे, तुम्हारी हमसे
सदा[3] जो बाहम हो शोर-अफ़ज़ा[4]
तुम्हारा हुस्न और इश्क़ अपना
तो हो न शोहरत जहां में क्योंकर
हमारी तुमसे, तुम्हारी हमसे
छिपाएं किस तरह दिल की हालत
निगह है गम्माज़[5] वो क़यामत[6]
कि साफ़ कह देती है ये मुंह पर
हमारी तुमसे, तुम्हारी हमसे
अगर हो मंज़ूर आशनाई
तो कीजे उस तरह की सफ़ाई
कि फिर तबीयत न हो मुकद्दर[7]
हमारी तुमसे, तुम्हारी हमसे

---

*1. झगड़ा कराने वाले, 2. दोबारा, 3. आवाज़, 4. शोर मचाने वाले, 5. चुग़लख़ोर, 6. मुसीबत, 7. गन्दा।*



न कुछ कहो तुम, न कुछ कहें हम
समझ लो बस अपने दिल में बाहम
कि छिपती नहीं बात बन्दापरवर[1]
हमारी तुमसे, तुम्हारी हमसे

'ज़फ़र' कहें हम जो आएं वह यां
कि हज उसी दिन थे दे चुके जां
लगी थी जिस रोज़ आँख दिलबर[2]
हमारी तुमसे, तुम्हारी हमसे



1. मालिक, 2. प्रियतम।

# ज़ाम है, शीशा है

ज़ाम है, शीशा[1] है, साक़ी भी है, बरसात भी है
इन दिनों बादाक़शी[2] दिन भी है और रात भी है
कुछ तो है अपनी तरफ़ से भी, तलबे[3]-साग़रे-मय
और साक़ी की कुछ इमदादो[4]-मदारात[5] भी है
शीशा ख़ाली हो तो खुम[6] पास धरा है लबरेज़[7]
खुम जो ख़ाली हो तो नज़दीक ख़राबात[8] भी है
ज़ोशे-मस्ती भी है, हंगामे-हमी आग़ोशी[9]
ख़्वाहिशे-वस्ल[10] भी है, जा-ए-मुलाक़ात[11] भी है
दश्त[12] है, गश्त[13] है और सामने आँखों के शिकार
पये[14] आहू-निगहां[15] दांव भी है, घात भी है
साज़ो-मुतरिब[16] भी है और नग़मा भी है, रक्स[17] भी है
साथ हर तार के आँखों से इशारात[18] भी है
वो भी सर-मस्त है और हम जो नशे में सरशार[19]
हाथ गरदन में है और लुत्फ़े-इनायात[20] भी है
यार है, यार के साथ है 'ज़फ़र', बोसा-ओ-किनार[21]
और ग़र चाहिए कुछ बात तो वो बात भी है

---

*1. बोतल, 2. मदिरापान, 3. मांग, 4. सहायता, मदद, 5. ख़ातिर, 6. मटका, 7. भरा हुआ, 8. कुकर्म का स्थान, 9. आलिंगन, 10. मिलन की इच्छा, 11. मिलन का स्थान, 12. जंगल, 13. भ्रमण, 14. लिए हुए, 15. हिरण की आँख, 16. बाजा व गायक, 17. नृत्य, नाच, 18. इशारा, 19. मस्त, 20. कृपा, दया, 21. चुम्बन व आलिंगन।*



# यो सोज़े-दिल से

यो सोज़े-दिल[1] से जो है क़ालिबे-बशर[2] में चराग़
किया है इश्क़ ने रोशन, अंधेरे घर में चराग़

फिरे है पारा-ए-दिल[3], दीदा-ए-पुरआब[4] में यूं
जला के छोड़ दे जैसे कोई भंवर में चराग़

सफ़ा-ए-दिल से न क्योंकर हो नूरे-हक़[5] ज़ाहिर
छिपे है महर[6] का कब दामने-सहर[7] में चराग़

जले वो रात को, मैं रात-दिन जलूं, तुझसे
करे मुक़ाबला क्या सोज़िशे-ज़िगर[8] में चराग़

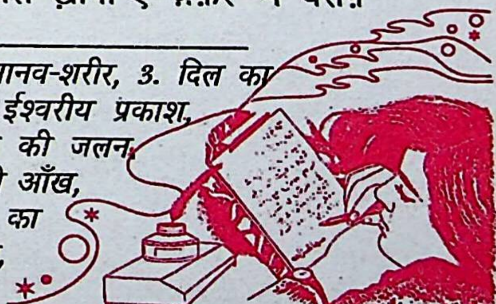
तलाशे-दौलते-दुनिया है, देख चश्मे-बला[9]
कि चश्म मारे-सियह[10] से है गंज-ज़र[11] में चराग़

फ़रोग़े-अक्ल[12] हो क्या नूरे-इश्क़ के आगे
बहुत हक़ीर[13] है ख़ुर्शीद[14] की नज़र में चराग़

न आए रात को मेहमान वो बज़्मे-अफ़रोज़[15]
तो क्यों न घी के जलें ख़ाना-ए-'ज़फ़र' में चराग़

---

*1. हृदय की जलन, 2. मानव-शरीर, 3. दिल का टुकड़ा, 4. गीली आँखें, 5. ईश्वरीय प्रकाश, 6. सूरज, 7. सुबह, 8. हृदय की जलन, 9. मुसीबत, 10. काले साँप की आँख, 11. धन की खान, 12. बुद्धि का विकास, 13. तुच्छ, 14. सूरज, 15. सभा की शोभा बढ़ाने वाला।*



# जिधर आँख पड़ती है

जिधर आँख पड़ती है, तू रू-ब-रू[1] है
तेरा जलवा सब में है, सब जाय[2] तू है

रखूं आईना क्यों न पेशे-नज़र में
मेरी आरसी[3], मेरा आईना-रू[4] है

मेरी चश्म में क्या है तेरा तसव्वुर[5]
मेरे दिल में क्या है, तेरी आरज़ू है

बदन में महक है तेरे यासमन[6] की
तेरी ज़ुल्फ़े-मुश्क़ीं[7] में अम्बर[8] की बू है

सदा[9] परदा-ए-साज़[10] की यह नहीं है
कोई परदे में कर रहा गुफ़्तगू है

कोई छूटता है ये दामन से, क़ातिल
शहीदे-मुहब्बत का आख़िर लहू है

'ज़फ़र', आपको ढूंढ, मत ढूंढ उसको
वो तुझमें है जिसकी तुझे ज़ुस्तजू[11] है

---

*1. सम्मुख, 2. स्थान, जगह, 3. एक गहना, 4. दर्पण-जैसा, 5. कल्पना, 6. चमेली का फूल, 7. सुगंधित केश, 8. एक प्रकार की सुगंध, 9. ध्वनि, 10. बाजे का परदा, 11. तलाश।*



# सिखाई तुमको जो

सिखाई तुमको जो हैंगी बातें
हमारी ज़ानिब[1] से आह उलटी
इसी सबब[2] से हैं, मेरे साहिब!
तुम्हारी हमसे निगाह उलटी

न कर तू कुछ दिन में अपने हर्गिज़[3]
ख़ुदा जो चाहेगा, वो ही होगा
बस, अपनी क़िस्मत पे रह तू शाकिर[4]
वो ख़्वाह सीधी हो, ख़्वाह उलटी

अमल[5] कर इस पे, है रास्ती[6] यह
सुना बुज़र्गों से है हमेशा
कभी न मंज़िल तलक वो पहुंचा
चला है जो कोई, राह उलटी

तुम्हारे दुश्मन, मदाम[7] रोएं
'ज़फ़र' है तुम पर निगाहो-अब्रू
न होंगे सरसब्ज़[8] भी वो हर्गिज़
गवाही दें जो गवाह उलटी

*1. ओर, तरफ़, 2. कारण, 3. कभी भी, 4. सन्तुष्ट, 5. कार्य, 6. सच्चाई, 7. सदा, हमेशा, 8. खुशहाल, हरे-भरे।*



# दिल का आईना

दिल का आईना जब सफ़ा देखा
वह जो पिन्हां[1] था, बरमला[2] देखा

क्या कहूं बुतक़दे[3] में क्या देखा
ज़लवा-ए-क़ुदरते-खुदा[4] देखा

तू वो यक़ता[5] है, तेरी सूरत का
न सुना है, न दूसरा देखा

यह जहां है अज़ब तमाशाग़ाह[6]
हर तमाशा यहां नया देखा

हमने राहे-वफ़ा में ग़ैर-अज़-इश्क़[7]
कोई अपना न रहनुमा[8] देखा

ख़ाक दुनिया की सैर की हमने
यह तो इक यूं ही ख्वाब-सा देखा

इश्क़ है या बला कि इसमें 'ज़फ़र'
एक आलम[9] को मुब्तिला[10] देखा

---

*1. छिपा हुआ, 2. प्रकट, 3. मन्दिर, 4. ईश्वर की माया, 5. अद्वितीय, 6. तमाशाघर, 7. प्रेम के सिवाय, 8. पथ-प्रदर्शक, 9. संसार, 10. फंसा हुआ, व्यस्त।*



# कोई अफ़्सूं मेरा

कोई अफ्सूं[1] मेरा गर उन पर चले
ख़ुद-ब-ख़ुद आए वो मेरे घर चले

यक-ब-यक उट्ठा वही पहलू में दर्द
जब वो पहलू से मेरे उठकर चले

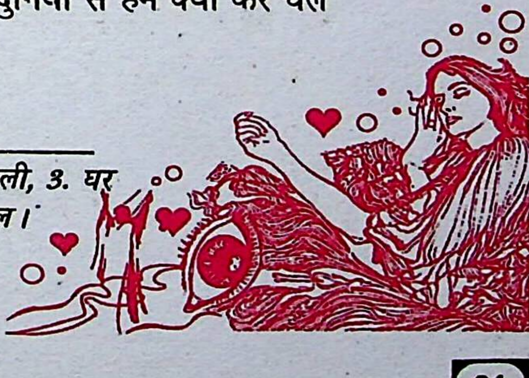
दिन मुसीबत के जो मरने थे हमें
हम मुहब्बत में तुम्हारी भर चले

दिल को अपने उसके कू-ए-ज़ुल्फ़[2] में
मैं न जाने दूं, मेरा बस गर चले

न ज़िगर में आह, न आँखों में अश्क़
काम अपना इश्क़ में क्योंकर चले

ज़िक्र जब ख़ानाख़राबी[3] का मेरी
बज्म[4] में आया, वो अपने घर चले

जो किया, सो ऐ 'ज़फ़र', हमने भरा
क्या कहें दुनिया से हम क्या कर चले



*1. जादू, 2. बालों की गली, 3. घर की बरबादी, 4. सभा, महफ़िल।*

# तुमको बहका दिया

तुमको बहका दिया किसी ने है
हाय! यह क्या किया किसी ने है

फिरते हैं वह अलग-अलग हमसे
लगा, कुछ तो दिया किसी ने है

आशना-आशना[1] हैं सब कहते
देखा भी आशना, किसी ने है

हमने देखा है जो सितम[2] तेरा
नहीं अब तक सुना किसी ने है

क्या गुज़रती थी मज़े में लेकिन
कर दिया बेमज़ा किसी ने है

सबब[3]-ए-रंजिश[4] उनका दिल के सिवा
नहीं मुझसे कहा किसी ने है

मर गए, पर हमारे मरने पे
कब कहां मरहबा[5], किसी ने है

ऐ 'ज़फ़र', रो दिया है, जब मेरा
कुछ सुना माजरा[6] किसी ने है



---

*1. परिचित, मित्रवर, 2. कष्ट, 3. कारण, 4. दुश्मनी, 5. प्रशंसा, 6. हाल।*

# उस दर पे जो सर

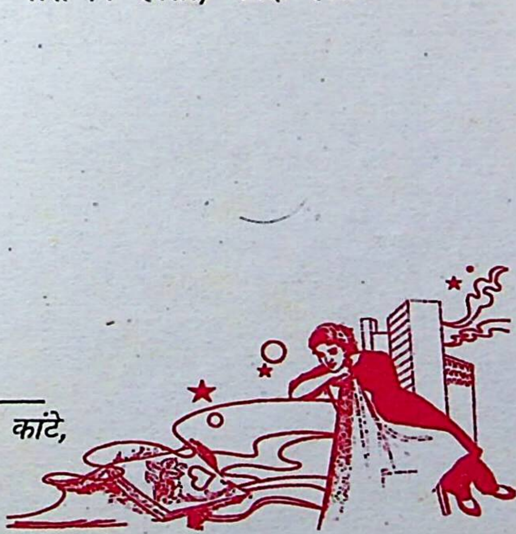
उस दर पे जो सर मार के रोता, कोई होता
तो बिस्तरे-राहत[1] पे न सोता, कोई होता

किसका फ़लक-ए-अव्वलो-हफ़्तम कि मेरा अश्क़
एक आँख झपकने में डुबोता, कोई होता

यह दिल ही था नादां कि तेरी ज़ुल्फ़ से उलझा
यूं अपने लिए ख़ार[2] न बोता, कोई होता

बुलबुल भी थी जां-बाख़्ता, परवाना भी ज़ांबाज़[3]
पर मेरी तरह जान न खोता, कोई होता

तन्हाई[4] में इतना तो न घबराता, 'ज़फ़र' मैं
दिल ग़रचे मेरे पास न होता, कोई होता



---

*1. चैन का बिस्तर, 2. कांटे,
3. जान देने वाले, 4. एकान्त।*

# हुए ख़ुसरुआने-ज़हां

हुए ख़ुसरुआने-ज़हां[1] अच्छे-अच्छे
न अब वह, न उनके मकां अच्छे-अच्छे

कहूं किससे वे-मेहरियां[2] इस फ़लक[3] की
कि सब उठ गए मेहरबां अच्छे-अच्छे

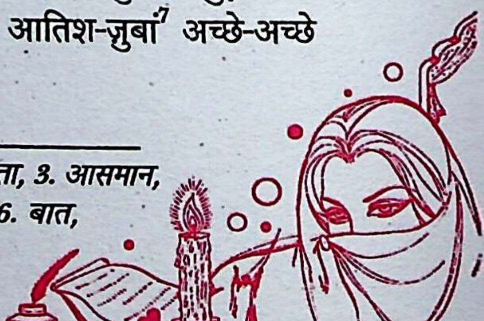
हमारी मुहब्बत की थी क़द्र जिनको
वो क्या लोग थे क़द्रदां अच्छे-अच्छे

ये पीरे-फ़लक[4] वो है जिसके सितम से
गये ख़ाक में मिल जवां अच्छे-अच्छे

लड़ें क्या ज़माने से कुश्ती कि इसने
पछाड़े बहुत पहलवां अच्छे-अच्छे

तेरे चश्मे-बीमार के ऐ सितमगर[5]
हज़ारों हैं बीमार यां अच्छे-अच्छे

'ज़फ़र', है वो गरमी तुम्हारे सुख़न[6] में
कि जलते हैं आतिश-ज़ुबां[7] अच्छे-अच्छे



---

*1. राजा-महाराजा, 2. निष्ठुरता, 3. आसमान, 4. वृद्ध आकाश, 5. अत्याचारी, 6. बात, 7. क्रोधी।*

# साक़िया आज गुलिस्तां में

साक़िया आज गुलिस्तां[1] में घटा अच्छी है
ज़ाम दे दे कि जगह ख़ूब, हवा अच्छी है

नाज़ अच्छा है, नज़र अच्छी, अदा अच्छी है
तुझ में जो बात है, वह नामे-ख़ुदा[2] अच्छी है

बात जो तुझको लगी मेरी बुरी, क्या बायस[3]
वरना वह जिसने सुनी, उसने कहा, अच्छी है

ऐ ज़फ़ाकार[4]! इसी में हैं गर ख़ुशी तेरी
तो वफ़ा से मेरे हक़ में ये जफ़ा अच्छी है

क्यों न जिन्दां[5] में हो ये सिलसिला, ज़बाने-जुनूं[6]
लगती ज़ंज़ीर की कानों को सदा[7] अच्छी है

कस्रो-ईवान[8] से क्या काम फ़क़ीरों को 'ज़फ़र'
कि जहां बैठ रहे, बस वही जा[9] अच्छी है

*1. उपवन, 2. ईश्वर की सौगन्ध, 3. कारण, वजह 4. अत्याचारी, 5. बन्दीगृह, 6. उन्मादित, वातावरण, 7. ध्वनि, 8. महल, 9. स्थान।*



## हर कहीं मुझको तमाशा

हर कहीं मुझको तमाशा-ए-ज़हां[1] एक-सा है
कि तसव्वुर[2] तेरा, ऐ राहते-ज़ां[3], एक-सा है

ख़ाना-ए-दिल[4] में मेरे जैसा समाया वह यार
हो गया मिल के मकीं[5] और मकां एक-सा है

माह[6] में क्या, आफ़[7] में क्या, शोला में क्या, बर्क़ में क्या
ज़लवा-ए-हुस्न तेरा सब में अयां[8] एक-सा है

गुलशने-दहर[9] में वो बुलबुले-तस्वीर हूं मैं
कि मुझे रंगे-बहारां-ओ-ख़िज़ां[10] एक-सा है

शम्अ गर रात को जलती है तो दिन को बुझती
जलता दिन-रात तेरा सोख़्ता-जां[11] एक-सा है

बहम[12] कुछ और तुझे, मुझको गुमां है कुछ और
मेरा और तेरा नहीं बहमो-गुमां एक-सा है

ऐ 'जफ़र', साग़रे-ज़म[13] से नहीं कम साग़रे-दिल[14]
देखा दोनों में तमाशा-ए-ज़हां एक-सा है

*1. संसार का तमाशा, 2. कल्पना, 3. प्रिय, 4. हृदय, 5. निवासी, 6. चाँद, 7. सूर्य, 8. प्रकट, 9. संसाररूपी उपवन, 10. बसंत व पतझड़, 11. दिलज़ला, 12. भ्रम, 13. ज़मशेद बादशाह की सुराही, 14. हृदय की सुराही।*



# ग़र आये दिल में

ग़र आये दिल में दर्दे-दूरी-ए-ज़ानाना[1] वाज़िब है
कि ग़म तन्हा है इस घर में, कोई हमख़ाना[3] वाज़िब है

भरे है अपना दामन हर चमन, फूलों में ऐ साक़ी!
तुझे भी मय से भरना शीशा-ओ-पैमाना वाज़िब है

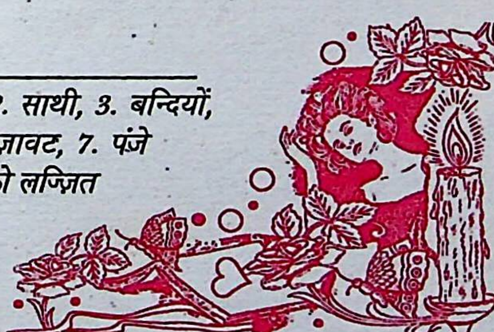
ख़बर ले हम असीरों[3] की, कहां सय्याद बेपरवा
समझाया अपने आँसू ही को आबो-दाना[4] वाज़िब है

अग़रचे दर्दे-सर है, सर-ब-सर हो मेहरबानी से
ज़रा सुन लेना मेरे दर्द का अफ़साना वाज़िब[5] है

मुझे आराइश[6] उन ज़ुल्फ़ों की है मंज़ूर आँखों से
बनाऊं पंजा-ए-मिज़गां[7] को गर मैं शाना[8] वाज़िब है

'ज़फ़र' ज़ोशे-बहारे-हुस्न से उस रश्क़े-गुलशन[9] का
ज़ियादा दिल का होना, इन दिनों दीवाना वाज़िब है

*1. प्रिय से दूरी का दुःख, 2. साथी, 3. बन्दियों, 4. खाना-पानी, 5. उचित, 6. सज़ावट, 7. पंजे जैसी पलकें, 8. कंधा, 9. उद्यान को लज्ज़ित कर देने वाला।*



# तीर तेरा जिसके सीने से

तीर तेरा जिसके सीने से गुज़र कर जायेगा
आप जायेगा गुज़र, पर दिल में घर कर जायेगा

वो मक़ामे-ऐश[1] है दुनिया, कि यां से जीते-जी
कौन जाता है, अगर जायेगा, मर कर जायेगा

चुपके-चुपके नाला[2] कब सीने से जायेगा निकल
जायेगा जिस वक़्त, यह सबको ख़बर कर जायेगा

इम्तेहां करती नहीं उल्फ़त का, परवाने से शम्अ
गर ख़बर होती ही ख़ैरात[3] इस क़दर कर जायेगा

तेरी हस्ती पेशख़ोमा[4] है, ये तेरा है हुबाब[5]
अब तो कोई दम में यां हो, तू सफ़र कर जायेगा

कर गया गर इक तबस्सुम[6] बाग़ में आकर वो गुल
देखना गुंथे[7] के सौ टुकड़े, ज़िगर कर जायेगा?

जज़्बा-ए-दिल[8] खींच ही लायेगा उस ख़ुदकाम[9] को
काम अपना एक दिन यह, ऐ 'ज़फ़र' कर जायेगा

---

*1. आराम स्थल, 2. रोना-चिल्लाना, 3. त्याग, 4. भविष्यवाणी, 5. बुलबुला, 6. हँसी, मुस्कान, 7. कली, 8. हृदय का भाव, 9. स्वार्थी।*



# हुबाब आसा है

हुबाब-आसा[1] है तो इकदम हवा का कारख़ाना है
कि ज़ारी बहरे-हस्ती[2] में फ़ना[3] का कारख़ाना है

न पूछो क्या बुताने-खुदनुमा[4] का कारख़ाना है
न बुत है और न बुतख़ाना, ख़ुदा का कारख़ाना है

ज़िला[5] होती है ख़ाकस्तर[6] से यां आईना को देखो
तमाशा है क़दूरत[7] में, सफ़ा[8] का कारख़ाना है

फ़रेबों में कहीं दुनिया के, तू ऐ दिल न फंस जाना
ज़रा हुशियार रहना, यां दग़ा का कारख़ाना है

नहीं रहती हमेशा एक-सी रंगत ज़माने की,
कुछ इसके रंग में रंगे-हिना[9] का कारख़ाना है

उमीदे-लुत्फ़[10] क्या रखता है तू उनसे कि वां ऐ दिल
सितम का कारख़ाना है, जफ़ा का कारख़ाना है

---

*1. बुलबुले की भांति, 2. जीवन-सागर, 3. मृत्यु, 4. आत्म-प्रदर्शक, 5. चमक, 6. मिट्टी, धूल, 7. गंदगी, 8. सफ़ाई, 9. मेहंदी का रंग, 10. मज़े की आशा।*



# ज़फ़ाकश और सितमपरवर

जफ़ाकश[1] और सितमपरवर[2], न हम जैसे, न तुम जैसे
बलाक़श[3] और ग़ारतगर[4], न हम जैसे, न तुम जैसे

न रहते इश्क़ के चर्चे, न पड़तीं हुस्न की धूमें
ज़हां में पैदा होते गर, न हम जैसे, न तुम जैसे

कहा यह चश्मेतर में पारा-हाय-दिल[5] ने अश्क़ों से
न होंगे लाल-ओ-ग़ौहर[6], न हम जैसे, न तुम जैसे

ज़हां में हज़रते-दिल यूं तो देखें सैंकड़ों बिस्मिल[7]
दिल-बेताब और मुज़्तर[8], न हम जैसे, न तुम जैसे

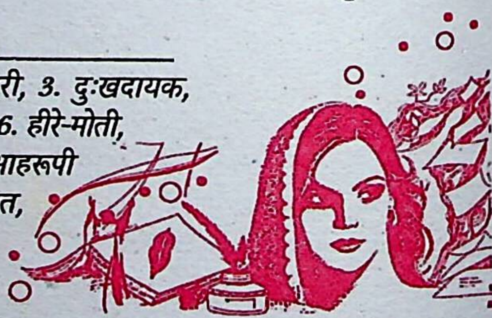
शरारे-आह[9] से कहते थे शोले[10] शब[11] को नालों से
कि चमके चर्ख़[12] से अख़्तर[13], न हम जैसे, न तुम जैसे

निग़ाहो-चश्म से कहते हैं उसके इश्क़-ओ-ग़म्ज़ा[14] को
कि हैं दुनिया में जादूगर, न हम जैसे, न तुम जैसे

बुरे हैं या भले हम-तुम 'ज़फ़र', लेकिन ग़नीमत है
कि यां आएंगे फिर-फिरकर, न हम जैसे, न तुम जैसे

---

*1. कष्टदायी, 2. अत्याचारी, 3. दुःखदायक, 4. लूटने वाले, 5. दिल के टुकड़े, 6. हीरे-मोती, 7. घायल, 8. व्यथित, 9. आहरूपी चिनगारियां, 10. लपटें, 11. रात, 12. आकाश, 13. सितारे, 14. नख़रे।*



# करूं क्या याद ज़ुल्फे

करूं क्या याद ज़ुल्फे-दिलबरे-जानी[1] नहीं जाती
नहीं जाती, मेरे दिल की परेशानी नहीं जाती

हक़ीक़त[2] को, हमारे इश्क़ की पहुंचे, तो क्या पहुंचे
कि वां तक नासेहों[3] की अक्ले-दीवानी नहीं जाती

भला कर तो भला होगा, सदा सुन बानवाओं[4] की
नहीं यह बात कुछ ऐसी कि जो मानी नहीं जाती

नहीं पहुंचाते हम तागोश नाज़ुक[5] ख़ुशदिमाग़ों[6] के
कि जब तक बात कोई ख़ूब-सी छानी नहीं जाती

गुज़र जाएं न क्योंकर जान से क़ासिद कि जानां तक
ख़बर मुश्किल से जाती है, बा-आसानी नहीं जाती

तबीयत है ज़वां-पीरी में भी वो, ऐ 'ज़फ़र' तेरी
सुख़नफ़हमी[7], सुख़नसंजी[8], सुख़नदानी[9] नहीं जाती



*1. प्रिय के केश, 2. वास्तविकता, 3. उपदेशक, 4. गायक, 5. कोमल, सौम्य 6. नाज़-नख़रे वाले, 7. काव्य-प्रियता, 8. काव्य-अभिरुचि, 9. काव्य-हृदयता।*

# ख़ुद-रफ्तग़ां को रोके

ख़ुद-रफ्तग़ां[1] को रोके कोई, क्या किसी तरह
चल निकले, पर क़दम नहीं थमता किसी तरह

सोज़े-ग़मे-फ़िराक़[2] से दिल इस तरह जला
फिर हो सका किसी से न ठंडा किसी तरह

टूटे हज़ार ख़ार[3], ग़मो-नश्तरो-अलम[4]
फूटा न मेरे दिल का फफोला किसी तरह

नालों से मेरे आब[5] हुए संग[6] बारहा[7]
इस संगदिल[8] का दिल न पसीजा किसी तरह

मैं ख़ाक हो के इश्क़ में बरबाद हो गया
दामन तलक पे उसके, न पहुंचा किसी तरह

समझाया तूने हमको तो, सौ तरह नासेहा[9]
लेकिन हमारा दिल नहीं समझा किसी तरह

बेतरह दामे-ज़ुल्फ़े-बुतां[10] में है दिल असीर[11]
छूटे ये इस बला से ख़ुदाया किसी तरह

रोते ही रोते टूट गया रिश्ता-ए-हयात[12]
पर आँसुओं का तार न टूटा किसी तरह

---

*1. अपनों से जलने वाला, 2. विरह के दुःख की जलन, 3. कांटे, 4. दुःख, दर्द व कष्ट, 5. पानी, 6. पत्थर, 7. प्रायः, अकसर, 8. पत्थर दिल, 9. उपदेशक, 10. रूपसियों का केशज़ाल, 11. बन्दी, 12. जीवन-डोर।*



# क्या निग़ाहे-मस्त में

क्या निग़ाहे-मस्त में, साक़ी की मस्ती है, भरी
सबके दिल में आरज़ू-ए-मयपरस्ती[1] है भरी

हम बुतों में देखते हैं ज़लवा-ए-हक़[2] ज़ाहिरा[3]
बुतपरस्ती[4] में हमारी, हक़परस्ती[5] है भरी

सैंकड़ों दिल इक निग़ह पर, ले लिए हैं, उसने मोल
हो-न-हो कुछ नफ्अ[6] लेकिन ज़िन्स[7] सस्ती है भरी

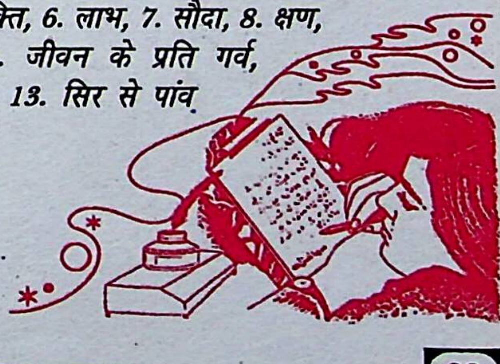
फ़ुरसते-यक़दम[8] पे है, सरक़श[9] हुआ क्या-क्या हुबाब[10]
उसके सर में जो हवा-ए-बहरे-हस्ती[11] है भरी

आदमी कहते हैं जिनको, कम हैं दुनिया में वो लोग
यूं तो सब औलादे-आदम से, ये बस्ती है भरी

गुम्बदे-गर्दू[12] को तुम ख़ाली न समझो, ऐ 'ज़फ़र'
इसमें सर-ता-पा[13] बुलन्दी और पस्ती है भरी

---

*1. मदिरापान की इच्छा, 2. दैवी प्रकाश, 3 प्रत्यक्ष में, 4. सांसारिक सौन्दर्य का पुजारी, 5. ईश्वर-भक्ति, 6. लाभ, 7. सौदा, 8. क्षण, 9. घमंडी, 10. बुलबुला, 11. जीवन के प्रति गर्व, 12. गुम्बद के समान आकाश, 13. सिर से पांव तक।*



# उसकी आदत का

उसकी आदत का और है नक़्शा
उसकी क़ुदरत का और है नक़्शा

शामे-गुरबत[1] का और है नक़्शा
सुबहे-इशरत[2] का और है नक़्शा

अब नक़ाहत[3] का और है नक़्शा
अपनी ताक़त का और है नक़्शा

मेरी सोहबत खुश-आए[4] क्योंकि उन्हें
उनकी सोहबत का और है नक़्शा

जले तदबीर से, तपे ग़म, क्या
इस हरारत[5] का और है नक़्शा

है क़यामत से उसको क्या निस्बत[6]
तेरी क़ामत[7] का और है नक़्शा

जाने क्या बुलहवस[8] हक़ीक़ते-इश्क़[9]
इस हक़ीक़त का और है नक़्शा

जब से देखा है तुझको आईना-रू
अपनी हैरत का और है नक़्शा

---

*1. दुःखभरी शाम, 2. आनन्दकारी प्रातः, 3. नख़रे, 4. अच्छा लगना, 5. गरमी, 6. सम्बन्ध, 7. क़द, ऊंचाई, 8. विलासी, भोगप्रिय, 9. प्रेम की वास्तविकता।*



# यूं तो अपनी ज़ोशे-वहशत

यूं तो अपनी ज़ोशे-वहशत[1] की ख़बर उड़ती नहीं
धज्जियां होकर क़बा[2] ता सर-ब-सर[3] उड़ती नहीं

हाथ से उस शोख़ के उड़ जाए है रंगे-हिना[4]
पर हमारी सुर्ख़ी-ए-ख़ूने-ज़िगर[5] उड़ती नहीं

दामे-हैरत शब उड़ावे है, हवस परवाज़[6] की
बुलबुले-तस्वीर पर रक्खे है पर, उड़ती नहीं

कारवाने-उम्र[7] जाता है किधर, पाएं कहां
गर्द भी उसकी सरे-राहे-सफ़र[8] उड़ती नहीं

और जितने रंग हैं, दो दिन में उड़ जाते हैं आप
पर रूख़े-आशिक़[9] की ज़र्दी[10] उम्र-भर उड़ती नहीं

वो गरांबारे-मुहब्बत हूं कि मेरी ख़ाक भी
कूचा-ए-ज़ाना[11] से, ऐ बादे-सहर[12], उड़ती नहीं

उनको दुनिया की नहीं ख़्वाहिश नज़र है जिनकी दूर
शहद पर बन्दूक की मक्खी, 'ज़फ़र', उड़ती नहीं

---

*1. उन्माद में वृद्धि, 2. परिधान, 3. तेज़-तेज़, 4. मेहंदी का रंग, 5. ज़िगर के रक्त की लाली, 6. उड़ान, 7. उम्र का ज़ुलूस, 8. सफ़र का रास्ता, 9. प्रिय का चेहरा, 10. पीलापन, 11. प्रिय की गली, 12. सुबह की हवा।*



# न उस रूख़ पे

न उस रूख़[1] पे ज़ुल्फ़े-परीशान[2] समझो
शबो-रोज़[3] दस्तो-ग़रेबान[4] समझो

न समझो उसे जान, ऐ हज़रते-दिल
अगर है समझ, दुश्मने जान समझो

यही है जो तुग़यानी[5] अश्क़ों की अपने
तो फिर आज आया है तूफ़ान समझो

नहीं हक़परस्ती[6] से कम बुतपरस्ती[7]
अगर इश्क़ को दीनो-ईमान[8] समझो

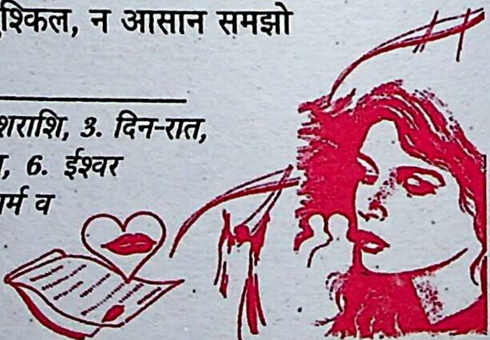
समझते हो यूं बात कब तुम हमारी
अगर कुछ सुनो, खोलकर कान समझो

किसे लाओ ख़ातिर[9] में तुम तो परी हो
जो इन्सान हो, क़द्रे-इन्सान[10] समझो

करो इश्क़बाज़ी 'ज़फ़र', तुम समझकर
ये है काम मुश्किल, न आसान समझो

---

*1. मुख, 2. अस्त-व्यस्त केशराशि, 3. दिन-रात, 4. हाथ व कपड़ा, 5. अधिकता, 6. ईश्वर की उपासना, 7. मूर्ति-पूजा, 8. धर्म व विश्वास, 9. मन, 10. आदमी का मूल्य।*



# आगे पहुंचाते दहां तक

आगे पहुंचाते दहां[1] तक ख़तो-पैग़ाम को दोस्त
अब तो दुनिया में रहा कोई नहीं नाम को दोस्त

दोस्त इक़रंग[2] कहां, जबकि ज़माना हो दो रंग
कि वही सुबह को दुश्मन है, जो शाम को दोस्त

मेरे नज़दीक है वल्लाह[3], वो दुश्मन अपना
जानता जो कि है, इस काफ़िरे-खुदक़ाम[4] को दोस्त

दोस्ती तुझसे जो ऐ दुश्मने-आराम हुई
न मैं राहत को समझता हूं, न आराम को दोस्त

चाहता वो है बशर[5] जिससे बढ़े इज़्ज़तो-क़द्र[6]
पहले मौक़ूफ़[7] कर तू अपनी तमा-ख़ाम[8] को दोस्त

ऐ ज़फ़र, दोस्त हैं, आग़ाज़े-मुलाक़ात[9] में सब
दोस्त पर वो ही है जो शख़्स हो, अंज़ाम[10] को दोस्त



---

*1. मुंह, 2. एक-जैसे, 3. हे ईश्वर, 4. स्वार्थी, 5. आदमी, 6. प्रतिष्ठा, 7. समाप्त, 8. झूठा लालच, 9. भेंट का आरंभ, 10. अन्त।*

# सब तरहदारों को देखा

सब तरहदारों[1] को देखा हमनशीं[2], अच्छी तरह
उस परी-रू[3] से किसी को भी नहीं, अच्छी तरह

सर्द-मेहरी[4] किस तरह शेवा[5] हो उस बेमहर[6] का
हो अगर तासीर[7] आहे-आतिशी[8] अच्छी तरह

छीनकर तो ले चले हो गौहरे-दिल[9] को मेरे
पर न खो देना इसे, रखना कहीं अच्छी तरह

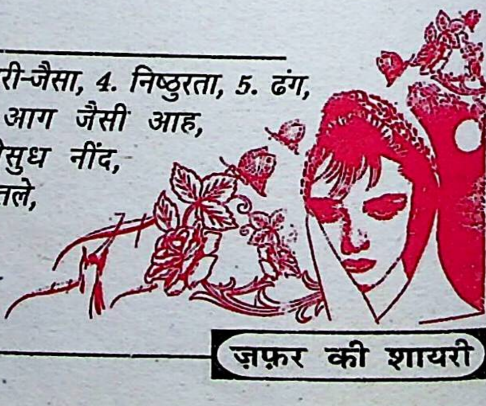
बह गए दरिया, अभी हमने निचोड़ी भी नहीं
पोंछकर आँखों के आँसू, आस्तीं अच्छी तरह

ख़्वाबे-ग़फ़लत[10] में कोई दम जाग तो ज़ेरे-फ़लक[11]
जा के सोना ग़ाफ़िलो! ज़ेरे-ज़मीं[12] अच्छी तरह

तू अगर ग़म में मुहब्बत के न होता मुब्तिला[13]
क्या गुज़रती ऐ दिले-अन्दोहगी[14], अच्छी तरह

---

*1. प्रेमी, 2. मित्रवर, 3. परी-जैसा, 4. निष्ठुरता, 5. ढंग, 6. निष्ठुर, 7. प्रभाव, 8. आग जैसी आह, 9. हृदयरूपी मोती, 10. बेसुध नींद, 11. आकाश तले, 12. ज़मीन तले, कब्र में, 13. व्यस्त, 14. उदासीन हृदय।*



# जब था साक़ी यार

जब था साक़ी यार हमारा, हम थे और मयख़ाना था
जब वह दिन कहां कैफ़ियत[1] के, वो भी एक ज़माना था

दश्त[2] में जो था ख़ार[3], ज़ुबां पर उसका मेरा अफ़साना था
मुझसे मुक़ाबिल होता मजनूं, ऐसा क्या दीवाना था

जब से बसा तू दिल में आकर, हुई है सूरत[4] आबादी
रहता था कौन आ के इसमें, ये तो इक वीराना था

पूछते हो क्या मुझसे अज़ीज़ो[5], हाल ग़मे-तन्हाई का
मैं था और ग़मख़ाना था, ग़मख़्वार ग़मे-जानाना[6] था

कोई मिला गर इश्क़ का क़तरा, इश्क़ में तेरे शुक्र किया
जाना अपनी क़िस्मत में हां, ये ही आबो-दाना था

हुस्नो-ज़माले-यार 'ज़फ़र' जब रात को बज्म-अफ़रोज़[7] हुआ
शम्अ रूख़े-पुरनूर[8] पे उसके, माह[9] भी इक परवाना था



*1. मस्ती, 2. जंगल, 3. कांटा, 4. दशा, स्थिति, 5. मित्रों, 6. प्रिय का दुःख, 7. सभा में आना, 8. दमकता हुआ चेहरा, 9. चाँद।*

# हम तो चलते हैं

हम तो चलते हैं, लो ख़ुदा-हाफ़िज़[1]
बुतक़दे[2] का बुतो, ख़ुदा-हाफ़िज़

कर चुके तुम नसीहतें हम को
जाओ, बस नासेहो[3], ख़ुदा-हाफ़िज़

आज कुछ और तरह, पर उनकी
सुनते हैं गुफ़्तगो[4] ख़ुदा-हाफ़िज़

गर यही है हमेशा ज़ख़्म-पे-ज़ख़्म
दिल का चारागरो[5] ख़ुदा-हाफ़िज़

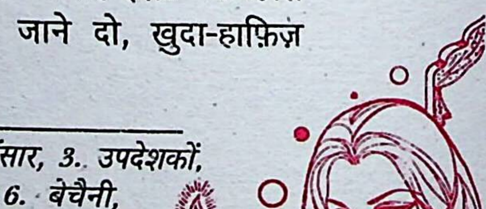
आज है कुछ ज़ियादा बेताबी[6]
दिल-ए-बेताब को ख़ुदा-हाफ़िज़

क्यों हिफ़ाज़त[7] हम और की ढूंढें
हर नफ़स[8] जब कि हो, ख़ुदा-हाफ़िज़

चाहे रुख़सत[9] जो राहे-इश्क़[10] में अक़्ल
ऐ 'ज़फ़र', जाने दो, ख़ुदा-हाफ़िज़

---

*1. ईश्वर रक्षा करे, 2. संसार, 3. उपदेशकों, 4. बातचीत, 5. उपचारकों, 6. बेचैनी, 7. रक्षा, 8. साँस, 9. विदाई, 10. प्रेम का मार्ग।*



# अबरू की तेरे बात

अबरू[1] की तेरे बात ज़रा चल के थम गई
तलवार आज होशरुबा[2], चल के थम गई

बहरे-ज़हां[3] में कुछ न चली क़श्ती-ए-हुबाब[4]
थोड़ी-सी दूर यह तो दिला[5], चल के थम गई

तू क्या चलेगी ख़ाक कि आंधी थी मेरे साथ
दश्ते-ज़ुनूं[6] में बादे-सबा[7] चल के थम गई

है कुछ सबब कि अब तलक आई नहीं अज़ल[8]
या तो अभी चली नहीं, या चल के थम गई

तन से निकल चली थी मेरी जाने-नातवां[9]
पर वो असाये[10] आहे-रसा[11], चल के थम गई

उड़कर पहुंचती कूचे[12] में उसके, हमारी ख़ाक
पर क्या करें 'ज़फ़र' कि हवा चल के थम गई

---

*1. भौंहें, 2. सुध-बुध खोने वाली प्रेमिका, 3. संसाररूपी सागर, 4. बुलबुलों की नाव, 5. ऐ दिल, 6. उन्माद का जंगल, 7. सुबह की हवा, 8. मृत्यु, 9. शिथिल प्राण, शक्तिहीन, 10. बिना डण्डे के, 11. प्रभावशाली आह, 12. गली।*



# है यां की शेख़

है यां की शेख़ क़श्फ़ो-करामत[1] यहीं तलक
शोख़ी यहीं तलक है, मशीख़त[2] यहीं तलक

जाकर अदम[3] में लिखता नहीं, कोई अपना हाल
है यां की रस्मे-ख़त-ओ-क़िताबत[4] यहीं तलक

पहुंचा के ग़ोर[5] तक मुझे, फिर जाएंगे रफ़ीक़[6]
ऐ बेख़बर! है इनकी रफ़ाक़त[7] यहीं तलक

लेकर गया न यां से कोई, मुल्क और माल
रहती है यां की दौलतो-हशमत[8] यहीं तलक

तू आ कि यां से फिर नहीं रहने का हुक्मरां[9]
है चन्द रोज़ तेरी हुकुमत यहीं तलक

जाएगा तेरा नाम भी कोई न, ज़ेरे-ख़ाक[10]
है तेरे वास्ते तेरी शोहरत[11] यहीं तलक

तू उनकी दोस्ती पे न कर नाज़[12], ऐ 'ज़फ़र'
है यां की दोस्तदारे मुहब्बत यहीं तलक

---

*1. बुज़ुर्गी का प्रकट होना, 2. शेख़ी, 3. परलोक, 4. पत्र-व्यवहार, 5. समाधि, क़ब्र, 6. मित्र, 7. मित्रता, 8. शान-शौक़त, 9. शासक, 10. मिट्टी के नीचे, 11. प्रसिद्धि, 12. घमंड, गर्व।*



# क्योंकि हम दुनिया में

क्योंकि हम दुनिया में आए, कुछ सबब[1] खुलता नहीं
इक सबब क्या, भेद वां का, सब-का-सब खुलता नहीं

पूछता है हाल भी गर वह, तो मारे शर्म के
ग़ुंचा-ए-तस्वीर[2] के मानिंदे-लब[3] खुलता नहीं

शाहिदे-मक़सूद[4] तक पहुंचेंगे क्योंकर, देखिए
बन्द है बाबे-तमन्ना[5], है ग़ज़ब खुलता नहीं

दिल है यह ग़ुंचा नहीं है, इसका अक्दा[6] ऐ सबा
खोलने का जब तलक आवे न ढब, खुलता नहीं

इश्क़ ने जिनको किया ख़ातिर-गिरिफ्ता[7] उनका दिल
लाख होवे गरचे सामाने-तरब[8], खुलता नहीं

किस तरह मालूम होये, उसके दिल का मुद्दआ[9]
मुझसे बातों में 'ज़फ़र', वो ग़ुंचा-लब[10] खुलता नहीं



*1. कारण, 2. तस्वीर की कली, 3. होंठों की तरह, 4. अभिप्राय, 5. इच्छाओं का द्वार, 6. गाँठ, 7. दुःखी, 8. सुख-सामग्री, 9. अभिप्राय, 10. कली जैसे होंठ वाला।*

# सोहबत तुम्हें जो ग़ैर से

सोहबत तुम्हें जो ग़ैर से, लैलो-निहार[1] ही
पर मुझसे क्योंकर आपकी सोहबत[2] बरार[3] हो

वह एक दोस्त चाहे तो परवाह नहीं अगर
दुश्मन हमारा, एक से ले, ता हज़ार हो

सीने में दाग़े-इश्क़ को रहने दे चारासाज़[4]
शायद ये बादे-मर्ग[5] चराग़े-मज़ार[6] हो

दिल है वही पसन्द जो तुझ पे फ़िदा[7] रहे
जां है वही अज़ीज़[8] जो तुझ पर निसार[9] हो

क्या हाल उसका हो, कि तेरे जिस मरीज़ का
आँखों में दम हो और तेरा इन्तज़ार हो

अख़्तर-शुमारियों[10] में ही तुझ बिन बसर[11] करूं
हरचन्द[12] रात हिज्र की रोज़े-शुमार[13] हो

हूं ख़ाके-राह[14] उसका, पर ऐसा न हो 'ज़फ़र'
मेरा गुबार ख़ातिरे-नाज़ुक[15] पे बार[16] हो

---

*1. दिन-रात, 2. मित्रता, साथ, 3. सम्पूर्ण, 4. चिकित्सक, 5. मरणोपरान्त, 6. क़ब्र का दीपक, 7. न्योछावर, 8. प्रिय, प्यारा, 9. न्योछावर, 10. तारे गिनना, 11. गुज़ारा, 12. चाहे जितना, 13. प्रलय का दिन, 14. रास्ते की धूल, 15. कोमल मन, 16. बोझ।*



# दिखाई दी हमें

दिखाई दी हमें कैफ़ियते-कौनेन[1] हस्ती में
नज़र आया ख़ुदाई[2] का तमाशा बुतपरस्ती[3] में

न कुछ बादे-ख़िज़ां[4] से काम, न बादे-बहारां[5] से
कि मैं शक्ले-गुले-तस्वीर[6] हूं, इस बाग़े-हस्ती[7] में

बता तो ऐ परीवश[8]! तेरा दीवाना कहां जाए
न वीराने में दिल लगता है उसका, और न बस्ती में

न कर तू सरक़शी[9] ग़ाफ़िल, बरंगे-आबे-फ़व्वारा[10]
कि लाएगी तेरी यह सर-बुलन्दी[11] तुझको पस्ती[12] में

ख़ुदा ने वुसअते-दामाने-हिम्मत[13] की अता जिसको
नहीं होने का हरगिज़ तंगदिल, वो तंगदस्ती में

करे सूफ़ी[14] भी क्या-क्या ऐ 'ज़फ़र' फिर रक्से-मस्ताना[15]
दिखाए गर्दिश-चश्म[16] अपनी गर वह ऐन-मस्ती[17] में

---

*1. माया का नशा, 2. ईश्वर, 3. मूर्ति-पूजा, 4. पतझड़ की हवा, 5. बसंत की हवा, 6. पुष्प के चित्र की भांति, 7. संसार, 8. सुन्दरी, 9. अत्याचार, 10. फ़व्वारे के पानी की तरह, 11. घमंड, 12. अवनति, 13. ग़रीबी, 14. दार्शनिक, 15. पागलों की भांति नाचना, 16. आँख का चक्कर, 17. विशेष आनंद।*



# कभी जो ख़्वाब में

कभी जो ख़्वाब में वो शोख़-पुर-अताब[1] आया
तो फिर न ख़ौफ़[2] से आँखों में मेरे ख़्वाब आया

क़फ़स[3] में मुझको न चैन आया, पर फ़ुग़ां[4] से मेरी
तमात रात न सय्याद को भी ख़्वाब आया

हज़ार नख़्ल[5] ख़िज़ां-दीदा[6] पर बहार आई
न अपना ग़ैब[7] से फिर आलमे-शबाब[8] आया

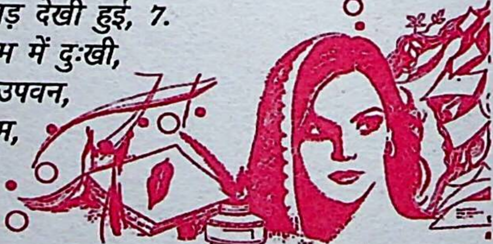
मैं वो हूं ग़मज़दा-ए-इश्क़[9], ख़ाक में जिसकी
जब आया, दूर से रोता हुआ सहाब[10] आया

कहे है देख्व के परवाना, शम्अ का शोला[11]
क़यामत आई कि नेज़ा पे आफ़ताब आया

झुकी हुई है गुलिस्तां[12] में आँख नरगिस[13] की
'ज़फ़र', वो कौन है जिससे उसे हिज़ाब[14] आया

---

*1. क्रोधी व चंचल प्रेमिका, 2. भय, 3. क़ैद, 4. रोना, 5. पेड़-पौधे, 6. पतझड़ देखी हुई, 7. अदृश्य लोक, 8. जवानी, 9. प्रेम में दुःखी, 10. बादल, 11. लपट, 12. उपवन, बाग़ीचा, 13. एक फूल का नाम, 14. शर्म, लज्ज़ा।*



# ग़म्ज़ा वो बर-सरे-बेदाद

ग़म्ज़ा[1] वो बर-सरे-बेदाद[2] आया
मज़दा[3]-ए-मर्ग[4] कि ज़ल्लाद आया

याद आया जो मुझे तंग-दहन[5]
तंग क्या-क्या, दिले-नाशाद[6] आया

इश्क़ में तेशा-ए-आख़िर[7] के सिवा
कुछ तेरे काम न फ़रहाद आया

बुलबुलो, देखो चमन में इतना
न करो शोर कि सय्याद आया

जो लिखा था मेरी पेशानी[8] पे
सो वो पेश[9]-ए-दिले-नाशाद आया

न तू आया सुनकर मेरी फ़रियाद
दम लबों पर, दमे-फ़रियाद[10] आया

देखकर उसे बुते-काफ़िर[11] के सितम
ऐ 'ज़फ़र', मुझको ख़ुदा याद आया



*1. नख़रे, 2. निष्ठुर, 3. ख़ुशख़बरी, 4. मृत्यु, 5. छोटा मुंह, 6. दुःखी हृदय, 7. अन्तिम कुल्हाड़ी, 8. माथा, ललाट, 9. सामने, 10. प्रार्थना करते समय, 11. निष्ठुर प्रिय।*

# वो तीर और है

वो तीर और है जिस तीर का फ़िगार[1] हूं मैं
वो दाम[2] और है जिस दाम का शिकार हूं मैं

निशान तेरे कफ़े-पा[3] का देखता हूं जहां
तवाफ़[4] आँखों से करता हज़ार बार हूं मैं

वो कारवां कि जो मंज़िल पे अपनी जा पहुंचा
उसी के पीछे रवां[5] सूरते-ग़ुबार[6] हूं मैं

न मैं हूं तायर-ए-बिस्मिल[7], न माही-ए-बेआब[8]
इलाही क्या है जो बेताबो-बेक़रार[9] हूं मैं

समझते इश्क़ में बेहोशी-बेख़बर हैं मुझे
ख़बर नहीं कि ख़बरदारो-होशियार हूं मैं

'ज़फ़र', हो क्यों न वो बेहोशो-बेख़बर हैं मुझे
ख़बर नहीं कि ख़बरदारो-होशियार हूं मैं

'ज़फ़र' हो क्यों न वो नाज़ुक-मिज़ाज[10] दामनकश[11]
कि ख़ाक-ए-राहे-मुहब्बत हूं, ख़ाकसार हूं मैं

*1. घायल, 2. जाल, 3. पदचिह्न, 4. चक्कर लगाना, 5. दौड़ता हुआ, 6. धूल की भांति, 7. घायल परिन्दा, 8. बिना जल की मछली, 9. बेचैन, 10. कोमल स्वभाव वाला, 11. निष्ठुर।*



# गए, यारब वो लोग

गए, यारब[1] वो लोग अगले, कहां पाए नहीं जाते
जो ढूंढें तो कहीं उनके निशां पाए नहीं जाते

अजब सनाअत[2] दिखाई अपनी, ये नक्क़ाश क़ुदरत[3] ने
कि नक़्शे ऐ से सबके यहां पाए नहीं जाते

गुरूरे-हुस्न[4] से यह महवशों[5] के देदिमाग़ी हैं
दिमाग़ अब उनके ज़ेरे-आसमां[6] पाए नहीं जाते

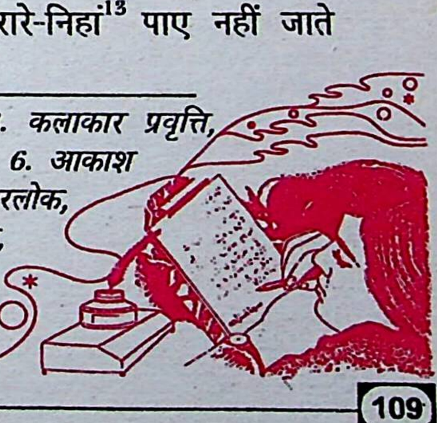
मेरी ज़ानिब[7] से हैं जैसे गुमां[8] इन बदगुमानों को
ज़माने में कहीं ऐसे गुमां पाए नहीं जाते

अदम[9] की राह में क्योंकर, किसी की खोज हाथ आए
कि वां तो नक्शां-पा-ए-रफ़्तगां[10] पाए नहीं जाते

किसी को हम नहीं इस वास्ते देते हैं दिल अपना
कि जो आगे थे, वो अब दिलसितां पाए नहीं जाते

सबब[11] क्या ना-कमर है, ना-दहां इन ख़ूबरूओं[12] की
'ज़फ़र', यह हमसे इसरारे-निहां[13] पाए नहीं जाते

*1. हे ईश्वर, 2. कारीगरी, 3. कलाकार प्रवृत्ति, 4. सौन्दर्य का गर्व, 5. सुन्दर लोग, 6. आकाश तले, 7. तरफ़, ओर 8. सन्देह, 9. परलोक, 10. जाने वालों के पदचिह्न, 11. कारण, वज़ह, 12. सुन्दर लोग, 13. गूढ़ रहस्य।*



# उस बुत की अदावत से

उस बुत की अदावत[1] से, दिला[2] कुछ नहीं होता
जब तक कि न हो हुक्मे-खुदा, कुछ नहीं होता

कहने से बुरा मेरे, बुरा कुछ नहीं होता
जो कहते हैं, उनका भी भला कुछ नहीं होता

ऐ दिल! हज़र[3] इस इश्क़ से बेहतर है कि इसमें
हासिल[4] ग़मो-हसरत के सिवा कुछ नहीं होता

गो आए, इरादा पे मेरे क़त्ल के क़ातिल
आती नहीं जब तक कि क़ज़ा[5] कुछ नहीं होता

करता हूं मैं लाख आहो-फ़ुग़ां, पर असर उसको
क्या जाने कि होता भी है या कुद नहीं होता

जो शग्ल[6] में आईने के, मशगूल[7] हो सूफ़ी[8]
पर दिल न हो जब तक कि सफ़ा, कुछ नहीं होता

ज़ुल्मो-सितम व ज़ोरो-'ज़फ़र', हाथ से उसके
उश्शाक़-वफ़ा-पेशा[9] पे क्या कुछ नहीं होता

---

*1. शत्रुता, दुश्मनी, 2. ऐ दिल, 3. परहेज़, 4. प्राप्त, 5. मौत, 6. काम, 7. व्यस्त, 8. दार्शनिक, 9. सच्चे प्रेमी।*



# करूं मैं ग़िरिया

करूं मैं ग़िरिया[1] अगर अपनी नातवानी[2] पर
फ़लक[3] ज़मीं पे हो यूं, जूं हुबाब[4] पानी पर

असर न चाह का जब तक हो तुर्फ़ा-सानी[5] पर
तो वह निगाह करे किसकी जां-फ़िशानी[6] पर

वफ़ा के बदले जफ़ा तुम करो, सितम है यह
सद-आफ़री है तुम्हारी भी क़द्रदानी पर

ग़नीमत[7] आह समझ वस्ल[8] तू गुलो-बुलबुल
न फूल बाग़ में दो दिन की ज़िन्दगानी पर

ख़त आए, पर न रहेगी ये आरज़ी[9] दौलत
गुरूरे-हुस्न न कर आलमे-जवानी पर

खुली है चश्मे-हक़ीक़त[10] जिन्हों की, मिस्ले-हुबाब[11]
वो बांधते नहीं तक़िया[12] ज़हाने-फ़ानी[13] पर

'ज़फ़र', हम अपने ही क़िस्से में हैंगे आलूदा[14]
ख़्याल किसका भला रक्खें, अब कहानी पर



---

*1. आँसू, 2. कमज़ोरी, 3. आकाश, 4. बुलबुला, 5. दोनों ओर, 6. मेहनत, 7. बहुत, काफ़ी, 8. मिलन, 9. अस्थायी, 10. वास्तविक आँख, 11. बुलबुले की तरफ़, 12. भरोसा, 13. नश्वर संसार, 14. लिप्त।*

# जो देखा ऐन-ज़ोशे-ग़म

जो देखा ऐन-ज़ोशे-ग़म[1] में मेरे अश्क़ पीने को
तो पीटा ख़ूब, दस्ते-मौज़[2] से, दरिया ने सीने को

गुले-खुर्शीद[3] पर इक ओस-सी पड़ जाए गुलशन में
तेरे रूख़सार[4] पर गर इक नज़र देखे पसीने को

फ़क़त नामो-निशां की आरज़ू काविश[5] में लाई है
वगरना सीना-क़ावी[6] से ग़रज़ क्या थी नग़ीने को

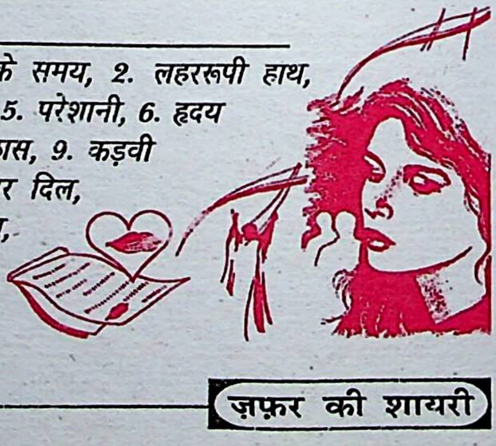
लबे-शोरीं[7] से है तेरी हलावत[8] ज़िन्दगानी की
कलामे-तल्ख़[9] लेकिन तल्ख़[10] कर देती है जीने को

लगाता हूं जो दिल इस संगदिल[11] से, दिल ये कहता है
कि पत्थर से भिड़ाता क्यों है ज़ालिम, आबगीने[12] को

नहीं महफ़िल में मुझको जाय[13], पर ये भी ग़नीमत[14] है
कि अपने दिल में तो उसने जगह दी मेरे कीने[15] को

---

*1. दुःख की अधिकता के समय, 2. लहररूपी हाथ, 3. एक फूल का नाम, 4. गाल, 5. परेशानी, 6. हृदय की पीड़ा, 7. मीठे होंठ, 8. मिठास, 9. कड़वी बात, 10. कड़वाहट, 11. पत्थर दिल, 12. नगीना, 13. स्थान, 14. बहुत, 15. शत्रुता।*



# हमें बिठला के तुम

हमें बिठला के तुम उठ जाते क्यों हो
भले होकर, बुरे कहलाते क्यों हो

नहीं हस्ती[1] मक़ामे-ख़्वाबे-राहत[2]
तो इतने पांव तुम फैलाते क्यों हो

बरंगे-गुल[3] हँसाते गर नहीं तुम
तो शबनम[4] की तरह रुलाते क्यों हो

न डालो नाज़ के कुश्ता[5] पे आँसू
शहीदों को भला बहलाते क्यों हो

बहुत तड़पाएगा सय्याद[6] तुमको
असीराने-क़फ़स[7]! घबराते क्यों हो

पराये सर[8] को हैं क़ुरआन कहते
हमारे सर को तुम ठुकराते क्यों हो

नहीं पहचानते चाहत की गर आँख
'ज़फ़र' को देखकर शरमाते क्यों हो



*1. जीवन, 2. आराम से सोने की जगह, 3. फूल की तरह, 4. ओस, 5. नख़रों का मारा, 6. शिकारी, 7. बन्दी, 8. दूसरे का सर।*

# लोग तो हैं

लोग तो हैं उसे सनम[1] कहते
बाखुदा[2] और कुछ हैं, हम कहते

हो ज़ियादा कहीं न वो बरहम[3]
उससे हम हाले-दिल भी कम कहते

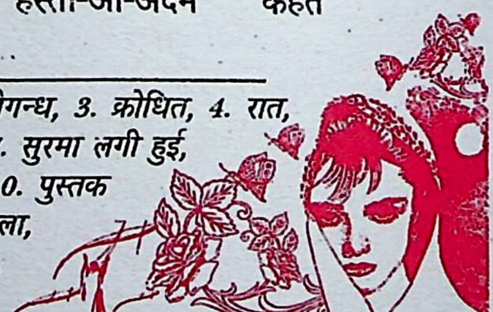
शम्अ-सी अपनी शब[4] गुज़रती है
क़िस्सा-ए-सोज़ो-दर्दो-ग़म[5] कहते

लब को कहते हैं मय, तो चश्म को हम
ज़ामे-ज़हराब[6] ऐ सनम कहते

सुरमा-आलूद[7] तेरी मिज़गां[8] को
हम तो हैं ख़ंजरे-दोदम[9] कहते

सफ़हा-ए-चर्ख़[10] जब सियाह[11] किया
क्यों न हम आह को क़लम कहते

ऐ 'ज़फ़र', दम[12] की है जो आमदो-शुद[13]
हैं इसे हस्ती-ओ-अदम[14] कहते



*1. प्रिय. 2. ईश्वर की सौगन्ध, 3. क्रोधित, 4. रात, 5. व्यथा-कथा, 6. विष पात्र, 7. सुरमा लगी हुई, 8. पलकें , 9. दुधारी कटार, 10. पुस्तक के पृष्ठ जैसा आसमान, 11. काला, 12. साँस, 13. आना-जाना, 14. जीवन-मृत्यु।*

# मेरी आँख बंद थी

मेरी आँख बंद थी जब तलक, वो नज़र में नूरे-ज़माल[1] था
खुली आँख तो न ख़बर रही कि ये ख़्वाब था कि ख़्याल था

ये कहो कि तस्वीरे-यार को, कहूं क्यों न ख़िज्रे-ख़िजे-ख़िज़स्ता पै[2]
कि यहीं तो दश्ते-फ़िराक़[3] में मुझे रहनुमा-ए-विसाल[4] था

मेरे दिल में था कि कहूंगा मैं, जो ये दिल पे रंज़ो-मलाल[5] है
वो जो आ गया मेरे सामने तो न रंज़ था, न मलाल था

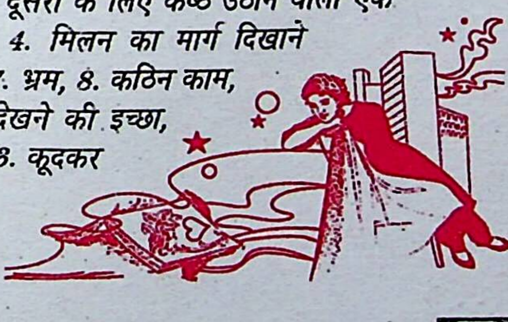
वो है बेवफ़ा, वो है पुरजफ़ा[6], वहां लुत्फ़ कैसा, वफ़ा कहां
फ़क़त अपना वहमो[7]-ख़्याल था, ये ख़्याल गर जो मुहाल[8] था

पसे-परदा[9] सुन के तेरी सदा, मेरा शौक़े-दीद[10] जो बढ़ गया
मुझे इज्तिराबे-क़माल[11] था, यही वज़्द[12] था, यही हाल था

'ज़फ़र' उससे छूट के जो ज़ुस्त[13] की तो ये जाना हमने कि वाक़ई
फ़क़त एक क़ैदे-खुशी की थी, न क़फ़स था कोई, न ज़ाल था

---

*1. सौन्दर्य की चमक, 2. दूसरों के लिए कष्ठ उठाने वाला एक देवता, 3. बिछोह का जंगल, 4. मिलन का मार्ग दिखाने वाला, 5. दुःख, 6. कष्टदायी, 7. भ्रम, 8. कठिन काम, दुःख, 9. परदे के पीछे, 10. देखने की इच्छा, 11. बहुत बेचैनी, 12. मस्ती, 13. कूदकर भागना।*



# बहरे-ग़म में दस्त-ओ-पा

बहरे-ग़म[1] में दस्त-ओ-पा[2], इक उम्र मारे जाएंगे
इस किनारे से कहीं जब, उस किनारे जाएंगे

कुछ इशारा है उधर का, जो किया है हमने क़स्द[3]
हम नहीं हैं वह कि, उनके बे-इशारे जाएंगे

तू जलाता है हमें, पर देखना ऐ महरवश[4]
आसमां तक अपनी आहों के शरारे[5] जाएंगे

आशनाई गर जताएंगे तुझे, ऐ बहरे-हुस्न[6]
एक दिन हम पार दरिया के उतारे जाएंगे

कोई हसरत ऐ फ़लक, अपनी निकलने की नहीं
साथ ही ज़ेरे-ज़मीं[7], अरमान सारे जाएंगे

कल तो कहते थे, 'ज़फ़र' के घर नहीं जाएंगे फिर
आज हैं कुछ मेहरबां, कहते हैं, बारे[8] जाएंगे



---

*1. दुःखों का समुद्र, 2. हाथ-पांव, 3. इरादा, 4. रूपसी, 5. चिनगारियां, 6. सौन्दर्य का सागर, 7. ज़मीन तले, क़ब्र में, 8. ज़रूर।*

# साक़ी ने भरे मय से

साक़ी ने भरे मय से मयख़ाने के पैमाने[1]
मस्तों ने किए ख़ाली, पैमाने के पैमाने

जो दीदा-ए-आहू[2] हैं, लबरेज़[3] मये-वहशत[4]
हैं वास्ते वो तेरे दीवाने के पैमाने

सय्याद, ख़ुदा से डर, क्यों करता है कम इनको
मुर्ग़ानि-क़फ़स[5] के हैं जो, दाने के पैमाने

क्यों फोड़ता है ऐ दिल, तू आबलों[6] को अपने
फिर ऐसे नहीं है, हाथ आने के पैमाने

इक घूंट नहीं लेते पैमाने से वो मेरे
और हाथ से हैं पीते, बेगाने के पैमाने

दिल मेरा अगर कासा-ए-ग़म[7] खाने को है मेरे
तो आँख भी हैं आँसू पी जाने के पैमाने

है शम्अ 'ज़फ़र' प्यासी आशिक़ के लहू की, पर
भर सकते नहीं ख़ूं से, परवाने के पैमाने



1. मदिरा-पात्र, 2. हिरण की आँख,
3. भरे हुए, 4. उन्माद की मदिरा,
5. बन्दीगृह के पंछी, 6. फफोले,
7. दुःख का पात्र।

# क्या ख़िरद-बदख़्वाह

क्या ख़िरद[1]-बदख़्वाह[2], क्या तदबीर दुश्मन बन गई
मेरे हक़ में तो मेरी तक़दीर दुश्मन बन गई

पुर्ज़े-पुर्ज़े होते क्यों उसके, जो ले जाता ये ख़त
मेरे क़ासिद[3] की मेरी तहरीर[4] दुश्मन बन गई

ज़ुल्फ़े-मुश्क़ीं[5] बांधती है दिल की मुश्कें[6] किसलिए
क्या ख़ता, क्या जुर्म बे-तक़सीर[7] दुश्मन बन गई

मैं अगर यह जानता, तुझसे न करता दोस्ती
ख़ल्क़[8] मेरी, ऐ बुते-बेपीर[9], दुश्मन बन गई

गर न कहता हाल अपना, क्यों वो होता ख़श्मनाक़[10]
मेरी ऐ यारो, मेरी तक़दीर दुश्मन बन गई

ऐ 'ज़फ़र'! इस वक्त में इज्ज़त है ज़िल्लत[11] का सबब[12]
साहिबे-तौक़ीर[13] की तौक़ीर[14] दुश्मन बन गई

---

*1. बुद्धि, विवेक, 2. बुरा चाहने वाले, 3. संदेशवाहक, 4. लिखावट, 5. सुगन्धित बाल, 6. गठरी, 7. बिना क़ुसूर, 8. प्रजा, 9. निष्ठुर प्रियतम, 10. क्रुद्ध, 11. अपमान, 12. कारण, वजह, 13. मान करने वाला, 14. प्रतिष्ठा।*



# घुटा इतना मेरा दिल

घुटा इतना मेरा दिल कि धुआं है
कि नीचे आसमां के आसमां है

ये हस्ती[1] कब सक़ूनत[2] का मकां है
यहां रहना तेरा वहमो-गुमां[3] है

नज़र आता है पहलू मुझको ख़ाली
दिले-गुमग़श्ता[4] न जाने कहां है

ज़मीं उस दश्त[5] की तपती है क्या-क्या
जहां आसूदा[6] तेरा तुफ़्ता-जां[7] है

मेरे नालों से है शब का ज़िगर चाक[8]
फ़लक[9] पर ये जो ख़त-ए-कहक़शां[10] है

'ज़फ़र', इसमें समझकर पांव रखना
मुहब्बत एक बहरो-बेक़रां[11] है

*1. जीवन, 2. सुख-शान्ति से युक्त, 3. भ्रम, 4. खोया हुआ दिल, 5. जंगल, 6. सोया हुआ, 7. दिलज़ला, 8. फटा हुआ हृदय, 9. आकाश, 10. सितारों का समूह, 11. अथाह समुद्र।*



# वह अभी हम पर

वह अभी हम पर जफ़ा करता है क्या
आगे-आगे देखना, करता है क्या

यह मरीज़े-इश्क़ जांबर[1] हो चुका
ऐ तबीब[2]! इसकी दवा करता है क्या

दिल हज़ारों रोज़ ले जाता है तू
यह बता, ऐ दिलरुबा[3]! करता है क्या

है लबे-ज़ख़्मे-जिगर[4], ज़ुम्बिश[5] में क्यों
तेग़े-क़ातिल[6] को दुआ करता है क्या

तुझ पे करता है जो कोई जां-फिदा
तू है मुन्सिफ़[7], तो बुरा करता है क्या

दिल मेरा सुनता है, किसके इश्क़ में
तू नसीहत, नासेहा[8], करता है क्या

अब तो दिल उस बुत को हमने दे दिया
ऐ 'ज़फ़र', देखें, ख़ुदा करता है क्या

---

*1. मृतक, 2. चिकित्सक, 3. प्रियतम, 4. ज़िगर के घाव का मुंह, 5. कम्पन, 6. हत्यारे की कटार, 7. इन्साफ़ करने वाला, 8. उपदेशक।*



# ख़्याल अपना उधर पहुंचा

ख़्याल अपना उधर पहुंचा बसद-तदबीर[1] मुश्किल से
खिंची क़ल्क़े-तसव्वुर[2] से भी वह तस्वीर मुश्किल से

रहे हैं हिज्र की शब वह हुजूमे-रंज़ो-ग़म दिल में
कि निकले है हमारा नाला-ए-शबग़ीर[3] मुश्किल से

हज़ारों तरह के हैं पेंच उसकी ज़ुल्फ़े-पेचां में
बनाई यह किसी सन्नाअ[4] ने ज़ंजीर मुश्किल से

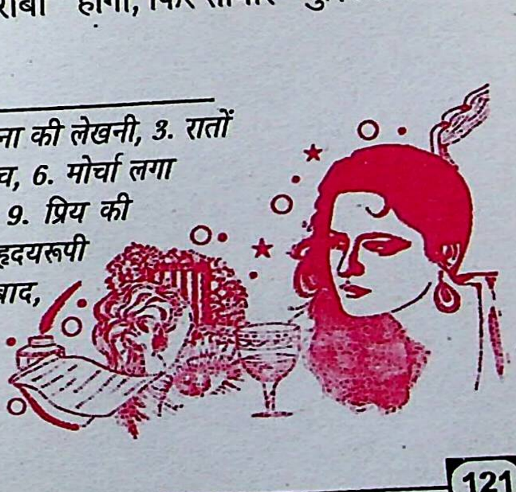
फिरूं जो हिर्स[5] में है, निकले क्या दुनिया से वो आसां
मियां से ज़ंग-आलूदा[6] खिंचे शमशीर[7] मुश्किल से

ज़ईफ़ो-नातवां[8] हूं, कूचा-ए-जानां[9] में रहने दो
यहां पहुंचा हूं मैं ऐ गर्दिशे-तक़दीर[10] मुश्किल से

न ढाओ ख़ाना-ए-दिल[11] को 'ज़फ़र' के, ऐ बुतो, देखो
ये घर बाद-अज़-ख़राबी[12] होगा, फिर तामीर[13] मुश्किल से

---

*1. सैंकड़ों उपाय, 2. कल्पना की लेखनी, 3. रातों का रुदन, 4. कारीगर, 5. लालच, 6. मोर्चा लगा हुआ, 7. तलवार, 8. शिथिल, 9. प्रिय की गली, 10. भाग्य का फेर, 11. हृदयरूपी घर, 12. खराब होने के बाद, 13. निर्माण करना, बनाना।*



# दिल अपना उस पे

दिल अपना उस पे जो शैदा[1] हुआ तो ऐसा हुआ
सुना हर इक ने ये चर्चा हुआ तो ऐसा हुआ

रहा खटकता, रक़ीबों की[2] आँख में आशिक़
अगर वो सूख के काँटा हुआ तो ऐसा हुआ

दम दिया ऐसा कि दम[3] ही निकल गया, दम[4] में
वो मेरे हक़ में मसीहा हुआ तो ऐसा हुआ

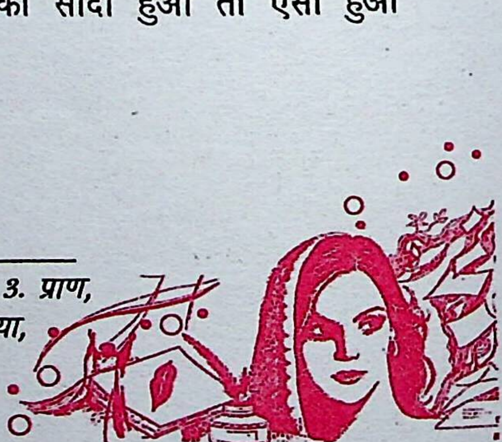
डुबोया मुझको, बुझाई न मेरे दिल की आग
रवां जो ग़िरिया-ए-दरिया[5] हुआ तो ऐसा हुआ

ये ज़ोफ़[6] है, नहीं उठ सकता सर भी तकिए से
मरीज़े-ग़म तेरा अच्छा हुआ तो ऐसा हुआ

तमात उम्र 'ज़फ़र', हम रहे परीशां-हाल
किसी की ज़ुल्फ़ का सौदा हुआ तो ऐसा हुआ

---

*1. फ़िदा, 2. दुश्मनों की, 3. प्राण, 4. क्षण-भर, 5. आँसुओं का दरिया, 6. हाल।*



# क्या कहूं, तुमने

क्या कहूं, तुमने मुझसे कैसी की
जी ही जाने है मेरा, जैसी की

न करे कोई दुश्मनी ज़ालिम
दोस्ती तूने मुझसे ऐसी की

सोज़िशे-दिल[1] ने हर इक बुन-मू[2] से
एक पैदा सदा-ए-नै[3] सी की

तेरी मौज़े-तबस्सुमे-लब[4] ने
की नुमाइश तो मौज़े-मय[5] सी की

क्या कहें, क्या बशर[6] के क़ालिब[7] में
हमने मालूम एक शै[8] सी की

की, बुराई की मुझसे आँखों ने
दिल ने क्या, उससे ऐसी-तैसी की

देखो होगा वो बरहम[9] और 'ज़फ़र'
बात गर तुमने ऐसी-वैसी की



---

*1. दिल की ज़लन, 2. बाल, 3. बाँसुरी का स्वर, 4. होंठों की मुस्कान, 5. शराब की लहर, 6. मनुष्य, 7. हृदय, 8. वस्तु, 9. क्रोधित।*

# सबा गर चराग़े

सबा गर चराग़े-चमन गुल[1] करे
नज़ारा फिर गुल का क्या बुलबुल करे

ख़िरद[2] ही पे तकिया[3] न बिलकुल करे
ख़ुदा पर भी इन्सां तवक्कुल[4] करे

वो हो रू-ब-रू[5] और न देखे उसे
ये दिल मेरा क्योंकर तअम्मुल[6] करे

कहे शाम की यह सियाही उठी
नज़र जो तेरी सू-ए-काकुल[7] करे

करूं कमनिग़ाही[8] का गर मैं गिला[9]
तो फिर और भी वो तग़ाफ़ुल[10] करे

करे तू 'ज़फ़र' पे जो लाखों सितम
कहां तक वो सब्रो-तअम्मुल करे



*1. बुझाना, 2. बुद्धि, विवेक, 3. विश्वास, 4. यक़ीन, 5. सामने, 6. संकोच, 7. बालों की ओर, 8. उपेक्षा, 9. शिकायत, 10. लापरवाही, उदासीनता।*

# तुम्हारे इश्क़ में हम

तुम्हारे इश्क़ में हम ऐ बुतो, क्या-क्या ना रखते हैं
जिगर सदचाक़[1] रखते हैं, दिले-दीवाना रखते हैं

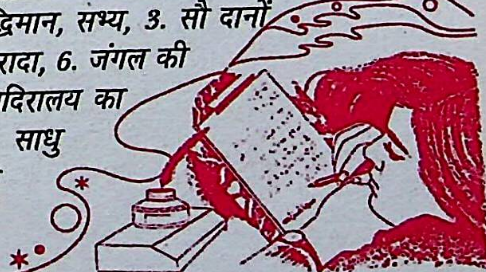
ख़ुदा की याद में हरदम तू रख अपने को, ऐ ज़ाहिद!
जो दाना[2] हैं नहीं, वह सबहये-सद-दाना[3] रखते हैं

न क्योंकर क़ब्र पर मजनूं की पहले फ़ातिहा[4] पढ़ लें
कि हम भी अज़्मे-रफ्तन[5] ज़ानिबे-वीराना[6] रखते हैं

कोई दम-भर की हस्ती[7] में ग़नीमत है, हमें रहना
हुबाब-आसा[8] लबालब उम्र का पैमाना रखते हैं

मुग़ां[9] से बेत[10] है हमको, कोई कह देवे ज़ाहिद[11] से
कि हम अब तक़िया-गह[12] अपना, दरे-मयख़ाना[13] रखते हैं

बरंगे-तायरे-क़िबलानुमा[14], मत पूछ कुछ हमदम[15]
कि तन्हाई में हम क्या हाले-बेबाक़ाना[16] रखते हैं



*1. सौ जगह से फटा, 2. बुद्धिमान, सभ्य, 3. सौ दानों की माला, 4. दुआ, 5. चलने का इरादा, 6. जंगल की ओर, 7. जीवन, 8. बुलबुले, 9. मदिरालय का मालिक, 10. सहमत होना, 11. साधु 12. भरोसा, 13. मदिरालय के दरवाजे पर, 14 दिशा का ज्ञान करने वाला, 15. साथी, 16. निर्भीक।*

# इतना न अपने ज़ामे से

इतना न अपने ज़ामे[1] से बाहर निकल के चल
दुनिया है चल-चलाओ का रस्ता, संभल के चल

कमज़र्फ़[2], पुर-गुरूर[3], ज़रा अपना ज़र्फ़[4] देख
मानिन्दे-ज़ोशे-खुम[5], न ज़ियादा उबल के चल

फ़ुरसत है इक सदा की यहां सोज़े-दिल[6] के साथ
इस पर सपन्दवार[7] न इतना उछल के चल

औरों के बल पे, बल न कर, इतना न चल निकल
बल है तो बल के बल पे तू, कुछ अपने बल के बल

इन्सां को कल[8] का पुतला बनाया है उसने आप
और आप ही वो कहता है, पुतले को, कल के चल

फिर आँखें भी तो दी हैं, रख देखकर क़दम
कहता है कौन तुझको न चल, चल, संभल के चल

बुलबुल के होश, निक़हते-गुलक[9] की तरह उड़ा
गुलशन में मेरे साथ, ज़रा इत्र मल के चल

---

*1. अपने आपे से, 2. अयोग्य, 3. घमंडी, 4. योग्यता, 5. मटके का उबाल, 6. हृदय की जलन, 7. घोड़े की तरफ़, 8. मशीन, 9. पुष्प की गन्ध।*



# या तो वो रखते थे सरग़ोशी

या तो वो रखते थे सरग़ोशी[1] हमीं से इस क़दर
या लगी होने सुख़नपोशी[2] हमीं से इस क़दर

हमको पास[3] इतना न हो, हर बात पर पहलू वही[4]
और तुम्हें नंगे-हमआग़ोशी[5], हमीं से, इस क़दर

होश में आओ, हमें कहते हो तुम, बेहोश हो,
क्यों मियां, दिल-होशो-बेहोशी हमीं से इस क़दर

जूं गुलो-बुलबुल चमन में, सब हैं हँसते-बोलते
सीखी इक ग़ुंचा ने ख़ामोशी हमीं से इस क़दर

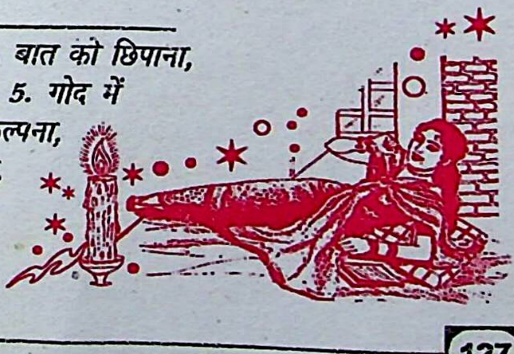
कहती हैं वो मस्त आँखें साग़रे-मय से कि देख
तुझ में है मस्ती-ओ-बेहोशी हमीं से इस क़दर

चश्म-वा[6] हैं हसरते-दीदार में मुद्दत से हम
ऐ तसव्वुर[7]! वाए-रूपोशी[8] हमीं से इस क़दर

निक़हते-गुल[9] जो सफ़र करती है बेरख़्ते-सफ़र[10]
ऐ 'ज़फ़र', सीखी सुबुक़दोशी[11] हमीं से इस क़दर

---

*1. गुपचुप वार्तालाप, 2. बात को छिपाना, 3. ख़्याल, 4. छोड़कर जाना, 5. गोद में लेना, 6. खुली हुई आँखें, 7. कल्पना, 8. मुंह छिपाना, 9. पुष्प-गन्ध, 10. यात्रा की सामग्री, 11. हल्का होना।*



# दिल है जो दर्द-आशना

दिल है जो दर्द-आशना[1], यह भी किया उसी ने है
जान है जो ग़म में मुब्तिला[2], यह भी किया उसी ने है

हो के जो दिलबर वो अदू, करता है मुझसे गुफ़्तगू
मैं भी हूं ख़ूब जानता, यह भी किया उसी ने है

पहले करम[3] था अब सितम[4], करते नहीं शिक़वा[5], हम पर
वो भी किया उसी ने था, यह भी किया उसी ने है

किसकी है ताब[6] इस क़दर, दिल में करे तेरे असर
नाला-ए-दिल को मरहबा[7], यह भी किया उसी ने है

दिल जो मेरा रफ़ीक़[8] था, होता न था कभी जुदा
अब जो अलग वो हो गया, यह भी किया उसी ने है

करता था शाद[9] वस्ल से, अपने जो ऐ 'ज़फ़र', मुझे
हिज्र में हाल अब मेरा, यह भी किया उसी ने है



---

*1. दुःख से परिचित, 2. फंसा हुआ, लिप्त,
3. कृपा, 4. अत्याचार, 5. शिकायत,
6. ताकत, 7. शाबाशी, 8. मित्र,
9. प्रसन्न।*

# आज वस्ले-यार की

आज वस्ले-यार की तदबीर हमने की तो है
हो न हो, पर कोशिशे-तक़दीर हमने की तो है

जी डरे है, काग़ज़े-क़ासिद न जल जाएं कहीं
सोज़िशे-दिल[1], ख़त में कुछ तहरीर हमने की तो है

देखिए, देते हैं इस पर आप हमको क्या सज़ा
ये दिया दिल तुमको ये तक़सीर[2] हमने की तो है

ज़ोर पर आया है जब सौदा[3]-ए-ज़ुल्फ़े-पुरशिक़न[4]
टुकड़े-टुकड़े तोड़कर ज़ंज़ीर हमने की तो है

खींचकर क़ल्क़े-तसव्वुर से पये-तस्क़ीने-दिल[5]
यार की तैयार इक तस्वीर हमने की तो है

हमसे तू किस वास्ते ख़मरू[6] है, ऐ अबरू-ए-यार[7]
अपनी गरदन ख़म[8] तहे-शमशीर[9] हमने की तो है

गर न हो उस शोख़ संगे-दिल[10] के दिल पे, कुछ असर
पर 'ज़फ़र' इक आहे-बे-तासीर[11] हमने की तो है



---

*1. दिल की जलन, 2. अपराध, 3. उत्पाद, 4. टेढ़े-मेढ़े बाल, 5. हृदय के सन्तोष हेतु, 6. क्रुद्ध, 7. प्रियतम, 8. झुकाना, 9. तलवार के नीचे, 10. पत्थर दिल, 11. अप्रभावी आहें।*

# ज़हां में हम तो

ज़हां में हम तो ग़म-आलूदा[1] इक ज़हां के रहे
रहे उसी में, यहां के रहे, न वां के रहे

शबे-फ़िराक़[2] न पूछो कि किस तरह गुज़री
सितारे गिनते हम आँखों से, आसमां के रहे

न अज़्मे-क़ाबा[3] किया और न क़स्दे-बुतख़ाना[4]
कि हम तो ख़ाकनशीं[5] उसके आस्तां[6] के रहे

पहुंच गए सरे-मंज़िल[7] तो हमसफ़र-ओ-हम
भटकते गर्दे-सिफ़त[8] पीछे कारवां के रहे

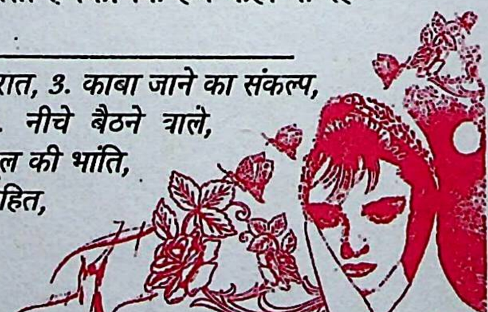
बरंगे-गुंचा-ए-तस्वीर, कुछ न बोले हम
सदा ख़ामोश तसव्वुर में, उस दहां[9] के रहे

हमें ग़रज़[10] न रही दीन-ओ-ईमान से कुछ
वारफ़्ता[11] जो रूख़-ओ-ज़ुल्फ़ पर बुतां[12] के रहे

ठिकाना जब न रहा कू-ए-यार[13] में अपना
तो 'ज़फ़र', यह बता हमको कि हम कहां के रहे

---

*1. दुःखमग्न, 2. विरह की रात, 3. काबा जाने का संकल्प, 4. मंदिर जाने का विचार, 5. नीचे बैठने वाले, 6. चौखट, 7. मंजिल तक, 8. धूल की भांति, 9. मुंह, 10. मतलब, 11. मोहित, 12. रूपसी, 13. प्रिय की गली।*



# तन्हा न इश्क़ में

तन्हा[1] न इश्क़ में दिले-माइल[2] पे बन गई
जी पर भी वही बन गई, जो दिल पे बन गई

दिल ही से पूछो इश्क़ में जो दिल पे बन गई
बिस्मिल[3] ही जानता है जो बिस्मिल पे बन गई

बरपा[4] हो क्यों न ख़ाना-ए-ज़िन्दां[5] में रोज़े-गुल[6]
मेरे जुनूं[7] से अब तो सलासल[8] पे बन गई

खुश है जिसे कि ग़म नहीं अंजामकार[9] का
अन्देशा-ए-मआल[10] में आक़िल[11] पे बन गई

पहुंची न रफ़्तगाने-अदम[12] की जो कुछ ख़बर
क्या जाने, कैसी जाते ही मंज़िल पे बन गई

हस्ती[13] के बाग़बां[14] की 'ज़फ़र', पूछता है क्या
जो कुछ चमन में ज़ाने-अनादिल[15] पे बन गई

---

*1. अकेले, 2. इच्छुक हृदय, 3. घायल, 4. पैदा, 5. बन्दीगृह, 6. शोर, 7. उन्माद, 8. बेड़ियां, ज़ंज़ीर, 9. कर्मफल, 10. फल की चिन्ता, 11. बुद्धिमान, 12. परलोक जाने वाला, 13. जीवन, 14. माली, 15. बुलबुल।*



# पयाम ले के सबा

पयाम[1] ले के सबा[2] वां अगर पहुंच जाती
तो मिस्ले-बू-ए-गुल[3] उड़कर ख़बर पहुंच जाती

शफ़क़[4] की जा[5], अभी लग जाती आग गरदूं[6] को
जो एक आह मेरी पुर-शरर[7] पहुंच जाती

न जलती शम्अ जो शब[8] के बल तो फिर क्योंकर
सहर[9] को मंज़िले-मक़सूद[10] पर पहुंच जाती

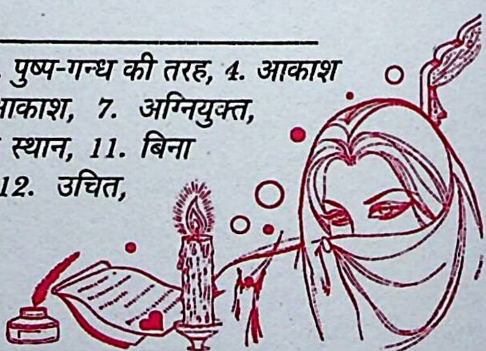
न आता लब पे एक हर्फ़ शिकवा का
बला से लब पे मेरी जान गर पहुंच जाती

बहार जब थी कि पहले बहार से सय्याद
चमन में बुलबुले-बे-बालो-पर[11] पहुंच जाती

दिल उसको भेज ही देना 'ज़फ़र' मुनासिब[12] था
अमानत[13] उनकी थी, यह उनके घर पहुंच जाती

---

*1. सन्देश, 2. हवा, वायु, 3. पुष्प-गन्ध की तरह, 4. आकाश की लालिमा, 5. स्थान, 6. आकाश, 7. अग्नियुक्त, 8. रात्रि, 9. सुबह, 10. निर्दिष्ट स्थान, 11. बिना बालों एवं परों की बुलबुल, 12. उचित, 13. धरोहर।*



# यार के सब क़रीब

यार के सब क़रीब रहते हैं
दूर हम बेनसीब[1] रहते हैं

फ़ौजे-हसरत[2] में नाला-ओ-आह
बस, यही दो नक़ीब[3] रहते हैं

दश्ते-गुरबत[4] में रहते हैं जो लोग
वह हमीं से ग़रीब रहते हैं

हम किसी गुल के इश्क़ में नाला[5]
रविश-ए-अन्दलीब[6] रहते हैं

मेरे उनके मुआमले बाहम[7]
क्या कहूं, कुछ अज़ीब रहते हैं

हों वो तन्हा तो कुछ कहूं मैं 'ज़फ़र'
साथ उनके रक़ीब[8] रहते हैं



*1. अभागे, 2. इच्छारूपी सेना, 3. वीर, बहादुर 4. परदेश का जंगल, 5. दुःखी, रोता हुआ, 6. बुलबुल की भांति, 7. परस्पर, 8. प्रतिद्वंद्वी, विरोधी।*

# बहार का मेरे सर

बहार का मेरे सर पर है आ गया मौसम
जो गुल हो पास तो है क्या ही ऐश[1] का मौसम

बरंगे-गुल[2] नहीं होती शगुफ़्तगी[3] दिल की
कि किस तरह का ये आया है, ऐ सबा[4] मौसम

घुटा न दिल को, मेरे जामे-मय पिला साक़ी
हवा है और ये बरसात का है क्या मौसम

वफ़ूरे-ग़िरिया[5] है और आहे-सर्द, सोज़िशे-दिल[6]
हर एक चीज़ का है यां ज़ुदा-ज़ुदा मौसम

हुआ न सुर्ख़, पर चेहरे का ज़र्द रंग मेरे
तुम्हारे इश्क़ में अपना है एक-सा मौसम

चमन में क्योंकि न ज़ंजीरे-पा[7] हो मौज़े-नसीम[8]
उजाड़ का अभी यारो, नहीं गया मौसम

*1. सुख, 2. पुष्प की भांति, 3. खिलना, 4. हवा, 5. आँसुओं की अधिकता, 6. दिल की जलन, 7. पांव की ज़ंज़ीर, 8. हवा की लहरें।*



# वो जो तुम खाते हो

वो जो तुम खाते हो, ख़ुदा की क़सम
ऐ दरोग़[1], ऐ बुतो, ख़ुदा की क़सम

फिरते हैं मेहरो-माह[2] सरगरदां[3]
है तेरी ज़ुस्तजो[4], ख़ुदा की क़सम

खोल देते हैं मेरे नाला-ओ-आह
राज़े-पोशीदा[5] को ख़ुदा की क़सम

मेहर क्या, ज़र्रा[6] क्या कि है सब में
ज़लवा-ए-यारे-लौ, ख़ुदा की क़सम

शम्अ में है वहां तज़ल्ली-ए-नूर[7]
गुल में है वो ही बो[8], ख़ुदा की क़सम

ऐ 'ज़फ़र'! उससे न कर ज़ियादा कलाम[9]
कि वो है तुन्द-ख़ो[10], ख़ुदा की क़सम



---

*1. झूठ, 2. चाँद-सूरज, 3. घूमते हुये, 4. तलाश, 5. रहस्य, 6. टुकड़ा; 7. प्रकाश, 8. सुगन्ध, 9. बातचीत, 10. तेज मिज़ाज़ वाला।*

# दो आलम को हम

दो आलम[1] को हम, मयपरस्ती[2] में भूले
मगर एक सागर, न मस्ती में भूले

बगोले के मानिंद फिरते रहे हम
ख़्याले-बुलन्दी-ओ-पस्ती[3] में भूले

जो हो इश्क़ रहबर तो फिर कोई रास्ता
न जंगल में भूले, न बस्ती में भूले

उसे बुतक़दा[4] काबा है, कुफ़्र[5] ईमां
खुदा को जो न बुतपरस्ती[6] में भूले

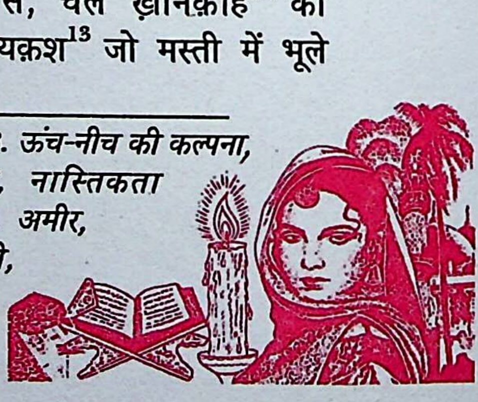
वो मुफ़लिस[7] नहीं, उसको समझो तवांगर[8]
न औसान[9] जो तंग-दस्ती[10] में भूले

नहीं याद, क्या जाने, क्या था अदम[11] में
कि बिलकुल बाहम आ के हस्ती में भूले

फिर मयक़दा से, चले ख़ानक़ाह[12] को
'ज़फ़र', राह मयक़श[13] जो मस्ती में भूले

---

*1. संसार, 2. शराब पीना, 3. ऊंच-नीच की कल्पना, 4. मंदिर, 5. अधार्मिकता, नास्तिकता 6. सौन्दर्य-पूजन, 7. निर्धन, 8. अमीर, धनी, 9. होश, 10. गरीबी, 11. परलोक, 12. साधु-सन्तों का स्थान, 13. शराबी।*



# आशना हो तो

आशना[1] हो तो आशना समझे
हो जो नाआशना, तो क्या समझे

हम इसी को भला समझते हैं
आपको जो कोई बुरा समझे

वस्ल[2] है, तू जो समझे, उसे वस्ल
तू जुदा[3] है, अगर जुदा समझे

जो ज़हर देवे अपने हाथ से तू
तेरा बीमारे-ग़म दवा समझे

हो वो बेग़ाना[4] एक आलम[5] से
जिसको अपना वो दिलरुबा[6] समझे

ऐ 'ज़फ़र', वो कभी न हो गुमराह[7]
जो मुहब्बत को रहनुमा[8] समझे

---

*1. मित्र, 2. मिलन, 3. अलग, 4. पराया, 5. संसार, 6. प्रियतमा, 7. दिग्भ्रमित, 8. पथ-प्रदर्शक।*



# तुझे हमेशा जो

तुझे हमेशा जो न मेहरबान पाया है
यह हमने अपना दिले-नादान पाया है

फिराया वादी-ए-गुरबत[1] में है जो सर-ग़रदां[2]
मुझी को तूने ग़रीब आसमान पाया है

यूं गालियां तेरी हम बेमज़ा नहीं खाते
मज़ा भी इनमें कुछ ऐ बदगुमान[3] पाया है

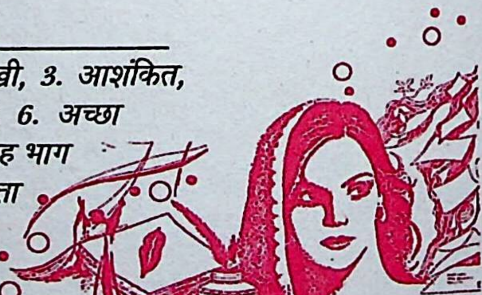
रखे है और सिवा बारे-ग़म[4] मेरे सर पर
मुझे जो इश्क़ ने अब नातवान[5] पाया है

हमेशा चश्म को मिज़गां से ज़ेब[6] है देखो
ये इस मकान ने क्या सायबान[7] पाया है

किया है हमने 'ज़फ़र', जा के जब तेरा मज़कूर[8]
तेरी तरफ़ से उन्हें बदगुमान पाया है

---

*1. परदेस, 2. परेशान, दुःखी, 3. आशंकित, 4. दुःख का बोझ, 5. शिथिल, 6. अच्छा लगना, 7. मकान के आगे बना वह भाग जो धूप रोकने के लिये बनाया जाता है, 8. जिसका जिक्र किया गया हो।*



# बसा आँखों में वो प्यारा

बसा आँखों में वो प्यारा कुछ ऐसा है कि क्या कहिए
तसव्वुर[1] बंध रहा उसका कुछ ऐसा है कि क्या कहिए

हमें क्या काम जो नाहक़[2] सहारा ग़ैर का ढूंढें
सहारा यां ख़ुदा ही का कुछ ऐसा है कि क्या कहिए

बला से गर नहीं है, साया-ए-बालेहुमा[3] सर पर
तेरी दीवार का साया कुछ ऐसा है कि क्या कहिए

वो है पेशे-नज़र[4] और फिर नज़र आता नहीं हर्गिज़
पड़ा ग़फ़लत[5] का इक परदा कुछ ऐसा है कि क्या कहिए

'ज़फ़र', दुनिया-ए-फ़ानी[6] ख़्वाब का-सा एक आलम है
मगर इस ख़्वाब में देखा कुछ ऐसा है कि क्या कहिए

---

*1. ख़्याल, 2. व्यर्थ, बेकार, 3. हुमा नामक पक्षी का साया, 4. आँखों के सामने, 5. असावधानी, 6. नश्वर संसार।*



# मुंह नज़र आवे न क्योंकर

मुंह नज़र आवे न क्योंकर, आँख में उस यार का
आँख अपनी बन गई है, आईना दीवार का

पास अबरू[1] के मुर्रसाकार[2] है टीका[3] कहां
है मियां, क़ब्ज़ा[4]-जड़ाऊ यार की तलवार का

ज़ख़्मे-दिल को साफ़ करता है ख़्याले-ख़त्ते-सब्ज़[5]
चारागर मरहम न रख, बेफ़ायदा ज़ंगार[6] का

गर मेरी मिज़गाने-तर[7] बरसाए मोती एक बार
नाम धो डाले जहां से अब्र[8] ग़ौहरबार[9] का

देखना, झांका कहीं वो मेहरवश[10] शायद कि है
अख़्तरे[11]-सुबहे-क़यामत[12] रौज़न[13] उस दीवार का

महवे-हैरत[14] क्यों न हों वो ऐ 'ज़फ़र' आईनावार[15]
देखने वाला हो जो उस आईना-रुख़सार[16] का

---

*1. भवें, 2. जड़ा हुआ, 3. एक गहना, 4. मूठ, 5. नये उगे हुये बाल, 6. मोर्चा, 7. भीगी हुई पलकें, 8. बादल, 9. मोती बरसाने वाली, 10. सुन्दर, 11. सितारे, 12. प्रलय दिवस की सुबह, 13. खिड़की, 14. आश्चर्यचकित, हतप्रभ, 15. दर्पण की भांति, 16. कपोल, गाल।*



# मिज़गां से किसके

मिज़गां[1] से किसके चुभ गए नश्तर[2], ज़िगर के पास
रौज़न[3] जो सैंकड़ों हैं बराबर, ज़िगर के पास

खींचा क़शिश[4] ने दिल की, जो क़ातिल के हाथ को
पहुंचा है सीना चीर के ख़ंजर, ज़िगर के पास

ढूंढूं हूं क्या कि सीना में है उसके तीर का
इक घर है दिल के पास, तो इक घर ज़िगर के पास

दोनों गुदाज़े-इश्क़[5] से बह जाएं, हो के आब[6]
आहन[7] जो दिल के पास हों, पत्थर ज़िगर के पास

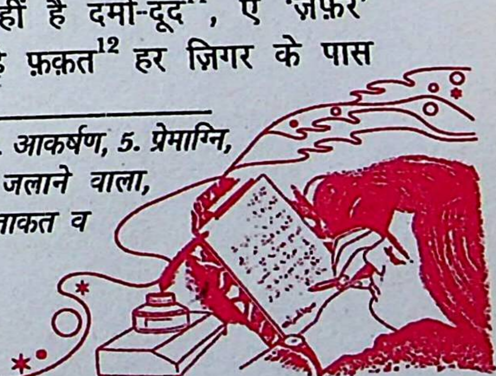
दिल-सोज़[8] है कोई न जिगर-सोज़ इस क़दर
भटके जो दिल के पास कि दम-भर ज़िगर के पास

आए शरर[9] ज़िगर से निकल दिल के मुत्तसिल[10]
या शोला पहुंचे दिल से निकलकर, ज़िगर के पास

दिल में तो कुछ नहीं है दमो-दूद[11], ऐ 'ज़फ़र'
इक आह रह गई है फ़क़त[12] हर ज़िगर के पास

---

*1. पलकें, 2. सुई, 3. छिद्र, 4. आकर्षण, 5. प्रेमाग्नि, 6. पानी, 7. लोहा, 8. दिल जलाने वाला, 9. चिनगारी, 10. निकट, 11. ताकत व धुआं, 12. केवल, सिर्फ।*



# न रही ताबो

न रही ताबो[1]-न-तवां[2] बाक़ी
है फ़क़त[3], तन में एक जां बाक़ी

शम्अ-सा[4] दिल तो जल बुझा लेकिन
है अभी दिल में कुछ धुआं बाक़ी

है कहां कोहकन, कहां मजनूं
रह गया नामे-आशिक़ां बाक़ी

ख़ाके-दिल-रफ्तगां[5] पे रखना क़दम
है अभी सोज़िशे-निहां[6] बाक़ी

कारख़ाने-हयात[7] से तबे-ज़ार
है मगर गर्दे-क़ारवां[8] बाक़ी

दम[9]-ए-उल्फ़त है ज़िन्दगी मेरी
वरना है मुझ में वो वहां बाक़ी



*1. हिम्मत, 2. ताक़त, 3. केवल, 4. दीपक की भांति, 5. मृतक की मिट्टी, 6. छिपी हुई जलन, 7. जीवन का केंद्रबिंदु, 8. क़ाफ़िले की धूल, 9. साँस।*

# क़द्र, ऐ इश्क़, रहेगी

क़द्र[1], ऐ इश्क़, रहेगी तेरी क्या मेरे बाद
कि तुझे कोई नहीं पूछने का मेरे बाद

ज़ख़्म पर दिल के ग़वारा[2] है मुझे गो ये नमक
कौन चक्खेगा मुहब्बत का मज़ा मेरे बाद

दरे-जानां[3] से मेरी ख़ाक न करना बरबाद
देख, न जाना उधर क़ादे-सबा[4] मेरे बाद

ख़ार-सहराये-जुनूं[5] यूं ही अगर तेज़ रहे
कोई आएगा नहीं आबला-पा[6] मेरे बाद

मेरे दम[7] तक है तेरा, ऐ दिले-बीमार इलाज़
कोई करने का नहीं तेरी दवा मेरे बाद

उस सितमग़र[8] ने मुझे जुर्मे-वफ़ा पर मारा
कोई लेने का नहीं, नामे-वफ़ा मेरे बाद

ऐ 'ज़फ़र', हो न मुहब्बत को तेरा ग़म क्योंकर
कोई ग़मख़्वारे[9]-मुहब्बत न हुआ मेरे बाद

---

*1. प्रतिष्ठा, 2. सहन, 3. प्रिय का द्वार, 4. सुबह की हवा, 5. पागलपन के जंगल का काँटा, 6. छालेपड़े पांव, 7. जीवन, 8. निर्दयी, 9. हमदर्द।*



# हम नहीं वह जो करें

हम नहीं वह जो करें दिल से फ़रामोश[1] तुम्हें
जानते अपना हैं हम जाने-दम-ब-होश तुम्हें

चश्मे-मस्त अपनी जो दिखलाए वो मयनोश[2] तुम्हें
ज़ाहिदे! होशो-ख़िरद[3] का न रहे होश तुम्हें

कर चुके आहो-फुगां ज़ब्त[4] तुम, ऐ हज़रते-दिल
दम-ब-दम[5] गर है मुहब्बत का यही होश तुम्हें

शब-ए-फ़ुरक़ुत[6] में भी रहते हो बग़ल में मेरे
रखते हैं अपने तसव्वुर[7] से हम-आग़ोश[8] तुम्हें

आँखें सुरमा से हैं आलूदा[9] तेरी, पूछ इनसे
किसके मातम न किया है ये सियहपोश[10] तुम्हें

शम्अ-सा[11] गो कि सरापा[12] हो ज़ुबां तुम, लेकिन
देखता हूं 'ज़फ़र', इस बज्म में ख़ामोश तुम्हें



*1. भुला देना, 2. शराबी, 3. बुद्धि, 4. रोकना, 5. हर समय, 6. विरह की रात, 7. कल्पना, 8. आलिंगन, 9. भरी हुई, 10. काले वस्त्रों में, 11. दीपक की भांति, 12. सिर से पाँव तक।*

# तेरा हुस्न हम ज़लवागर

तेरा हुस्न हम ज़लवागर[1] देखते हैं
जहां देखते हैं, जिधर देखते हैं

करें क्योंकि दिल की न हम पासदारी[2]
कि हर दिल में हम तेरा घर देखते हैं

नहीं रखते नाम और का, वह जो अपने
गरेबां[3] में मुंह डालकर देखते हैं

क़दम क्योंकि बहरे-मुहब्बत[4] में डालें
कि हर मौज मौजे-ख़तर[5] देखते हैं

धुआं आग से, आग पत्थर से निकले
मुहब्बत का सब में असर देखते हैं

कहां हैं वो आँखें हमारी कि देखें
'ज़फ़र', उनको अहले-नज़र[6] देखते हैं

---

*1. प्रकाशवान, 2. रखवाली, 3. कमीज़ या कुर्ते का अग्रभाग, 4. प्रेम-नदी, 5. खतरे की लहरें, 6. देखने वाले, श्रोतागण।*



# नसीब ऐसा तो

नसीब ऐसा तो सोज़े-ज़िगर[1] किसी को न हो
कि जल के ख़ाक हो दिल और ख़बर किसी को न हो

जले रक़ीब[2] दिल उसका न मोम हो ऐ आह!
ये क्या किसी को तो होवे असर, किसी को न हो

जो एक ऐब हो तो देखें हज़ार ग़ौर से यार
सितम[3] है लाख हुनर[4], पर नज़र किसी को न हो

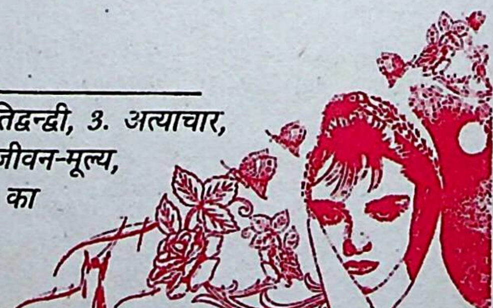
तमाम सूद[5] है, सौदा दुकाने-हस्ती[6] का
जो तुझसे हो नफ्अ सबको ज़रर[7], किसी को न हो

हज़ार रंज़ो-अलम हों, तो सब गवारा[8] हैं
किसी का दर्दे-ज़ुदाई[9] मगर किसी को न हो

जो दाग़ दिल पे हो तो ज़ख़्म हो ज़िगर पर भी
कि हो तो सबको, नहीं ऐ 'ज़फ़र', किसी को न हो

---

*1. दिल की जलन, 2. प्रतिद्वन्द्वी, 3. अत्याचार, 4. गुण, कला, 5. लाभ, 6. जीवन-मूल्य, 7. हानि, 8. सहन, 9. विरह का कष्ट।*



# नसीब अच्छे अगर

नसीब अच्छे अगर बुलबुल के होते
तो क्या पहलू में काँटे, गुल के होते

जो हम लिखते तुम्हारा वस्फ़े-गेसू[1]
तो मुस्तर[2] तार के, सम्बुल[3] के होते

जो होता ज़र्फ़[4] साक़ी हमको मालूम
तो मिन्नतक़श[5] न ज़ामे-मुल[6] के होते

जताते मस्त गर नाज़ुक-दिमाग़ी[7]
तो बरहम[8] शोर से क़ुलक़ुल[9] के होते

लगाते शम्अ-सी गर लौ न मुझसे
तो यूं आख़िर न हम धुल-धुल के होते

न होते हज़रते-दिल पा-ब-ज़ंजीर[10]
जो सौदाई[11] न उस क़ाकुल[12] के होते

---

*1. बालों की प्रशंसा, 2. निरन्तर, लगातार, 3. एक तरह की घास, 4. योग्यता, 5. एहसानमन्द, 6. मदिरापात्र, 7. नखरे वाला, 8. कुपित, क्रोधित, 9. बोतल से पानी निकलने का स्वर, 10. पैरों में बेड़ियां, 11. उन्मादी, 12. बालों की लट।*



# लोग कहते हैं कि

लोग कहते हैं कि वह तुमसे क़रीं[1] रहते हैं
वाह री बेख़बरी! हम भी यहीं रहते हैं

रहते इक जा नहीं आकर तेरे, जूं ख़ुर्शीद[2]
सुबह रहते हैं कहीं, शाम कहीं रहते हैं

दिल में बसते हैं हमारे वो सनम काफ़िर-केश[3]
ख़ाना-ए-काबा[4] में यह दुश्मने-दीं[5] रहते हैं

साथ ले जाते हैं जो ख़ाक में, बेताबी-ए-दिल[6]
ख़ाक आराम से वह ज़ेरे-ज़मीं[7] रहते हैं

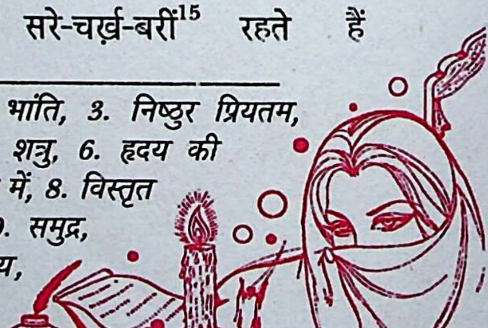
वुसअत-आबाद-जहां[8] में है जिन्हें ख़्वाहिशे-नाम
घर में भी तंग वह मानिन्दे-नगीं[9] रहते हैं

बहर[10] पर मौज़[11] को क्या ख़ाक गिने दरियादिल[12]
अहले-बख़्शिश[13] भी कहीं, चीं-ब-ज़बीं[14] रहते हैं

शोरो-फ़रियाद से दिलहाय-सितमकश कि 'ज़फ़र'
रोज़ हंगामे सरे-चर्ख़-बरीं[15] रहते हैं

---

*1. निकट, 2. सूर्य की भांति, 3. निष्ठुर प्रियतम, 4. धार्मिक स्थल, 5. धर्म के शत्रु, 6. हृदय की बेचैनी, 7. जमीन की नीचे, कब्र में, 8. विस्तृत संसार, 9. नग़ीने की तरह, 10. समुद्र, 11. लहरें, 12. उदारहृदय, 13. दानशील, 14. क्रुद्ध, 15. आसमान पर।*



# जो तमाशा देखने

जो तमाशा देखने, दुनिया में थे, आए हुए
कुछ न देखा, फिर चले, आख़िर वो पछताए हुए

फ़र्शे-मख़मल पर भी मुश्किल से जिन्हें आता था ख़्वाब
ख़ाक पर सोते हैं अब वो, पांव फैलाए हुए

जो मुहय्या-ए-फ़ना-हस्ती[1] में है मिस्ले-अहबाब[2]
होते हैं अव्वल[3] से ही पैदा वो कफ़नाए[4] हुए

गुचे[5] कहते हैं कि होगा देखिए क्या अपना रंग
जब चमन में देखते हैं फूल कुम्हलाए हुए

ग़ाफ़िलो! इस अपनी हस्ती पर कि है नक्शे-ब-आब[6]
मौज़ की मानिंद[7] क्यों फिरते हो बलखाए हुए

बे-क़दम नक़्शे-क़दम[8] पे बैठ सकता है कि हम
आप से बैठे नहीं, बैठे हैं बिठलाए हुए

ऐ 'ज़फ़र', बे-ऐबो-रहमत[9] उसके क्यूंकर बुझ सकें
नफ़्से-सरक़श[10] के जो ये शोले हैं भड़काए हुए

---

*1. नश्वर संसार, 2. दोस्त की भांति, 3. शुरू, आरम्भ, 4. क़फ़न ओढ़े हुये, 5. कलियां, 6. पानी की चित्रकारी, 7. लहरों की भांति, 8. पदचिह्न, 9. कृपा, 10. दुष्ट साँसें।*



# न दरवेशों का ख़रका

न दरवेशों[1] का ख़रका[2] चाहिए, न ताज़े-शाहाना[3]
मुझे तो होश दे इतना, रहूं मैं तुझ पे दीवाना

ग़नीमत[4] जान, जो दम[5] गुज़रे मस्ती[6] से, गुलिस्तां[7] में
दिए जा साक़िये-पैमां-शिकन[8] भर-भर के पैमाना[9]

न देखा वो कहीं ज़लवा[10], जो देखा ख़ाना-ए-दिल[11] में
बहुत मस्ज़िद में सर मारा, बहुत-सा ढूंढ़ा बुतख़ाना

कुछ ऐसा हो कि जिससे मंज़िले-मक़सूद[12] को पहुंचूं
तरीक़े-पारसाई[13] होवे या हो राहे-रिन्दाना[14]

ये सारी आमदो-शुद[15] है नफ़्स[16] की आमदो-शुद पर
उसी तक आना-जाना है, न फिर आना न फिर जाना

'ज़फ़र', वो ज़ाहिदे-बेदर्द[17] की हू-हक़[18] से बेहतर[19] है
करे गर रिन्द[20] दर्दे-दिल से हाव-ओ-हू-ए-मस्ताना

---

*1. फकीर, 2. स्थान, 3. राजसी मुकुट, 4. काफी, 5. क्षण, 6. आराम, 7. बाग, 8. वादा तोड़ने वाला, 9. प्याला, 10. दृश्य, 11. हृदयरूपी घर, 12. निर्दिष्ट स्थान, 13. साधुओं का ढंग, 14. मस्ती की राह, 16. साँस, 17. निष्ठुर साधु, 18. ईश्वर-प्राप्ति हेतु क्रन्दन, 19. अच्छा, 20. शराबी।*



# अश्क़ जब आया

अश्क़ जब आया आस्तीं[1] तक है
तर हुआ परदा-ए-ज़मीं[2] तक है

और चर्चे तो सब रहेंगे यूं ही
पर ये मेहरो-वफ़ा[3] हमीं तक है

लब को निस्बत[4] तेरे अक़ीक़[5] से क्या
हर्फ़ यां लाल के नगीं[6] तक है

खो दिया हमने इश्क़बाज़ी में
माले-दुनिया-ओ-नक्दे-दीं तक है

जब तलक दम है, साथ हैं हरदम
हमदमी[7] सबकी बस यहीं तक है

आतिशे-रश्क़े-हुस्न[8] से तेरे
दाग़बर दिले-महज़बीं[9] तक है

दम नहीं मुझ में, पर मेरा नाला
पहुंचता चर्ख़े-हफ्तमी[10] तक है

---

*1. बांह, 2. पृथ्वी तक, 3. प्यार और सच्चाई, 4. रिश्ता, उपमा, 5. एक कीमती पत्थर, 6. नग़ीना, 7. मित्रता, 8. सौन्दर्य की चमक, 9. सुन्दरी का दिल 10. सातवां आसमान।*



# सब है तदबीर की

सब है तदबीर की कही जाती
नहीं तक़दीर की कही जाती

है तेरे अब्रू-ए-ख़ामीदा[1] पर
फबती शमशीर[2] की कही जाती

शक्ले-तस्वीर किससे है, कुछ बात
तेरी तस्वीर की कही जाती

तेरी ख़ाक-ए-क़दम के आगे, नहीं
ख़ूबी अक़सीर[3] की कही जाती

दास्तां[4] उसके सामने, ऐ काश
किसी दिलग़ीर[5] की कही जाती

दहन-ए-ज़ख़्म[6] पर ज़ुबां रखता
सिफ़त[7] उस तीर की कही जाती

पाते गर ख़ुश तो कुछ 'ज़फ़र' उनसे
उफ़ू[8] तक़सीर[9] की कही जाती

*1. टेढ़ी भवें, 2. तलवार, 3. दवा, 4. कहानी, कथा, 5. दुःखी, 6. घाव का मुंह, 7. गुण, प्रभाव, 8. क्षमा, 9. कुसूर, ग़लती।*



# करते हम मज़मून

करते हम मज़मून सोज़े-दिल[1] बयां गर और हैं
आग़ हो जाते अभी उसको वो सुनकर और हैं

कोह को पानी न कर ऐ नाला-ए-ख़ारा-गुदाज़[2]
मारने सर से हमें, दो-चार पत्थर और हैं

खुम के खुम ख़ाली किए साक़ी ने लेकिन अब तलक
हम किए जाते तलब सागर पे साग़र और हैं

पैरू-ए-इश्क़ो-जुनूं[3] को क्या ग़रज़[4] है ख़िज़्र[5] से
राह उनकी और है और उनके रहबर[6] और हैं

अहले-बख़्शिश[7] से बराबर हों कहां संज़ीदा[8] ताब
सर-पा[9] मौज़ूं[10] है तो क्या, नख़्ले-समरवर[11] और हैं

ख़ूबी-ए-ज़ौहर[12] से पाए है, हर इक शै[13] इम्तियाज़[14]
लाल भी पत्थर ही है लेकिन वे पत्थर और हैं

हम क़नाअत[15] को तेरी दौलत समझते ऐ 'ज़फ़र'
ढूंढ़ते जो ज़र को हैं, वह तालिबे-ज़र[16] और हैं

---

*1. हृदय की जलन का हाल, 2. पत्थर पिघलाने वाला, 3. प्रेम के अनुयायी, 4. मतलब, 5. एक पैग़म्बर का नाम, 6. पथ-प्रदर्शक, 7. क्षमा, 8. गम्भीर, 9. सर और पैर, 10. आसान, सीधा, 11. फलदार पेड़, 12. गुणों की योग्यता, 13. वस्तु, 14. अन्तर, 15. सब्र, 16. धन के इच्छुक।*



# सहर का नूर मुझको

सहर का नूर[1] मुझको, दोनों रूख़सारे-परी-रू[2] हैं
शबे-दीजूर[3] मेरे हक़ में, उस काफ़िर के गेसू[4] हैं

रहे है आलमे-बाला[5] पे भी ग़म, तेरे ग़मगीं का
सितारे मत समझ, यह दीदा-ए-गर्दू[6] में आँसू हैं

नज़र आता है रंगीं तख़्ता-गुलहाये-मुहब्बत[7] का
जब अपना देखते हम, दामने-क़ातिल पे लोहू हैं

दिखाते ज़ौहरे-तेग़े-सितम हैं हमको, इस ढब[8] से
नहीं ग़ैरों पे होते दम-ब-दम[9], वह चीं-ब-अबरू[10] हैं

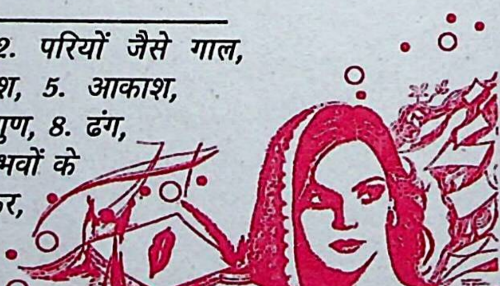
कहीं ज़ानू-ब-ज़ानू[11], एक दिन बैठे थे साथ उसके
हम उस दिन से हमेशा गंजे-ग़म[12] में सर-ब-ज़ानू[13] हैं

लगाओ अपनी आँखों में न काजल पढ़ के तुम अफ्सूं[14]
उन्हें दरकार क्या जादू, कि वह तो आप जादू हैं

'ज़फ़र', वह आ गए हैं इस क़दर क़ाबू में ग़ैरों के
नहीं क़ाबू पे चढ़ते, ढूंढ़ते हम अपना क़ाबू हैं

---

*1. सुबह का प्रकाश, 2. परियों जैसे गाल, 3. अंधेरी रात, 4. बाल, केश, 5. आकाश, 6. आकाश की आँख, 7. प्रेम-गुण, 8. ढंग, तरीका, 9. क्षण-प्रतिक्षण, 10. भवों के बल, 11. पैर से पैर मिलाकर, 12. दुःख की खान, 13. सर झुकाकर, 14. जादू।*



# तेरे जिस दिन से

तेरे जिस दिन से ख़ाके-पा[1] हैं हम
ख़ाक हैं, फिर भी क़ीमिया[2] हैं हम

जिस तरफ चाहे हमको ले जाए
जानते दिल को रहनुमा[3] हैं हम

जो कि मुंह पर है, वो ही दिल में है
मिस्ले-आईना[4] बा-सफ़ा[5] हैं हम

हमदमो! मिस्ले-सूरते-तस्वीर[6]
क्या कहें तुमसे बेसदा[7] हैं हम

तू जो नाआशना[8] हुआ हमसे
ये गुनाह है कि आशना हैं हम

हम हैं जूं ज़ुल्फ़े-आरिज़े-ख़ूबां[9]
जो परीशां हैं, ख़ुशनुमा[10] हैं हम

ऐ 'ज़फ़र', पूछता है मुझको सनम
क्या कहें, बन्दा-ए-ख़ुदा हैं हम



---

*1. पांव की धूल, 2. एक प्रकार की विशेष दवा, 3. पथ-प्रदर्शक, 4. दर्पण की भांति, 5. साफ, बेदाग़, 6. चित्र की भांति, 7. बिना आवाज़, 8. अपरिचित, 9. सुन्दर कपोलों (गालों) के रोयें, 10. प्रसन्न।*

# अशआर

इन्सां है वही जिनमें हो इन्सान की सीरत[1]
हैं यूं तो हज़ारों 'ज़फ़र' इन्सान की सूरत

खुले हज़ार दरे-बाग़, दिलक़ुशा लेकिन
दिले-गिरफ़्त मेरा बंद ही रहा, न खुला

जो सोज़े-इश्क़[2] है दिल में, तो दाग़ जलता है
ये घर उसी का है जिसका चराग़ जलता है

समझता बुतपरस्ती[3] कुफ्र, नादानी इसी में है
कि है यह ऐन ईमां, और मुसलमानी इसी में है

जूं बू-ए-गुल[4] रफ़ीक़े-नसीमे-चमन हैं हम
ऐ दोस्त! वतन में ग़रीबुल-वतन हैं हम

---

*1. प्रवृत्ति, 2. प्रेम की जलन, 3. मूर्ति-पूजा, 4. फूल की सुगन्ध।*



ज़िगर से मेरे अगर एक ख़ारे-ग़म[1] निकला
चुभो दिए वहीं हसरत ने नश्तर[2] दो-तीन

मांग की लेख पर हर रात सवेरा देखा
कूचा-ए-ज़ुल्फ़[3] में दिन को भी अंधेरा देखा

कब रहती है दुनिया में, बहारे-गुलो-गुलशन
दो दिन में उड़ा दे, है 'ज़फ़र' बादे ख़िज़ां-चाक

किस-किस अदा से देखते हैं, मुंह से मिला के मुंह
वह आईने में अपना और अपने 'ज़फ़र' का अक्स[4]

डरता हूं मौज़े-बहरे-मुहब्बत[5] से ऐ 'ज़फ़र'
हाथ आते-आते, दामने-साहिल[6] डुबो न दे

---

*1. दुःख का काँटा, 2. खंजर, 3. बालों की गली,*
*4. प्रतिबिम्ब, 5. मोहब्बत-रूप समुद्र की लहर,*
*6. दामन का किनारा।*



तमाम उम्र गुज़ारी है अपनी, ग़फ़लत[1] में
जहां[2] की सैर 'ज़फ़र', हमने ख़्वाब में की है

बढ़ते-बढ़ते दिल तलक पहुंचा 'ज़फ़र' ज़ख़्मे-ज़िगर
और मैं अब तक तलाशे-नुस्ख़ा-ए-मरहम[3] में हूं

बुरे हैं या भले हैं ऐ 'ज़फ़र' लेकिन ग़नीमत है
कि यां[4] आएंगे फिर-फिरकर, न हम जैसे, न तुम जैसे

मये-इशरत[5] न थी ताले[6] में अपने साक़िया, वरना
फ़लक[7] मीना लिए फिरता तो मह[8] साग़र लिए फिरता

यां आए कहां से हैं, कहां जाएंगे यां से
हैरां है 'ज़फ़र', हम पे यह उक्दा[9] नहीं खुलता

---

*1. भ्रम, 2. दुनिया, 3. मरहम (लेप) के नुस्खे की खोज, 4. यहां, 5. ऐश्वर्यरूपी मदिरा, 6. भाग्य, नसीब, 7. आसमान, 8. चाँद, 9. राज, गुप्त रहस्य।*



रही न कोई निशानी, पर उसका दाग़े-फ़िराक़[1]
हमारे पास रहा यादग़ार, बरसों तक

हज़ारों इश्क़ में ऐ हज़रते-दिल, रंजो-ग़म पहुंचे
पर अफ़सोस अपने मक़सद[2] को, न तुम पहुंचे न हम पहुंचे

ये नक्शा हो गया है मेरा, सौदा-ए-मुहब्बत[3] में
मेरी सूरत, मेरे यारों में पहचानी नहीं जाती

इश्क़ ही है अपना रहबर[4], इश्क़ ही है रहनुमा[5]
ऐ 'ज़फ़र', हाज़त[6] किसी की रहनुमाई[7] की नहीं

बला से ख़ाक हो जाएंगे जलकर सोज़िशे-ग़म से
मगर मुंह से न 'उफ़' हम ग़मगुसारों में निकालेंगे

कितने ही बन[8] के, शहर के और गांव के निशान
यूं मिट गए ज़मीन पे ज्यूं पांव के निशान

न दूंगा दिल मैं, यह हमेशा कहता था
वो आज ले भी गया और 'ज़फ़र' से कुछ न हुआ

न हम कुछ हँस क सीखे हैं, न हम कुछ रो के सीखे हैं
जो कुछ थोड़ा-सा सीखे हैं, किसी के हो के सीखे हैं।

1. वियोग का चिह्न, 2. उद्देश्य, 3. प्यार के कारण,
4. पथ-प्रदर्शक, 5. मार्गदर्शक,
6. आवश्यकता, 7. पथ-प्रदर्शक,
8. जंगल।



# विविधा

क्या कहें, क्योंकि ग़मे-हिज्र[1] में घड़ियां गिन-गिन
दिन से हम रात किया करते हैं, और रात से दिन
मर भी जावें इसी हालत में, अगर हम उस बिन
बज़्म[2] में जाना हमें यार कहां है लेकिन
देख लेत हैं सरे-राह[3] उसे, हम गाहे[4]

सुबह गुलशन में सबा[5] तेरा अगर होवे गुज़र
कहियो तू बुलबुल से इतना तो कि ऐ शोरीदा-सर
कर रही है चहचहे क्या शाख़े-गुल[6] पे बैठकर
यह चमन यूं ही रहेगा और सारे जानवर
अपनी-अपनी बोलियां सब बोलकर उड़ जाएंगे

---

*1. विरह का दुःख, 2. सभा, गोष्ठी, 3. रास्ते में, 4. कभी, 5. हवा, 6. फूलों की डाल।*



# क़त्आत और भावार्थ

## (1)

आज तक मालूम यह मुझको नहीं क्या चीज़ हूं
कौन हूं, क्या शै हूं मैं, नाचीज़ हूं या चीज हूं
हो गया दिल मेरा, दौलत से क़नाअंत की ग़नी
जानता दुनिया को मैं, क्या माल हूं, क्या चीज़ हूं

इस क़त्आत के माध्यम से बहादुर शाह 'ज़फ़र' लोगों को यह सन्देश देना चाहते हैं कि वह आज तक खुद को समझ नहीं पाए कि वह क्या चीज़ हैं। वह खुद उलझन में हैं कि वे क्या हैं, एक बड़ी चीज हैं, या एक तुच्छ वस्तु? जब उनकी बादशाहत छिन गई तो उनके दिल को इस बात की तसल्ली हो गई कि वह स्वयं क्या हैं। वे पेंशनयाफ्ता नाम के बादशाह रह गये थे। जिसके बाद वे जान गये थे कि उनकी हैसियत क्या है, उनकी वास्तविकता क्या है?

## (2)

अगर साथ भी वो हमारे चले
तो हमसे किनारे-किनारे चले
'ज़फ़र' उसकी राहे-मुहब्बत में हम
फ़क़त अपने दिल के सहारे चले

इस क़त्आत के माध्यम से बहादुर शाह 'ज़फ़र' ने कहा है कि वह तो सिर्फ नाम के शाह हैं। जबरदस्ती जब क्रान्तिकारियों ने उन्हें अपना बादशाह मान लिया तो वे सोचने लगे कि अगर वे लोग



हमारे साथ-साथ चले तो हमसे दूर-दूर ही रहेंगे। वे उनसे इतनी मुहब्बत करते थे कि वह उनकी मुहब्बतभरी राहों में केवल अपने-अपने दिल के सहारे से ही आगे बढ़ रहे थे। लोग उनसे दूर-दूर थे, क्योंकि वे बूढ़े हो चुके थे, मगर वे खुद (बादशाह) उनकी मुहब्बत में उनके साथ चल रहे थे।

## (3)

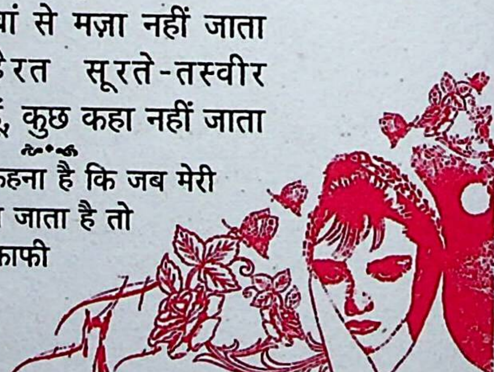
नहीं, ये सोज़े-मुहब्बत ने हमक़ो दाग़ दिया
हमारे ख़ाना-ए-दिल के लिए चराग़ दिया
हमें जो इश्क़ ने, ये सिनए-दाग़-दाग़ दिया
हमारे सैर को घर में ख़ुदा ने बाग़ दिया

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का मानना है कि ये दाग़ जो मुझे मिले हैं वो मेरी मुहब्बत ने मुझे नहीं दिए हैं, बल्कि उसकी वजह से मेरे अंधेरे दिल में एक चराग़ रोशन हो गया है। इस इश्क़ ने मेरे सीने को दाग़-दाग़ कर दिया है लेकिन अल्लाह का बहुत बड़ा क़रम है कि उसने मेरी सैर के लिए मेरे घर को ही उपवन बना दिया है। जब मैं अपने घर में टहलता हूं तो मुझे महसूस होता है कि मैं अपने शाही बाग़ में घूम रहा हूं।

## (4)

आ गया जब ज़ुबां पे नाम तेरा
फिर ज़ुबां से मज़ा नहीं जाता
महवे-हैरत सूरते-तस्वीर
क्या कहूं, कुछ कहा नहीं जाता

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि जब मेरी ज़ुबान पर मेरे ख़ुदा का नाम आ जाता है तो मुझे इतना मज़ा आता है कि काफी देर तक मेरी ज़ुबान से वो मज़ा नहीं जाता। जब उसकी तस्वीर



उभर कर मेरी नज़रों के सामने आ जाती है तो मैं आश्चर्यचकित रह जाता हूं क्या कहूं मेरे पास वो शब्द ही नहीं हैं कि जिससे मैं उस लुत्फ को बयान कर सकूं या कुछ बता सकूं।

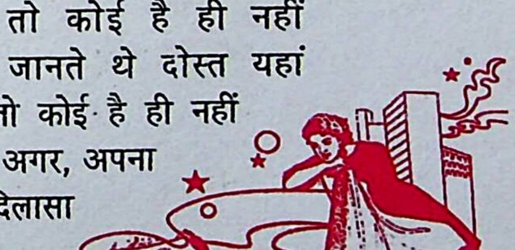
## (5)

कनाराक़श जो तू ऐ पुर-गुरूर हमसे हुआ
जताई हमने मुहब्बत, क़ुसूर हमसे हुआ
हज़ारों दिल में थे मतलब हमारे, पर मुंह से
बयां ने एक भी उनमें हुज़ूर, हमसे हुआ
हम उससे आप रहे दूर, अपनी ग़फ़लत में
वो ऐ 'ज़फ़र', न किसी वक्त दूर हमसे हुआ

बहादुर शाह 'ज़फ़र' अपने खुदा से इल्तिज़ा कर रहे हैं कि ऐ घमण्डी! जब तूने हमसे किनारा कर लिया तो हमने तेरे सामने अपनी मुहब्बत का इज़हार किया, बस यही कुसूर हमसे जरूर हुआ है। हमारे दिल में लाखों मतलब थे लेकिन हमने अपने मुंह से एक भी बयान नहीं किया, सच तो यह है कि तू हमसे दूर नहीं हुआ बल्कि मैं ही अपनी लापरवाही में दूर हो गया था, तू तो हर वक्त मेरे साथ है, तू कभी मुझसे दूर नहीं हो सकता।

## (6)

कहिए अपना किसे, अपना तो कोई है ही नहीं
जो है बेग़ाना, हमारा तो कोई है ही नहीं
वा-ए-क़िस्मत जिसे हम जानते थे दोस्त यहां
जैसा दुश्मन है वो, ऐसा तो कोई है ही नहीं
क्या करूं ग़म को न समझूं अगर, अपना
ग़मख़्वार दिल के देने को दिलासा
तो कोई है ही नहीं

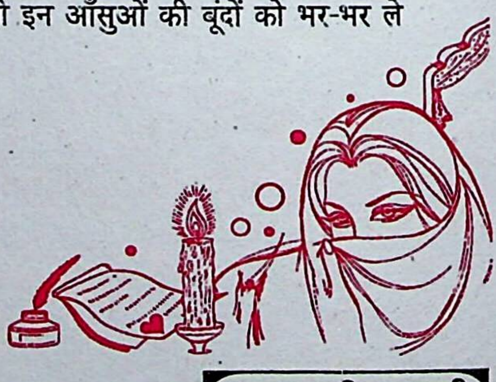


बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि इस दुनिया में हम किसको अपना कहें, यहां कोई भी अपना नहीं लगता जो भी मिलता है वो बेग़ाना ही मिलता है, हमारा अपना हमें कोई नज़र नहीं आता। क़िस्मत भी क्या खेल दिखाती है कि जिन लोगों को आज तक हमने अपना दोस्त समझा था हमने कभी सोचा भी नहीं था कि वही दोस्त हमारे सबसे बड़े दुश्मन साबित होंगे। अब इस दर्द को ही मैंने अपना हमदर्द मान लिया है क्योंकि इसी तरह मैं अपने दिल को तसल्ली दे सकता हूं। और कोई दूसरा उपाय मेरे पास नहीं है।

## (7)

खुल गई यकबारग़ी आँखें-सी महरो-माह की
जबकि अपने मुंह से तूने दूर घूंघट कर दिया
तुम ये लटका ख़ूब सीखे हो जिसे चाहा उसे
तुमने सौदाई दिखाकर ज़ुल्फ़ की लट, कर दिया
अश्क़ के क़तरे लिए जाते हैं भर-भर के सभी
ज़ोशे-ग़िरिया ने मेरी आँखों को पनघट कर दिया

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि एक बार तो चाँद-सूरज की आँखें भी फटी-की-फटी रह गई थीं जब तूने अपने चेहरे से घूंघट हटा दिया था। तुम्हारा ये अन्दाज़ बहुत अच्छा है जिसे भी चाहते हो उसे ही अपनी ज़ुल्फ़ों में उलझाकर पागल दीवाना बना देते हो। मेरे आँसुओं के उबाल ने मेरी आँखों को पनघट बना दिया है जो भी चाहता है वो इन आँसुओं की बूंदों को भर-भर ले जाता है।



## (8)

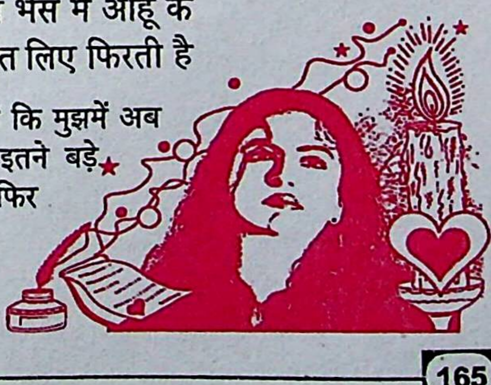
जा बैठा है सहरा में अबस शहर में ज़ाहिद
क्या सूझेगा जंगल में, जो बस्ती में न सूझा
पस्ती में जो देखा, वो बुलन्दी में न देखा
सूझा जो बुलन्दी में, वो पस्ती में न सूझा
नरग़िस की रविश आँख 'ज़फ़र', हमने जो खोली
उस गुल के सिवा, गुलशने-हस्ती में न सूझा

बहादुर शाह 'ज़फ़र' अपनी तंगदस्ती में अपने खुशहाली के दिनों को याद करते हुए कहते हैं कि मैं उस शहर को छोड़कर इस जंगल में यानि क़ैदखाने में आ बैठा हूं, जब मुझे उस बस्ती में ही कुछ सुझाई नहीं दिया तो इस जंगल में क्या सुझाई देगा। मैंने जो मुसीबत में महसूस किया है वो खुशहाली में कभी महसूस नहीं किया। जो खुशहाली में सोचता था वो इस मुसीबत में सुझाई नहीं देता। मैंने इस प्रकृति की तरह जब अपनी आँखें खोलीं तो इस पूरे गुलशन में मुझे एक फूल के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

## (9)

ताक़त नहीं फिरने की, आदत लिए फिरती है
या सिर्फ़ मुझे मेरी, हिम्मत लिए फिरती है
ख़ुर्शीद-सिफ़त मुझको, है शौक़े-जहांगर्दी
ताले लिए फिरते हैं, क़िस्मत लिए फिरती है
क्या जाने 'ज़फ़र' किसको, ये भेस में आहू के
सहरा में उन आँखों की वहशत लिए फिरती है

बहादुर शाह ज़फ़र कहते हैं कि मुझमें अब इतनी शक्ति नहीं रहीं कि मैं इतने बड़े क़ैदख़ाने घूम-फिर सकूं, लेकिन फिर भी घूमता फिरता हूं क्योंकि यह मेरी आदत है। क्या फिर मेरी हिम्मत मुझे



घूमने पर विवश करती है, मुझे सूर्य जैसी प्रवृत्ति या फिर विश्व भ्रमण की आकांक्षा घूमने पर मज़बूर करती है यह बात खुद ज़फ़र भी नहीं जानते कि उस वीराने में उनकी आँखों की वहशत उन्हें क्यों लिए फिरती है?

## (10)

रात-दिन तेरा तसव्वुर है ख़्याल और नहीं
कि सिवा उसकी मुहब्बत के क़माल और नहीं
आप में ढूंढ उसे, और कहां ढूंढ़ेगा
कि बजुज़ तेरे कहीं ज़ा-ए-विसाल और नहीं
दिले-इन्सान के आईने में देख उसको 'ज़फ़र'
नज़ीर उसका नहीं, उसकी मिसाल और नहीं
दिले-इन्सान के आईने में देख उसको 'ज़फ़र'
नज़ीर उसका नहीं, उसकी मिसाल और नहीं

बहादुर शाह 'ज़फ़र' उस क़ैदख़ाने में अपने ख़ुदा को याद करते हुए कहते हैं, कि अब मुझे रात-दिन सिर्फ तेरा ही ख़्याल है और तेरे सिवा किसी का भी ख़्याल नहीं, तेरी मुहब्बत के अलावा और कोई दूसरा क़माल नहीं हो सकता। तू कहीं न कहीं मेरे अन्दर ही छिपा हुआ है इसलिए मैं तुझे स्वयं में ही ढूंढने की कोशिश कर रहा हूं, तेरे मिलने की और दूसरी जगह हो ही नहीं सकती। ज़फ़र कहते हैं कि मैंने दिल के आईने में तुझे देखा है तेरे जैसा कोई दूसरा नहीं हो सकता और न ही तेरी कोई मिसाल मिल सकती है।



## (11)

अदम में भी मुसीबत कुछ न पूछो, हाए ऐसी है
जहां दम मारने की ज़ा नहीं वो जाए ऐसी है
न पूछो दोस्तों की अपनी हालत अपनी फ़ुरक़त में
कि जिसको देख दुश्मन को रहम आ जाए ऐसी है
नज़ाकत क्या सहूं दिल की अज़ब नाज़ुक कली है ये
सुख़न की इक ज़रा गरमी से जो मुरझाए ऐसी है

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि मरकर भी चैन कहां मिलने वाला है वहां की मुसीबतें तो और भी ज्यादा हैं। वह एक ऐसी जगह है जहां सांस लेने की फुर्सत भी नहीं मिलती, मेरे दोस्तों तुमसे बिछड़कर मेरी हालत ऐसी हो गई है कि अगर दुश्मन भी देखे तो उसे भी मेरी हालत पर रहम आ जाएगा। अब मैं नज़ाकत क्या दिखाऊं सुखन की ज़रा-सी गरमी पाकर मेरा शरीर मुरझा जाता है।

## (12)

रौनक़े गुलशन, बहारे-गुल जो कम होती चली
अश्क़े-शबनम से नसीमे-सुबह-दम रोती चली
वह हवस, क्या ख़ाक पहुंचे मंज़िले-मक़सूद को
जो क़दम रखते ही, काँटे राह में बोती चली
हो चुके दिन ज़ब्त ग़िरिया के कि पी जाते थे अश्क़
अब तो चश्मे-तर 'ज़फ़र' कुछ आबरू खोती चली



बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि अब बाग़ की रौनक़ कम होती जा रही है, क्योंकि उसमें अब फूलों पर बहार नहीं रही, इसलिए शबनम जब आँसू बहाती है तो उसके रोने से सुबह की हवा भी रोने लगती है। अब मेरी इच्छा अपनी मंजिल तक क्या खाक

पहुंचेगी वो तो खुद अपनी राहों में काँटे बोती चली आई है। अब हमने अपने आँसुओं को पीना शुरू कर दिया है क्योंकि हमारी प्रतिष्ठा अब खोती जा रही है इसलिए मेरी आँखें आँसुओं से भीगी रहती हैं।

## (13)

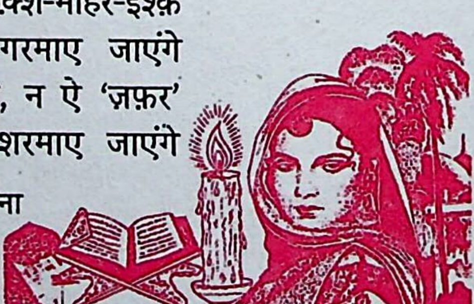
मेरी ज़ानिब से ग़ैरों ने लगाया कुछ-न-कुछ होगा
न आया वह तो उसके जी में आया कुछ-न-कुछ होगा
न ढूंढ़ा और न पाया हमने, कुछ इस बहरे-हस्ती में
वग़रना जिसने ढूंढा, उसने पाया कुछ-न-कुछ होगा
सुना मैंने, कटी उनकी भी सारी रात आँखों में
किसी ने मेरा अफ़साना, सुनाया कुछ-न-कुछ होगा

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का मानना है कि मेरे बारे में गैरों ने कुछ न कुछ अनुमान तो लगाया ही होगा। अगर वह मेरे पास नहीं आए तो क्या हुआ उनके दिल में मेरे लिए कुछ तो हमदर्दी होगी, इस पूरी दुनिया में न हमने कुछ ढूंढा और न ही कुछ पाया हैं वरना जिन लोगों ने कोशिश की है उन्हें कुछ न कुछ जरूर हासिल हुआ होगा, मैं जानता हूं कि उनकी भी पूरी रात आँखों ही आँखों में जागकर कटी है इसका मतलब है उन्हें मेरे बारे में किसी-न-किसी ने जरूर बताया होगा।

## (14)

वह यूं तो हम से बज़्म, में शरमाए जाएंगे
पर दिल निग़ाहे-गर्म से, गरमाए जाएंगे
दिल आशिक़ों के मोम हैं, पर नक्शे-मोहरे-इश्क़
बैठेगा जब कि आग में गरमाए जाएंगे
जब तक सुरूर होगा नशे का, न ऐ 'ज़फ़र'
हम उनसे और हमसे वो शरमाए जाएंगे

बहादुर शाह ज़फ़र' का कहना है कि जब महफ़िल में हमारा उनसे सामना होगा तो वह हमसे



शरमाते रहेंगे लेकिन निग़ाहों की गर्मी पाकर एक-दूसरे की दिल की धड़कनें बढ़ती ही जाएंगी। क्योंकि आशिक़ों के दिल मोम के होते हैं, जिन पर इश्क़ की मोहर अंकित हो जाती है। जब तक दोनों पर इश्क़ का सुरूर नहीं चढ़ेगा, तब तक हम दोनों एक-दूसरे से इसी तरह शरमाते रहेंगे।

## (15)

शब तो आधी कट गई, ख़तरा न लाओ, कौन है
शौक़ से आओ, पलंग पर लेट जाओ, कौन है
पूछते-फिरते हैं वह, यह हमनशीनों में मेरे
मेरे आशिक़ को ज़रा मुझको दिखाओ, कौन है
मुत्तहम करके 'ज़फ़र' को, पूछे है लोगों से वह
किसने मेरे दर पे दी दस्तक, बताओ, कौन है

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि अब तो आधी रात गुज़र चुकी है अब मुझे किसी से कोई खतरा नहीं है। जो भी मेरा दोस्त या दुश्मन मेरे पास आना चाहता है वह शौक़ से आए और मेरे बिस्तर पर लेट जाए। वह मेरे हमनशीनों से मेरा पता पूछता फिरता है, मेरी एक झलक पीने को बेक़रार है। 'ज़फ़र' कहते हैं कि वह कौन हो सकता है जिसने इस मुसीबत के समय मेरे दर पे दस्तक दी है।

## (16)

सोए जिस रात को हम, हिज्र में रोते-रोते
ख़्वाब में वस्ल हुआ, सुबह के होते-होते
शम्अ की तरह से हम रात को रोते-रोते
बह गए आँसुओं में, सुबह के होते-होते
जिसके मिलने की तमन्ना थी, न
पाया उसको हो गई उम्र बसर,
ज़ान को खोते-खोते



बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि वियोग की जिस रात को हम रोते-रोते सो गए थे तो सुबह होने से पहले मेरा ख्वाब में मेरे महबूब से मिलन हुआ लेकिन अफसोस पूरी रात रोते-रोते मैं शम्आ की तरह पिघल चुका था इस कारण जिसको पाने की तमन्ना मेरे दिल में थी मैं उसको नहीं पा सका और इसी प्रकार मेरी उम्र पूरी हो गई—और मैंने अपने प्राण त्याग दिए।

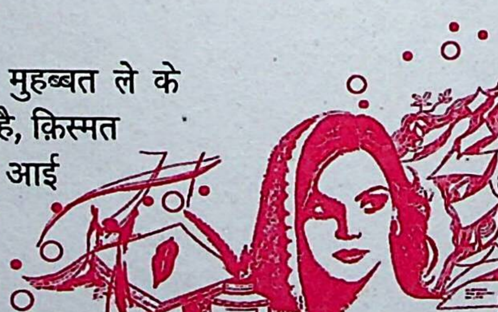
## (17)

क्या बुढ़ापे में करें, बादापरस्ती की हवस
गए मस्ती के वो दिन, हो चुकी मस्ती की हवस
ख़ाक को चैन उन्हें जिनको बगूले की तरह
गहे बुलन्दी की हो ख़्वाहिश, गहे मस्ती की हवस
हम वो आवारा-ओ-सरग़श्ता 'ज़फ़र' हैं कि हमें
न तो वीराने की परवाह है, न बस्ती की हवस

बहादुर शाह 'ज़फ़र' कहते हैं कि मैं इस बुढ़ापे में क्या शराब की इच्छा करूं अब वो मस्ती के दिन गए और मस्ती करने की इच्छा भी चली गई, अब वो चैन भी खाक़ हो गया है जिसको कभी बगुले की तरह बुलन्दी पर पहुंचने की ख़्वाहिश थी, अब तो हम उस आवारा इंसान की तरह हैं जिसे न वीराने की परवाह है और न ही रौनक़भरी बस्ती की ख्वाहिश।

## (18)

तेरे दर पे जो आशिक़ को मुहब्बत ले के
आई है उसे तक़दीर ने भेजा है, क़िस्मत
ले के आई है लबों पर जान आई
है जो मेरी हिज्र में तेरे
तो अपने साथ क्या-क्या
रंज़ो-हसरत ले के



आई है मुअत्तर कर दिया सारे चमन
को एक झोंके में खुदा जाने सबा, किस
गुल की निक़हत ले के आई है

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि तेरे दर पे मुहब्बत तेरे आशिक़ को खींच कर ले आई है, उसे तक़दीर ने तेरे पास भेजा है मेरे वियोग में जो परेशान था मुझे देखकर उसके होठों पर नई मुस्कान खिल उठी है और अपने साथ न जाने क्या-क्या हसरते लेकर आई है। उसकी एक मुस्कान ने पूरे चमन को हरा-भरा व सुगन्धित कर दिया है यह तो खुदा ही जानता है कि यह हवा किस फूल की खुशबू अपने साथ लेकर आई है, जिससे पूरा बाग़ महक उठा।

## (19)

थे क़ल जो अपने घर में, मेहमान वो कहां हैं
जो खो गए हैं यारब, औसान वो कहां हैं
आँखों में रोते-राते, नम भी नहीं है अब तो
थे मोजज़न जो पहले, तूफ़ान वो कहां हैं
कुछ और ढब के अब तो हम लोग देखते हैं
पहले जो ऐ 'ज़फ़र' थे, इन्सान वो कहां हैं

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि कल जो मेहमान मेरे घर में भरे रहते थे आज वो सभी कहां गायब हो गए हैं, ऐ खुदा! जो मेरे होशो-हवास खो चुके हैं अब वो कहां हैं? अब तो रोते-रोते मेरी आँखों के आँसू भी सूख चुके हैं, जो पहले मोजज़न थे वो तूफ़ान भी अब नहीं रहे। अब तो सब कुछ बदल गया है सभी लोग बदल चुके हैं, जो लोग पहले थे वो अब इस दुनिया में देखने को नहीं मिलते।



## (20)

वो झूठ से जो ज़मीं-आसमां
मिला देंगे तो पास जितने
हैं, सब हां-में-हां मिला देंगे

न पाएगा कोई हमको,
बरंगे-नक्शे-क़दम हम ऐसा ख़ाक में अपना
निशां मिला देंगे बुतों से मिलते हो झुक-झुक
के क्यों 'ज़फ़र' इतना ये क्या ख़ुदा से तुम्हें,
मेहरबां मिला देंगे

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि कुछ लोग झूठ बोलने में इतने माहिर होते हैं कि वो ज़मीन-आसमान एक कर देते हैं और उनके पास बैठे लोग उनकी हां में हां मिलाते हैं ऐसे स्थान पर कोई हमारे कदमों के निशान भी नहीं पाएगा हम अपनी पहचान को पूरी तरह खाक़ में मिला देंगे ज़फ़र उन लोगों से कहते हैं कि तुम इन बुतों के समान झुककर क्यों सिज़दा कर रहे हो, ये बुत तुम्हें तुम्हारे ख़ुदा से नहीं मिला सकते क्योंकि यह तो खुद पत्थर के हैं।

## (21)

सोते हो मेरे साथ तो हटकर न सोइए
वो साथ सोना क्या, जो लिपटकर न सोइए
है क़हर तेरा कहना ये, बिस्तर पे हो के गर्म
गरमी में मुझसे आप चिपटकर न सोइए
झगड़ों में आशिक़ी के हो, सोना कहां 'ज़फ़र'
जब तक कि ख़ूब उनसे, निपटकर न सोइए

बहादुर शाह 'ज़फ़र' अपने मेहबूब से कहते हैं कि अगर तुम्हें मेरे साथ सोना है तो मुझसे हटकर मत सोना बल्कि मुझसे लिपटकर सोना। मुझे तुम्हारी यह बात सुनकर बहुत गुस्सा आता है जब तुम मुझसे कहती हो कि गरमी में मुझसे चिपटकर मत सोइये। 'ज़फ़र' का कहना है कि इस आशिक़ी के झगड़े में नींद किसे आती है जब तक कि अपने मेहबूब को दिल भरकर प्रेम न कर लो।



## (22)

बुतों के हक़ में मुहब्बत से हमने क्या न कहा
मगर खुदी ने बड़ी ख़ैर की, खुदा न कहा
जफ़ाएं हमने सहीं इस क़दर कि मर ही गए
मगर कभी न कहा, तूने मरहबा न कहा
हम उसकी बात के क़ायल हैं ऐ 'ज़फ़र', जिसने
भला कहा जिसे मुंह से, उसे बुरा न कहा

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि बुतों की मुहब्बत में आकर हमने उनके पक्ष में क्या कुछ नहीं कहा लेकिन हमारे ज़मीर ने बुतों को कभी खुदा कहने नहीं दिया क्योंकि यह बात हमारे ज़मीर को मंजूर नहीं थी। हमने इस कारण उनकी इतनी ज़फ़ाएं सही है कि हमारी जान पर भी बन आई लेकिन उसने हमारी कभी प्रशंसा नहीं की। ज़फ़र का कहना है कि हम उसकी इस बात से सहमत हैं कि उसने जिसको अच्छा कह दिया उसे फिर कभी बुरा नहीं कहा।

## (23)

बग़ैर उल्फ़त के अपना दिल, न हम देंगे न वो देंगे
कि देना दिल का है मुश्किल, न हम देंगे न वो देंगे
करेंगे सैंकड़ों बातें, पर अपनी बात हाथों से
बज़ाहिर ग़रचे हैं ज़ाहिल, न हम देंगे न वो देंगे
बुलाएंगे उन्हें हम या हमें वह, एक मतलब है
'ज़फ़र', तकलीफ़ ला-तायल, न हम देंगे न वो देंगे

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि बिना मुहब्बत के न हम उसे अपना दिल दे सकते हैं और न वो ही हमें अपना दिल दे सकते हैं क्योंकि दिल का देना बड़ा ही मुश्किल काम है हम उनसे सैकड़ों बातें कर सकते लेकिन उस बेवकूफ़ पर अपनी मुहब्बत का इज़हार कभी नहीं कर सकते। वो हमें अपने पास बुलाए या हम उन्हें बुलाएं एक ही बात है लेकिन किसी तरह की कोई परेशानी न वो हमें दे सकते हैं और न हम उन्हें दे सकते हैं।



## (24)

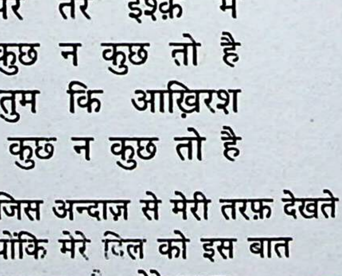
चाँदनी ख़ूब है और सर्द हवा अच्छी है
मयक़शी को ये शबे-माहे-लिक़ा अच्छी है
कितने नाले किए बुलबुल नें, कहा यह गुल से
मेरे कानों को लगी, तेरी सदा अच्छी है
क्यों न ज़ुल्फ उस गुले-रूख़सार्र पे ज़ेबा हो 'ज़फ़र'
होती मालूम गुलिस्तां में घटा अच्छी है

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि आज चाँदनी भी खूब खिली हुई है और ठण्डी हवा भी मन को अच्छी लगती है मय पीने के लिए यह चाँदनी रात बहुत अच्छी रहेगी। बुलबुल ने कितने आँसू बहाते हुए गुल से यह कहा था कि तेरी आवाज़ बहुत अच्छी है जो मेरे कानों को बहुत अच्छी लगती है 'ज़फ़र' का कहना है कि उसके गोरे गाल पर वह काली ज़ुल्फ़ ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे पूरे गुलिस्तां में काली घटा छा गई हो।

## (25)

वो देख लेते हैं जो इधर कुछ न कुछ तो है
हो जाती दिल को दिल की ख़बर कुछ न कुछ तो है
वहशत है या जुनूं, मुझे, पर तेरे इश्क़ में
फिरता हूं यूं जो ख़ाक-बसर, कुछ न कुछ तो है
इतने क़शीदा मुझसे न हो तुम कि आख़िरश
दिल की मेरी, क़शिश में असर, कुछ न कुछ तो है

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि वो जिस अन्दाज़ से मेरी तरफ़ देखते हैं, उसमें जरूर कोई न कोई राज़ छिपा है। क्योंकि मेरे दिल को इस बात का अहसास हो चुका है कि कोई न कोई बात अवश्य है। तेरे इश्क़ की ये कैसी वहशत है कैसा ज़ुनून है जो मैं सड़कों की ख़ाक छानता फिरता हूं। इसमें ज़रूर कोई न कोई रहस्य छिपा हुआ है अन्त में तुम मुझसे इतना नाराज़ न हों, मेरे दिल की क़शिश तुम्हें मेरे पास तक खींच लाएगी।



## (26)

हैं बंधे दिन-रात ग़ैरों से, तेरे सोहबत के वक्त
है कहां फुर्सत जो हम तुझसे मिलें, फ़ुर्सत के वक्त
तेरा रोना चश्मे-दरिया-बार यह किस काम का
जब न आया काम कुछ भी सोज़े-ग़मे-फुर्क़त के वक्त
वो जो कानों से सुना था क़िस्सा-ए-तूफ़ाने-नूह
ऐ 'ज़फ़र', आँखों से देखा, ग़िरिये-बेशिद्दत के वक्त

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि जिस समय मुझे अपने मेहबूब के साथ होना चाहिए था उस समय मैं गैरों के साथ अपने दिन-रात गुज़ार रहा था। हमें इतनी फुर्सत ही कहां थी जो हम तुझसे फुर्सत के समय मिलते। अब मेरा यह रोना किसी काम का नहीं है मेरी इस फ़ुर्कत में मेरे आँसू किस काम आएंगे जो लगातार मेरी आँखों से बह रहे हैं, मैंने जो एक बार अपनी आँखों से तूफ़ाने-नूह का किस्सा सुना था अब आँसू बहाते समय अपनी आँखों से भी देख लिया है।

## (27)

हमदमो, जिस दिन मुहब्बत में नज़र रक्खेंगे हम
देख लेना, उसको भी अपना-सा कर रक्खेंगे हम
जानो-दिल, ताबो-तवां, लो तुम ही रक्खो अपने पास
यां हुजूमे-ग़म में किस-किस की ख़बर रक्खेंगे हम
गुज़रे हम इस ढब से, क़ातिल क्या करेंगे रख के सर
एक सर के साथ क्यों, सौ दर्दे-सर रक्खेंगे हम

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि ऐ मेरे दोस्तों जिस दिन हमने तुम पर मुहब्बत की एक नज़र डाल दी, उसी दिन हम सबको अपना बना लेंगे, मेरा जानो-दिल नाराज़गी, तुम सब कुछ अपने पास ही रखो इस दुःखों की भीड़ में मैं किस-किस बात की ख़बर रखूंगा, इस भीड़ में मैं इस ढंग से गुज़रता हूं कि मेरे दुश्मन अपना सर उठाकर क्या करेंगे, क्योंकि वह एक सर के साथ सौ दर्दे-सर और मोल लेंगे।



## (28)

जो होते हम न ज़हाने-ख़राब में दाख़िल
तो होते काहे को रंज़ो-अज़ाब में दाख़िल
जो तेरी चश्म हो बेदार, दिल भी हो बेदार
नहीं तो जागना, तेरा है ख़्वाब में दाख़िल
अगर ज़वान हो दिल, पीरे-इश्क़ की दौलत
तो ऐ 'ज़फ़र', है वो तेरे शबाब में दाख़िल

बहादुर शाह 'ज़फ़र' का कहना है कि जो मैं इस बुरे संसार में दाखिल न होता तो ये सारे रंज़ो-ग़म मेरे पीछे न लगे होते अगर तेरी आँखें और दिल दोनों ही सावधान हों तो फिर तू जागना मत और मेरे ख़्वाब में दाखिल हो जाना। अगर किसी बूढ़े इंसान का दिल ज़वान हो तो वह उसके लिए सबसे बड़ी दौलत होती है।

## (29)

शहीद इतनी हुई थीं हसरतें, सीने में आशिक़ के
कि वह सीना न था, गोया कि इक गंज़े-शहीदां था
डुबोया चश्मे-ग़िरिया ने हमारे इश्क़ में हमको
ख़ुदा जाने कि ज़ोशे-ग़िरिया था या कोई तूफ़ां था
ज़रा छोड़ जो हमने ज़िक्र, उस ज़ुल्फ़े-परीशां का
चमन में हाल सम्बुल का 'ज़फ़र', क्या-क्या परीशां था

उपरोक्त अक्षरों में बहादुर शाह 'ज़फ़र' इश्क़ मज़ाज़ी (इस दुनिया के इश्क़) पर अपने दिल का हाल बयान करते हुए कहते हैं कि माशूक के इश्क़ में इतने ग़म नए हैं कि एक-एक करके हसरतें मरती चली गयी हैं। मेरा सीना मानो शहीदों (युद्ध में सत्य के लिए लड़ने वाले मृत लोग) का कब्रिस्तान बन गया है। मैं उसके इश्क़ में ऐसी आहें भरता हूं जैसे तूफान चढ़ता चला आ रहा है। कोई भी मेरे माशूक का जिक्र छेड़ देता है तो मैं परेशान हो जाता हूं। मेरी हालत तो ऐसी है जैसे चमन में बुलबुल रहकर भी चमन में फूलों की खिली हुई बहार से बेख़बर रहती है।



—समाप्त—

'ज़फ़र' का पूरा नाम बहादुर शाह 'ज़फ़र' है। वे आखिरी मुग़ल के रूप में भी जाने जाते हैं। वैसे तो 1707 ई० में, औरंगजेब के निधन के बाद ही मुग़ल सल्तनत का सूरज ढ़लने लगा था। पर अगले 150 वर्षों तक कुछ वारिसों ने बादशाहत की गाड़ी खींची। करीब ८० साल की उम्र मे, बहादुर शाह ज़फ़र को जब दिल्ली सल्तनत विरासत में मिली तो उस समय वे शायरी की दुनिया के 'बादशाह' बन चुके थे। 1857 के गदर में उन्होंने हिन्दोस्तान के बादशाह के रूप में क्रांति की पताका अपने हाथों में ली। पर 1857 की क्रांति असफल हुई। अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार करके काले पानी की सजा दे दी। जहां दो साल बाद उनका निधन हो गया। ज़फ़र हमारे बीच न रहे पर उनकी शायरी हर दिल पर छाई हुई है।




तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स